१ उतरपंथरैमारगरी विगतलिखीछै
२. लोहौरसुमुलतानकोस५५०छै
३ मुलतानसुकंधारकोस२००छै
४ कंधारसुईसपाकोस८००नेवांगोपातसाहछै
५ ईसपाथीसांसगानगरकोस३००छै
सांसगाथीसुरासांणकोस६००छै
६ सुरासांणथीईसकंबोलनगरकोस११२००
७ छैअगरकोसतूरेकेरसैछैकोस४[illegible]बाजारछै
८. उमीपातसाहछैमाणीआयसुजरोदछैमोरासी
९ लामधोडेनीगुजराईछैलोहरोकोटछै
१० ईसकंबोलथीबबरकोरकोस१५००छै
११ बबरकोरथीआगेनरांबोलकोस[illegible]
१२ छैनेराजासूरवीदहीछैसुसमुद्रानटछैसु
१३ एकफकीरदेवआयोतिकेपातसाहश्रीकालनाह
१४ जीआगेमाजमद्रवीभरवकोसप५६५०धरतीछै
तेरीविगतछैकोकानी
१० हजारहिंदुसथान ४ हजारपरानवराग
५ सुनदकनेन
६ उमसांर्म
२५ हजारपत्रीलकोसमूजबुदीपछै
[illegible]नरी
-१ मुलकबीगालो

।। सवईया ।। जीरण त्यां निज जीरकरै तन थीर जसुप
रल पीजे ।। क्रूर कपट निपट नहीं कछु आपणु को गुर
ले आप कछु दीजे ।। पंडित दे विधि कानी थे जे गुन जांनी
थे तो मन रंगर मीजे ।। ग्यांन उजारन जैन जरै चित याहि क
रै ताकी चाकरी कीजे ।।१।। उत्तम री निवती निवडी जै
ना हसु प्रीति निवाहिसु लीजे ।। औगुन उजार करै बनीया
छि चितम महार सधीजे ।। आयस न मुख आदर देइ क
नाक नवै ताके पाय परीजे ।। ग्यांन गरज सरौ न धरौ
चित चाहि धरै जाकी चाकरी कीजे ।।२।। अंग अंग मिल
यले उवत लायके लुंअं तन न लीजे ।। जीव निशांन सु
जांन सुनेह उवाठे हदीयो उनको तन लीजे ।। हांन सुमा
नन मांन धरौ चित चाहि धरै ताकी चाकरी कीजे ।।३।।
सो ले सिंगार सजे पिव सो लछ ईसे छयल छो छेहन दीजे ।।
नारी त्रिज मन दारी भरी उमया लकरो हमसुक्ष निको
जे ।। रंग रंगीली हीके लि सिली अबढी लकीयो किननी
लग धीजे ।। हां न के दायप रैसु करै चित चाहि धरै जाकी
चाकरी कीजे ।।४।। आवन आवन जावन जाह कहे नही
जाहका सुकया सुखदे खी ।। बोलत बेन किधू बिसपो लन
कारत नैन कटारि न जेसी ।। उ निहि उ तिकहे छिन मेंसु
नि छूति रहे नल हेसु थिरे से सी ।। हां न रही जे वेपर वाह स
तौ चाहिन रही ताकी चाकरी केसी ।।५।।

।।कवित्त:।।जैसे निसिवासर कंवल रहै पंकही मैं पंकज
कहावै न उवाकै ढिग पंक है:।जैसे मंत्रवादी विषधरसुं
गहावै गात: मंत्र की सकति: वाकै विना विषडंक है:
जैसे जिह्वा गहे चिकनाई रहै रूखे अंग: पानी मैं कन
क जैसे काई सुं अटंक है:।जैसे ज्ञानवंत नाना भांति
करतूति ठानै किरीयाकुं भिन्न मानै याते निकलंक है:।
।।१।।मिलन ऐसे अवतार वरसचा ली सज मिग:।कड
वा होय पंचास को धरत हे आगे पथ ग:।अगरां सकति
न काय: जमी न हो आप तकासी नाह निवे मैं होय ह
मे गहां बोहत लगाई: सो सऊ मिलियो के हे: तबो स
ऊ नि मोपरो: नर गार नगती मियाकुहै: मरे मुख
रे ओकरो:।।२।। ।।वेद कर्म उदै करके बंध मै जीव पर
सबही बिललावे:।पंडित का नी पंचम होर सबा रेरहे
कोई ना जित जावे:।आपस माज्ञ अनुकरहे समगान मे
ने दिसन पन पावे:।एको अभिर भ्रमको पंडित आद
हीवे एको नै दिखावै:।औरदै हीयां निचो ग सील भजी
व मल ढके नै आप नेस देखल जावे:।कोन कटायां जनके
व नयां मुंड उजवाने हप नै नगावे:।पांच पची सम वास
पियाची को दूर ल होय मुक्ति कहु पावे:।एको ही अतिं
रपेन को पडित आर्ट होवे एको ने दिखावे:।।३।।क्रम
के उपर अलौंच वै कि रिकल हीजाजे पयादी के धावे:।
वह ही चाकर वलौं वाहू ब्रलहि उलटै सीपल बदे:क
तकै [illegible] कविता [illegible] दे:र
कोई [illegible] पंडित आद

॥ सवईया ॥ जीरण त्यां निज नीर करै तन थीर जगुपर
रल पीजे ॥ कूर कपट निपट नहीं कछु आपगु को गुरु
ले आप कू दीजे ॥ पंडित देषि पिछांनी थेजे गुन जांनी
ये तौ मन रंग रमीजे ॥ ग्यांन उजार रहै नजरै चित चाहिये
रै ताकी चाकरी कीजे ॥१॥ उत्तम सरी निवती निवडी जम
रै... ना हसु प्रीति निवाहि सु लीजे ॥ श्रंगर जार करै वनीया
ना हसु प्रीति निवाहि सु लीजे ॥ आय सनमुष आदर देहु क
बि चित्रम महार मघीजे ॥ ग्यांन गरज सरौ नर पै
ना कन वेताके पाय परीजे ॥ ताकी चाकरी कीजे ॥२॥ श्रंग श्रंग मिल
चित चाहि धरै जाकी चाकरी कीजे ॥ जीव निधांन सु
यलेउ वत लायके लुंश्रंतन लीजे ॥ ग्यांन गुमां
जांन सुने हतु वाढे हदैयो उन कोतन लीजे ॥ ताकी चाकरी कीजे ॥३॥
नन मांन धरौ चित चाहि धरै ताकी चाकरी कीजे ॥
सोल सिंगार सजे पिव सो लछ्छं ईसै बयल छ्छो छेहन दीजे ॥
नारी निज मन दारी करा त्रुमण लकरो हेमसु फुनिको
जै ॥ रंगरंगी लीही के लि मिलीजन वढीलकीया किनती
लगधी जे ॥ ताके दायपरे सुकरे चित चाहि धरै जाकी
चाकरी कीजे ॥४॥ आवत आवन जावन जाद कहै नही
जाह क्या सुवयासुं बदे सी ॥ बोलत बैन किछु विषया लन
कारन नेन कटारिन जैसी ॥ उविही उठिक है छिन भेषु
नि छूरि रहै नल है सु छिनै सी ॥ ताहि रही जे वेपरवाह
तौ वाहि न ही ताकी चाकरी कैसी ॥५॥

।।कवित्त:।। जैसे निसिवासर कंवल रहै कीच मैं पंकज
कहावे न उवाकै छिग पंक है: । जैसे मंत्र वादी विषधर सौं
गहावै गात: मंत्र ही कीरा क्तेः वाकै विना विष उंक है:
जैसे जिह्वा कांण है चिकनाई रहै है पसै अंग: पांनी मैं कन
क जैसे कीच लागत न टंक है: । जैसे ज्ञानवंत नाना भांति
रहु तिनकै क्रीयाकुं भिन्न मांनि यातै निकलंक है:।।
।।१।। मिलत लोक व्यवहार वरसंचाली सज मिग: । कह
वा होय पंचास को धरत है आग पथग: । सुनरां सुक्ति
नकाय: तसी तहां आसत कांही नाह निवे मै होयह
से तहां बोहत लुगाई: सो सब मिलियो कहै: सुवोस
सुतन को परसो: नरनार नजती तियाक है: मेरे सुध
रे जे करो: ।।२।। ।।वेद पुरांण कुरांणके बंधमै जीव परे
सबही विललावै: । पंडित काजी पंच सहर सब वारे रहे
कोई न जान पावै: । आपस मांझ अटकुर हे सब ज्ञान म
नैं समझ न पावै: । एको अछिर प्रेमको पंडित आइ
हीवै एको ने वचावै: ।।३।। सोऊं हीमां सि चोर सील वजी प
व ग लक मैं आप अलख लखावै: । कौन कहां जहांकै
व णयां सुडउ जयाने हु पनंआवै: । पांच पची सफ
पिव्यासीको दूरंग हीय मुक्ते हु पावै: । एको ही अछि
र प्रेम को पंडित आई हीवे एकौ ने बचावै: ।।४।। ब्रह्म
के उपर ब्रह्म चढै फिर ब्रह्म ही आगे पयादो है धावै:
ब्रह्म ही चाकर ब्रह्म गङ्कर ब्रह्म ही ब्रह्म की सीप नवावै: ब्र
ह्मके आगे ब्रह्म रहे कोविज्ञान खलकै ने कुपावै: ए
को ही अछिर प्रेम को पंडित आइ हीवै एकौ ने बतावै ।।५।।
ही

।।वेला लगन विचार वलेष्ट ऊं न वाछां ते: ।जो गणिका के च
उक्ष्ट दिन वार जां ते: ।ज ण कूजा ण आपही झूल दिखे
के हेगो चर अहः ।कर इजन पत्री जोग उपजै नाखे कह: ।सो ह
सा केऊ नो कुगे नहीं लिखो केणी नं मिले: ।वा की वां ग उ
लो ति पपत्र जद कले जो तिक्क काकु मिले: [illegible] पठो ग
न्यो करि न त्तालीन होतो है सकल तई पाग जठी रकहे
वानी वा पादये पो: ।ना सो ले मन्त्र जामेल पर मपुनी तिपा
मी वदा वो प्रराणी वर ते दूरन लये थो: ।कहे के विजेग
तवन्त ने धी यो काली नाग: [illegible] कालीन
गकर हाथों तिलक मुजदये पो: ।माथे हरि लोकने का
स्या हरि पायकुल हे थी कहेहा धन स्पी की मालालये
थो: ।।७।। जो मैं नारी की ओर निहार ततो मन होत है नाही को
रूपा: ।जो मन का रूसं को धकरे ज व क्रोध मई उय जा न
रूपा: ।जो मन मायाही मावा रहे निजतो मन ढुव तमा
वि रूपा: ।जो मन वहल विचार ततो मन होत है वलस्व
याके रूपा: ।जो मन वज रहे पक्ष निल रूप तिस कायाजगे: ।अ
रूपा ।।८।। न गन रहे पक्ष निल रूप तिस काया नगे: ।अ
हिजुपवन आहार विषपर नसम विलगे: ।अ हिनि
तिउ ऊंडे नीर मछ का ऊपर है मीड क: ।धरे मो न वग ध्या
नमन दामु खरा म रटे सुक: ।पावके अंगजाले पतंग सह
मुंडि नगा उ रसही: ।करतु तिरा ज विनजाव की यनिर
पैता सफल सि धिनही: ।।८।।

॥श्रीगणेशायनमः॥ ॥कबीरजीजीरासब्दलिष्यंते॥
अबतौजांननदेहूंरांमपियारे॥ज्योंभावैत्योंहेउहे
मारे॥टेक॥बहुतदिननतैंबिछुरेहरिपाये: भागब
डेघरबैठंआये॥१॥चरननिलागिकरूंबडवाई:
प्रेमप्रीतिराखुंउरझाई: इतमनमंदिररहौनितचोषे:
कहैकबीरपरौजिनधोषै॥२॥ मनकेमोहनवीठला
इहमनलागौतोहिरे: बहुतकदिनविछुरेजयेतेरौओ
लुआवैमोहिरे:॥टेक॥१॥षटदलकवलनिवासीया:
चहूंकूंफेरिमिलाय: इहकैबिचिसमाधीया: तहांको
लनपरपैआयरे:॥२॥अष्टकवलदलभीतरा: तहांश्री
रंगकेलिकरायरे: सतगुरुमिलेतौपाइये: नहींतौजन्म
अविरथजायरे:॥३॥कदलीआरामदलभीतरो: जहां
दशअंगुलकाबीच: तहांदुवादससोजिले: जन्महोय
नहींमीचरे॥४॥बंकनालिकेअंतरे: पछिमदिसाकी
बाट: निझरझरेरसपीजीये: भवरगुफाकेघाटरे:॥
॥५॥त्रिबेनीमनह्नवाइये: सुरतिमिलेजौहाथ:॥
तहांनफिरिमगजोइये: सनकादिकमिलिहैंसाथ
रे॥६॥गगनगरजिमघजोइयौं: तहांदीसैतारअनंत:
बिजुरीचमकिघनबरषिहैं: तहांभीजतहैंसबसंतरे
॥७॥षोडसकवलजबचेतीया: तबमिलिगयेश्रीब
नवारि: जरामरणभ्रमभाजीया: पुनरपिजन्मनिव
ारिरे॥८॥गुरुगमतैपाईयें: झषिमरैमतिकोय
य: तहांकबीररमिरह्या: सहजिसमाधीलाय॥

चरणकवलचित्तलाइय रामनाम गुणगाय
कहकबीरसंसानही भक्तिमुकतिफलपायरे
ल
॥गो॥नायककबीरला मेरोमननलागोतोहिरे॥बकताक
दिनबिछरेनयेतेरीऔसेरआवेमोहिरे॥टेक॥१॥कर्मको
टिकोग्रहरच्यो॥नेहगयेकीआस॥आपहीआपबंधाइ
याहेबलोचनमेरेपियासे॥२॥आपापरसे मेचीनियेदी
सैसबसमान॥इहिपदनरहरिभेटीये॥तैठाउकापटआनि
सोनो॥३॥नाकतिकंचलिजाइबे॥नासिरलजेनार॥रस
नारसहिबिचारियेसारंगश्रीरंगधाररे॥४॥साधैत
सिछिओपाइये॥किवाहोयनहोय॥जेऽज्ञाननउप
जै॥तेऔहटिरहेजिनकोवहो॥५॥एकजुगतिएकेमिलै॥कि
बाजोगकनोग॥इहिफलपाइये॥रामनामसिधजोगरे॥
॥६॥प्रेमभगतिऐसीकीजीये॥मुखअमृतबरसेचंद॥
आपहीआपबिचारीयेतबकेताहोयआनंदरे॥७॥तुम
जिनजानोगीतहे॥इजनिजब्रह्मबिचार॥केवल
कहिसमझाइया॥आतमसाधनसाररे॥८॥२॥ ॥
अबमोहिलेचलिनेकबीर॥अपनेदेसा॥इनपंच
निमिलिलूटीहेऊसंगआहिबिदेसा॥टेक॥१॥गंगतीर
मेरीषेतीबारी॥जमुनातीरखरिहाना॥सातोबिरहीमेरेउपु
जै॥पांचूंमोरकिसाना॥२॥कहेकबीरअकथकथाहै
कहतांकहीनजाई॥सहजिदउपजै॥तेरमिरहेसमाई
॥३॥४॥अब हमसहजिनिरंजनचीना॥गुरुगमिग्यो
नबिचारिपरमपदमगनभयारसभीना॥टेक॥१॥बिक
सतकवलअनंतधुनिगरजत॥तहांमनभयाअनंद॥
आतिसरूपसकलमेदेख्या॥ज्योंपानीमेचंद॥२॥पर
मजकाशपरमपदसुंदर॥तहांकबीरकास्वामी॥बिन
करबेनिमधरधुनिबाजत॥सुनीअनूपमबानी॥३॥५॥

॥

॥अवहम सकैं उरालकैं मांनां: सांतिनइ जब गोबिंद
जांनां:।टेक॥१॥तन में होती कोटि उपाधि: उलटि
नई सुष सहजि समाधि।बैरी उलटि भये है मीता:
साकत उलटि भये है मीता:॥२॥जम नें उलटि भये
है रांम: दुष बिसर्या सुष कीया बिश्राम:।आपा जा
नि उलटि लै आप: तौ नहीं व्यापै तीनूं ताप:॥३॥अब
मन उलटि सनातन हूवा: तब हम जांनां जीवत मूवा:।कहै कबीर सुष सहज समाऊं: आपन डरूं न औ
र डरांऊं:॥४॥ ॥५॥ हीडौंनां तहां झूलै आतम रांम
प्रेम भगति हीडोलनां सब संतन कौ बिश्राम:॥टेक॥१॥
चंद सूर दोय षंभवा: बंक नालि की डोर:। झूलै पंच
पीयारीयां: तहां झूलै मन मोर:॥२॥द्वादस गम कै अं
तरे: तहां अंम्रत कौ बास:। जिन ई अंम्रत चापीया:
सो ठाकुर हम दास:॥३॥ सहज सुन्य कौ नेहरो: गगं
न मंडल सिरमोर:। दोउ कुल हम आगरा: जो हम
झूलै हीडोर:॥४॥अरध उरध की गंगा जमनां:।
मूल कवल कौ घाट:। षट चक्र की गागरी: त्रिबेनी
संगम घाट॥५॥नाद बिंद की नावरी: रांम नाम पनि
हारि:।कहै कबीर गुन गाय लै: गुरु गमि उतरौ पार:।
॥६॥६॥ ॥मन नांव न नांतन्या कबीर: रांम नाम
लिषलीया सरीर:॥टेक॥ जौ लूं नर्द नली का बेह: तौ ल
हूं है रांम सनेह:॥१॥ठाढी रोवै कबीरं माय: ए लरका
क्यों जीवै षुदाय:। कहै कबीर

११नहरा त्रिभवनरायः ॥२॥१॥कबीरौमेरौकूं
नैहै उहुरायौः। नांघरिरदैनभोजनकर ईकूंन
०गोरालायौः॥टेक॥१॥जहांजहांदेषे ईनमु उंय
नःतहांतहांउठिधायौः।इनलरकनिकूंकोग्रति
पालेः काहेकूंघरआयौ॥२॥कबीराकीनारिकहै
सुनिआरूकाहेकूंब्याहकरायौः।इतनौग्यानऊतोज
बहिरिदैहमहिपरहिकरलायौः।इऊसंसारइ
रुषकोकाकोः ऋवोहीदरपनलायौः॥४॥हरिजसरचैप
सोदेषियउहैःकूंनकहांतेंआयौ॥ कहतकबीरसाईजन
चैनहीकबऊंःलोकबिसरायौः।॥५॥६॥ ॥जोगीयानांयन
उबरेःततमूलजिनपायौ॥५॥ ।जोगीयानांयन
उबरेःततमूलजिनपायौः॥५॥
मरिमरिजाईः।बारजालरोबलीडोटढेओलोतीद
ररा ईःटेक॥१॥मगरीतजोत्रीतिपाषेहैःडांडीदेऊ
लगाईः।त्रीकोछोडि परहडोबांधौः।जुग
ज्ञगरहोसमाईः॥२॥बेसिपरहडीडारमुलावोःल्या
वोरतघरघरीः।जेवीधीयासासरेपठवोः।जोबऊरिन
आवोफेरी॥३॥लऊरीधीयासबेऊलषायौः नबहिं
गबेसनपाईः।कहेकबीरभागबपुरीकोःकिलकिल
सबैचुकाईः॥४॥२॥मनरेजागतरहिरेभाईः।गाफिल
होयबस्तजिनषोवैःचोरमुसेनहीजाईःटेक॥षटच
कैजमकीनकोटरीःबस्तभावहैसोईःतालाकूंचीकु
लफकोलागेःउघरतबारनहोईः॥२॥पंचपहरवा

सोयगमेदेः।तबबस्तजागिबालागीः।जरामरन
व्यापैक्ष ब नांहीः गगन मंडलल वलागीः॥३॥कर
त विचारमनहीमन उपजीः नांकहंगयानआयाः
कहैकबीरसंसासब बूटारांमरतनधनपाया॥४॥
॥१०॥ ॥कबीरारंगलागारेः।तानैं मनकासासा
गारेः।टेक॥१॥कोईकहै हुजोगीजगमःकोईकिहै
कुछ नांहीःमैतदेष्याहिरदाभीतरःसबकहीयेतु
ममांही॥२॥अलषरूपगतिलषे न कोईःअंजनरा
तेलोईः।एकबारजो दृढकरिध्यावैःताकूं दरसन
होई॥३॥कहतकबीरमनाएकपायाःकायानग
रमजारीः।रूंसाहिबमेसेवगतेराःतारनतिरनमु
रारी॥७॥११॥ ॥अपनेमेरंगिआपुनपोजान्हं।जिहि
रंगिजांनिताहीकरमांन्हः॥टेक॥१॥ [illegible]
अतिअंतरिमनरंगसमोनाः।लोककहैकबीराबौ
रांनां॥२॥रंगनजांनैमूरषलोईः।जिहिरंगिरंगिर
ह्यासबकोईःजेरंगकौबकुनआवैजाईःकहैक
बीरतिहिरलोयमाईः॥३॥१२॥ ॥अबतोअपनेरा
मकेरंगरंगः।कामोस्तमयमांजकरेसंगः॥टेक॥१॥
संगवैमरसतनलीयाकहाऊंः।पतिबेमुषकैसैअ
चपाऊं॥२॥जासअवजसकीसंकनकरौंजबः।
सांईअपनेविमुषहोउनबः॥३॥कहैकबीरअन
औरनिकरीयेः।बिडकैसुषकौंपिवपरहरीयेः।
॥४॥१३॥ ॥नांतोजांनिबोरेबेकांवकन [illegible]

कोऊजांनिकहतहैतेऊंवां:।।टेक।।१।।जोजनएकपरमि
तिनहीजांनै:।बातनिहीबैऊंवबषांनै:।।२।।जबलग
हैबैऊंवकीआस:।तबलगनहीहरिकेचरननिवास।।
।।३।।कहैसुनेकैसेपतिअरये:।जबलगनहीआप
नहीजरये:।।४।।कहैकबीरऊकहीयेकाहि:।सा
धसंगतिबैऊंवहीआहि:।।५।।१४।। ऽऽकोहूमाया
उषकरिजोरी:।हाथिहूनगजपांचपिछौरी:।।टेक।।१।।
नांकोईबंधननाईसाथी:।बांधरहेतुरंगमताधी:।।२।।
मेडीमहलजसोभतबाजा:।छाडिगयेसबरूपति
राजा:।।३।।कहैकबीररांमल्यौलाई:।धरीरहीमाया
काहूनहीषाई:।।४।।१५।। ।।मायाकाफलषांनन
पाया:।अथबरजमबिलवाहेयधाया:।टेक।।१।।ति
लतिलकरिईऊमायाजारी:।चलतबेरतिहुकाजुते
वी।।२।।अनेकजतनकरिगाडिउराई:।अवरनसाचै
अवरनषाई:।।३।।कहैकबीरसबफोकटफोका:।कू
ठीमायारहेलेलोका:।।४।।१६।। ।।अवरहीभरतसोक
क्याकीजे:।तोकीजेजोआपनजीजे:।।टेक।।१।।स
तहस्तीजाकेलषकेकांग:।तोऊहतगडीतजेपिरांन
।।२।।गरेषिथरिवारांमगुनगावै:।कहैकबीरसैराम
हिलावै:।।३।।१७।। ।।नाईसैसाधरक्याकीजे:।ध
धोकरिकरिजनमगमायौ:।रांमबिनांक्योजाजे:।।
।।टेक:।।१।।बांनिकूटीव्याजबिजंतरि:।दोदाईनां
कीया:।सुषकारनिउंषबऊतकमाया:।बिषअंमत

करिपीया:॥३॥मांनमांनकुमसंजमिहूता:ममम
तासूमनलायो:।पुतरकलितरकोमुषजोयो:ग
फिलजनमगमायो:॥३॥राजारांनांरूपतिहू
ले:दुषकरिमायाजोरी:।कहैकबीरबिनांजग
जीवननरकैलमकोरी॥४॥१८॥ ॥रेयामैक्या
मेराक्यातेरा:।लाजनमरतकहतघरमेरा:टेक॥
॥१॥च्यारपहरनिसिनेरा:जैसेतरवरपंषबसे
रा:॥२॥जैसेबनीयेहाटपसारा:सबजगका
सोसिरजंनहारा:॥३॥उवेलेजारउवेलेगाडे:
हैनदुभियनदोऊघरछाड़े:।४।कहैकबीरसुन
उरेलोई:हंमतंमबिनसिरहैगेसोई:॥५॥१९॥:
॥नरजांनैंअमरमेरीकाया:।घरघरबातदुपहरी
काया:॥टेक:॥१॥मारगछाडिकुमारगधोवे:आ
पनमरैऔरहूंरोवे:॥२॥कछुकक्षीकछुयक
करनां:।मुगधनचेतेनिहचैमरनां:॥३॥ज्यों
जलबूंदहीतेसंसारा:।उपजतबिनसतनल
गैबारा:॥४॥पंचपंषुरीएकसरीरा:।हंसेक
वलदलनवरकबीरा:॥५॥२०॥ ॥अबक्यासो
वैआयबनी:।सिरपरिसाहिबरांमधनी:॥टेक॥१॥
दिनदिनपापबहुततैंकीनां:नहीगोबिंदकीसंक
नमंनी:लियोजोमिबहुतपछितांनो:।लालचलागो
करतघनी:॥२॥[illegible]।कु
टीकोज[illegible]निगटघेस्यो:।उडिगयोहंसउतोरतनी:॥

पंकस्यो हंसजमलेन्ना ल्यो: मंदिरसोवे नारिधनी:॥३॥
चीन्हत नाहिन एकही चिनी: जब जाय आयपरोसी
घस्यो: ॥ ब्राउिल्यो तजिउ दसपनी:॥४॥२१॥
रसनाथ कितबोल नहीं आवे: करै कि मरैजो बु
त हि बनावे: ॥टेक॥१॥ धरीदकी माहिक बुबनाई
लरका काहि जिवाउ माई॥२॥ जोउं जो रहे
अबचल जोरी:॥ काहे कंतते अधबिचिबारी॥३॥
कहै कबीर हं तन मन उंडे ॥ अपनो रामदि बिन
न बिसाऊं॥४॥२४॥ ॥ सुबटा डरपत हुं मेरे
नाई॥ ना हिं जाइ देत बिलाई: तीन बार हुं घेर कर
हूं नमे कबहु कबनाबवाई॥टेक॥१॥ रांनारा वरक
मु गधन मांने: सबुनीया उहकाई॥२॥ कहत कबी
हूं व्यापे: करि करि प्रीति सवाई॥३॥ लाभ मं
रसु न करे सुवटा: उनरोगे हरि सरनाई॥४॥२३॥
हिते लेत अखांनक: काहू देत न दिषाई॥ जगजाई
क्या मांगूं कछु थिर न रहाई: देषत नैन चल्यो
॥टेक॥१॥ इकलष पूत सवा लष नाती: ता रांवन घरि दी
ना न बाती॥२॥ लंका सो कोट समंद सी षाई: ता रांवन की
षबरि न पाई॥३॥ कोआवत संग न जात संगाती: क
यां नघो दरि बांधे हाथी॥४॥ कहै कबीर अंतकी बारी
॥ हाथ झारि जैसे चल्यो जुवारी॥५॥२८॥ ॥ मन रे तन
कागद का पुतरा: लागे बुंद बिनसि जाय छिन मे: गरब

करैवपाइतराः॥टेक॥१॥ माटीषोदैंनीतिउसा
रै: अंधकहैघरमेराःजमआवैतबबांधिलेचा
लेःबऊरिनकरिहैफेराः॥२॥ षोटकपटकरिईऊ
धनजोस्योःलेधरतीमेंगाड्योः रोवैघरसासन
हीनि कसेःगोरगोरसबछाड्योः॥३॥ कहैकबीर
नटनाटकथाकेःमंदलाकोंनबजावैः।गयेपिष
नीयाःउजरीबाजीःकोकाहूकेआवैः॥४॥२५॥
॥ ॥यातनधनकीकूंनबडाईः।धरनिपरेजैसे भ
बालबिलाईः॥टेकः॥१॥चोवाचंदनमरदनअंगाःसो
तनजरैकाठकेसंगाः।हाथनटोडरमुषहितबीरः।म
रतीबरजैसैंकसीयेचोर॥२॥कहैकबीरमायाकेफं
धाःअबचलरांमऔरसबधंधाः॥३॥२६॥ ॥:॥
ऊठेतनऊकहागरबैयेःमरिजैयेतौपलनरिर
हनेनपैयेः॥टेकः॥१॥चोवाचंदनचरचहिअंगा
सोतनजरैकाठकेसंगाः॥२॥ षीरषांडघ्रितपिंड
सवाराःप्रांनगयेबादरिलेजाराः॥२॥दासक
बीरऊकीकबिचाराःइकदिनऐहैहवालहं
माराः॥४॥२७॥ ॥देषऊऐऊतनजरताहैःघ
रीपहरबिरमोरेभाईजरताहैः॥टेकः॥१॥काहे
कूंएताकीयापसाराःऐऊतनजरिबरिकैहैछा
राः॥२॥नवतनद्वादसलागीआगीःमुगधनचे
तैनषसिषलागीः॥३॥कामक्रोधघटभरयोबि
काराःआपहीआपजरैसंसाराः॥४॥कहैकबी
रहंमृतकसमानांःरांमनांमछूटेअभिमानांः
॥५॥२८॥ ॥तनराषनहाराकोनांहीःतुंमसोच
बिचारदेषौमनमांहीः॥१॥टेकः॥जोरकुटंबअपनै

घरि पारयो मूड गोकि बाहरि लेजास्योः ॥२॥ दगाबाजलूं
टेअरु रोवैः। जारि गाढि कुरबोज हि षोवैः ॥३॥ कहत
कबीर सुनउ रे लोईः इन कारा बनहारन कोईः ॥४॥२२॥
॥ ॥हरि ठगा जगत ठगौरी लाईः हरि बिवोग कैसे जीऊं
मेरी माईः ॥ टेक ॥१॥ कूंन हतकौ बापः कूंन मरे कौ करे सं
तापः ॥२॥ कूंन पुरुष कौ कौ की नारीः अ नि अंतरि तुम
लेऊ बिचारिः ॥३॥ कहै कबीर ठग सूं मन मानां: गई ठ
गौरी ठग पहिचांनां: ॥४॥२०॥ रांम ठगौरे हूं व गिलीनोः
सब तैं कूड़ाय अपने बसि कीनोः ॥ टेक ॥१॥ लोक बेद
की संकासीः हरि देखे घिर है अबिनासी ॥२॥ दहि अह
अभिमांन न सायोः परमपुनीत परमपद पायोः ॥३॥ क
है कबीर हरि के चरन निवासाः रांमनांम मन बस्यो उजा
सा ॥४॥२१॥ ॥ रांम रमत सब जरि किन जाईः काकी बस
कौं पढि ताईः ॥ टेक ॥१॥ काको जरे रे का दिकै हं निः नटब
र षेले सारंग पांनिः ॥२॥ काकी अग नि कौंन कापौंनः जा
रे रांम तो राषे कौंनः ॥३॥ कहै कबीर है अप सा भिः कहै
रांमनो लै है राषिः ॥४॥२२॥ ॥ जा जर नाव उरां वन
नीरः कहै कवन बिधि लागे तीरः ॥ टेक ॥१॥ सुल पज
वन चंचल मति मोरः करम धा सिर हठ सके बोरः ॥२॥
चितन वन मन परिलै है मारः विन षेवट कैसे उतरै पारः ॥
॥३॥ कहै कबीर कोई संग न साथः न वजल तारि लेऊ
रघुनाथः ॥४॥२३॥ ॥ रे मन रांम सुमिरि पाछितां हि
गाः। या देही कौ गरब न कीजेः कागद जैसे गरिजा हिंगा
॥ टेक ॥१॥ जब जम आवे पकरि मंगावेः तब तेरा क
छु न बसाय गाः ॥२॥ कहै कबीर रांम के सरनैः साधु
गति तिरि जायगा ॥३॥२४॥ ॥ ॥श्री॥

।।रूती माया बांधे रे लागे।।हरि सुं विमुष विषै रस लागे:
।।टेक।।१।।नव जल सजल मीन अनुरंगा:।जल जंजा
ल सब ही कुसंगा:।।२।।माया लागि ग्यान जि हिर्दी
न:।ते हरि स्यांन दूकर निज कीन:।।३।।गुरमुष ची
न्हे रांम लिव लागे:।कहै कबीर तेई नर जागे।।४।।३४।।
।।५।। हरिजन निहरिजन निजियरा:।जो भोज
न सो आहि नियरा:।।टेक।।१।।इंद्री स्वाद न स्वा
द न बाही:।कहि कहि बैन जोगी नि पाई:।।२।।केसौ कै
सि कैंच वनजर लैथि:।स्वाद पाजो निज्यग निमेदय
।।३।।इंद्री कहि कहि कबहुं न कीजै:।मनके कहत सु
न न सुष मजीजै:।।४।।कहै कबीर आब हुं कस मान:।।
इंद्री सेवा मन का जान:।।५।।३५।। ।।सरवरे मित
वामो रजु हान:।हेमा उज पष पस्यार:।।टेक:।।
न ही तन पहनेद क्या कीजै:।हरि अवसर उरहनी
कालीजै:।।१।।बऊन बिषै रस जिन विसरावा:
।।२।।काम मदिरा हरि पुर कौर अवर नही पावा:
।।३।।पीवत अघाही:।कहै कबीर पीछै पछताई
।।३७।। ।।काहे रे मन दह दिसि धावै:।विषय
संगि संतोष न पावै:।।टेक:।।१।।जहां जहां कलपै
तहां तहां बंधना:।रतन को थाल कीयौ तैं
रंधना:।।२।।जे सेसु षपावन इन माही:।तोरी
जन्म छिद्र तन बन ढूं जाही।।३।।आनंद सहित
जे विषनारी:।अब का जीभै पतित निबारी।।४।।

अरि: नजि बिचि या
कहै कबीर अनुभव दिन ॥ जियराजा
न जिंचर नसुरा रि ॥५॥२७॥
हि गो मैजो नाहे: जो देख्या सो बकरि न पेख्या: मा
आकुल पद नां: ॥ टेक ॥१॥ बाकल बस्तर कि
ता पहरि ब्या: कै तो बन षंडि बसा: कहा भ
या नर गूडि मुडाऐ: कहा जल पैठि न्हाऐ ॥२॥ क
गधरे पाहन पूजे: कहा जल हिरे गाई: लोका पंथ लगाई
है कबीर सुर मुनि उपदेस्या: लोका पंथ लगा
सुनो संत सुमिरो भगवंता हरि बिन जनम गवा
रि ॥३॥३२॥ ॥ अब मैं जाणिबो सो ना रे पा ब्रै:
का छि देइ तो साहिब लाजै ॥ टेक: ॥१॥ नान
जो निकस्या वपु ऐसे मैं: अब जिन बांधे गगन उर
हि लेमै: ॥२॥ थावर जंगम लप चौरासी: कै
अपुरुष कबु बनवासी: ॥३॥ अनि तन माफ
न बैस रीर: करै कि पार मकहै कबीर ॥३॥४०॥
नो हित जिनरेजन कापैजां हि: सरीर असाध
न रो सानां हि: ॥ टेक ॥१॥ नां मैं जोग ध्यान चित मन
लाया: नां बैराग तजी नहीं माया ॥२॥ नां मैं त
मित्र मित्र रिधी कीन्हे: नां हरि दरसन पाया नगर
ची कै: ॥३॥ नगन भगन नहीं भया सरीर: हे
रि गुन गावै दास कबीर: ॥४॥ ४१॥ ॥ सब
को जन कहै कबीर जलो जन: रा म चरन नहीं ला
जा हिल मन: टेक ॥१॥ सर तिन हीं जि हिला गि

निहोनाः हरिकैसे मिलै न हि भ्रमका डोराः ॥२॥ सोंजु
गतिनं जानूं जो प्रसु नावैः हरि कैसे द्रवैः सेजन नआ
वैः ॥३॥ कहै कबीर हरि सबकी जानैः जन जन अपनां
सेवक मानैः ॥७॥ सो मुनि जन जो मन कूं मारैः मनमा
रै सो आपा तारैः टेक ॥१॥ मन मंदिर मे बोलै सोईः म
न जीते बिन सिद्धि न होईः ॥२॥ मन त ब्रुद्धि बुद्धि मन
एक समानः सो न मिल्या जाते छूटै अभिमानः ॥३॥
मनै सु भि काया आपीः मन मारि रिधि सिधि करिथ
पीः ॥७॥ कहै कबीर जो जानै भेवः मान त्रिभुवन मन
त्रिभुवन देवः ॥७॥ ऐसो तो मन का तन रमवाराः म
नही उठै मन ही बैठै मन चिंतवै मन म्हाराः टेक ॥१॥
मन ही देव देहरा मन ही मन ही है पूजाराः मन ही
मन कूं पाती तोडैः सब कछु मन का साराः ॥२॥ त
न कूं बोजि रहै मन जीत रिः सुमिरन बारंबाराः ॥
कहै कबीर या मन कूं बूझैः ते जन जगते पाराः ॥
॥३॥४४॥ ॥मन थिर त है नै घर कै मे राः इन मन
घर जारे बहु तेराः टेक ॥१॥ घर न जि बन बाहर की
यो बासः घर बन देखू दोऊ निरासः ॥२॥ जहां जा
ऊं तहां सोग संतापः जरा मरन को अधिक बियापः ॥३॥ कहै कबीर चरन तो दि बंदाः घर मे घर देप
मानंदाः ॥७॥४५॥ ॥कैसे नगर करुं कुटवारी
चंचल पुरुष विचषेर त नारीः टेक ॥१॥ बैल बिया
य गाय नई बंझाः बछरा दूझै तीनूं संझा

कहै कबीर अनुभव बिन नारि:न जि बिधिया
न जि चरंन मुरारि ॥५॥२५॥ ॥जियरा जा
हिगो मैं जांनां रे:। जो देख्या सो बहुरि न पेख्या: मा
या सूं लपटां नां: ॥टेक॥१॥ बाकल बस्तर कि
ता पहरिवा: के तो बन षंडि बसा:। कहा मु
गध रे पाहन पूजे: कहा जल इरि गा:॥२॥ क
है कबीर सुर मुनि उपदेसा: लोका पंथ लगाइ:
सुनो संत सुमिरो भगवंता हरि बिन जनम गवा
ई:॥३॥२६॥ ॥अब मैं नाचिहु स्यो तारे पाछै:
नाना
का छि देऊ तो साहिब लाजै ॥टेक:॥१॥
जो निनम्यां बऊने मि:। अब जिनवा मगन भऊ
हि लेमै:॥२॥ थावर जंगम लख चौरासी: कब
ऊपुर कबऊ बनवासी:॥३॥ अतिन न भाऊल
न बेसरीर: करै क्रिपा रांम कहै कबीर॥७॥४॥
ना हित जित रे जन का पेजा हि: सरीर असाध
ना हि:॥टेक॥१॥ नां मैं जोग जुगति मन
लाया: नां बैराग तजीन ही माया॥२॥ नां मै त्र
मित्र मितीरथ कीन्हां: नां हरि दरसन थ्यन भर
ची कीः॥३॥ नगन मगन नहीं नया सरीर: है
रि गुन गावै दास कबीर:॥७॥८॥ ॥अब
ऊ कहै कबीर चलो जन:। रांम चरन नहीं लागि
जा टिल मन:॥टेक॥१॥ सरतिन हीजि हि लागि

निहोनाः हरि कैसे मिलै न हि भ्रमका डोराः ॥२॥ सौजु
गति न जानूं जो प्रभु नावैः हरि कैसे द्रवैः से जन न आ
वैः ॥३॥ कहै कबीर हरि सब की जानैः जन जन अपना
सेवक मानैः ॥ ॥ सो मुनि जन जो मन कूं मारैः मन मा
रै सो आपा तारैः टेक ॥१॥ मन मंदिर मै बोलै सोईः म
न जीते बिन सिद्धि न होईः ॥२॥ मन तजु छिन छिन मन
एक समानः सो न मिल्या जाते छूटै अभिमान ॥३॥
मनै सु सिकाया व्यापीः मन मारि रिधि सिधि करि थ
पी ॥ ॥ कहै कबीर जो जानै भेवः मन मधुकर मन
त्रिभुवन देवः ॥ ॥ ऐसौ तो मन का तन स्वाराः म
न ही उठै मन ही बैठै मन न चितवै मन न्याराः टेक ॥१॥
मन ही देव देहरा मन ही मन ही है हजाराः मन ही
मन कूं पाती तोडैः सब कुछ मन का साराः ॥२॥ त
न कूं खोजि रहे मन जीत रिः सुमिरन बारंबाराः ॥
कहै कबीर या मन कूं बूझैः ते जन जगते पाराः ॥
॥३॥ [illegible] ॥ ॥ मन थिर रहै तौ घर कै मेराः ६ न मन
घर जारे बऊतेराः टेक ॥१॥ घर तजि बन बाहर की
यो बासः घर बन देखूं दोऊ निरासः ॥२॥ जहा जा
ऊत हां सोग संतापः जरा मरन को अधिक बियाः
पः ॥३॥ कहै कबीर चरन तो हि बंदाः घर मै घर देप
मानंदाः ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ कैसे नगर करूं कुटवारी
॥ चंचल पुरुष विचषेरत नारीः टेक ॥१॥ बैल ब्या
य गाय भई बंझाः बछरा दूहैं तीनूं सझाः ॥२॥ मक

मांझपसारि: कीन्ह नषवारी:॥२॥
रीघर माची ब बिहारी:।मीउ कसोवे साप पहरवा:॥
मूसाके परधांन बिलुवा:।कहेकबीरको
नजी नित्य उठि स्याल सिंघसुं जूझे:॥नाई रे हूं न बिलोटपा
ई बिरला बूझे:॥५॥३५॥ ॥षसम निलेद लहाई:॥
ई:बाप निसंगि नई सबद निके:कोई न जाने
॥टेक:॥१॥सब घर फोरि बिलोटा पायो:रोउ न देई लेवा:॥२॥
भेवा:षसम निदूतो आग निदूतो:मांहि उई घर पालै:।पच
पारो स निप निनई विरांनी:याकी ममता लै:॥३॥ दै
सषी मिलि मंगल गावै:रउ उषया कीमा लै:।घर घेह
देदीपक घर घर जोये:मंदिर सदा अंधारा:॥जाहे
र सबक्षा पहुचार्थ:बाहरि कीया पसारा:।कहे
नउ ज्यार सबै कोई जांनै:सबका रूमन मांनै:॥५॥ ॥४६॥
कबीर मिलै जे सतगुर तो रह चूंन बुझांनै॥ होनन देय हरिकेप
॥बिषयाजउ सुरति सुषआसा:।सुष मांगउ पहली ही आवै:॥
रण निवासा:॥टेक॥१॥सुष मांगउ पतें सिव बिस्वउ
नातेह सुषमांग्यो न जावै:॥२॥जा सुष तै सुष अज्ञान
नांनां:।सो सुष हम उ साच कर जांनां:॥३॥ ॥४॥नि
बसबकुष नागा:।गुरके सबद मेरा मन जागा:।बिगईनर कि नजातांबा
सिदिन बिषेत नांउ पगारा:।तब केवल मतित्यागी:।तब केवल
रा:॥५॥कहेकबीरवंचलमतित्यागी:॥६॥ ॥४७॥ ॥देषुनरककीउअ
रामनाम लौ लागी:॥६॥ ॥टेक॥१॥इजमोह
भिकाई मुनि परजीत सब लागि धाई:॥२॥का
नरस बिषहे नाई:।रसरत नीयेपतितहोयजाई:॥२॥का
लबकरको समझतआवै:।रघनाथसरनिबिनआ

वन न पावै। मन वच क्रम जो राम हि गावै। ताके माया निकटि न आवै॥ कहै कबीर इक नर का वउराई। जोन कजतन करि तजी न जाई॥ ५॥४७॥ रा बिषीय की कलप न जाई। कैसे सर नि आउ रांम राई॥ टेक॥ ॥१॥ मन साध होत नहीं कबहू। रांम बिनां दुख न ऊबहू॥ २॥ मन मातंग ज भिन भिन धावै। हरि दरस परस विन सचु नहीं पावै॥ ३॥ आमि ले आ जड़ि सम जाई। कहै कबीर इन अवसर जाई॥ ४॥७४॥ ॥ ॥ माया तजत जी नहीं जाई। फिरि फिरि माया मोहि लपटाई॥ टेक॥ १॥ माया आदर माया मान। माया नहीं तहां ब्रह्म ग्यांन॥ २॥ माया रस माया कर जांन। माया कारनि तजे परांन॥ ३॥ माया जप तप माया जोग। माया बाधे सब ही लोग॥ ४॥ माया जल थलि माया आकासि। माया व्यापि रही चहुं पासि॥ ५॥ माया माता माया पिता। अंति माया अस्त्री सुता॥ ६॥ माया मारि करै व्यौहार। कहै कबीर मेरे रांम अधार॥ ७॥ ५०॥ ॥रे नर जन्म जाता है तोरे। सौं प हिरांम हिला गि निहोरे॥ टेक॥ १॥ जोबन जरन दे थि मे आगि। ता स नि प्रीति करि हि क्या लागि॥ ॥२॥ दूले तो गऊ टंब ग्रह बास। कहै कबीर [illegible] गी सब नास॥ ३॥५१॥ ॥ अह जीन जो न [illegible] ॥ कवन कलेस उगा य ले मंदिर रांम कहै [illegible] रे॥ टेक॥ १॥ ई निय ह मन उहके सब [illegible] कोप लोन इ रीर॥ २॥ जा रां [illegible]

रिनये नसमकोक्रूरोरे ॥२॥ सबतैनी कीसंतमंडली
या हरिनगतेकोनेवोरे ॥ गोविंदकेगुनबेगेहे
घेहेहुकोटेरोरे ॥३॥ ऐसेजा निजप्रभु जगजीवन
जमसुतिनकातारोरे ॥ कहेकबीरराम नजिबेकुं
एकाआधकोऊमूरोरे ॥ ॥ ५२ ॥ रागजमी
नदेषिवऊपानी ॥ कालजालकीषबरिनजांनी ॥ टेक ॥
॥१॥ गारेगरब्यौऔघटघाट ॥ सोजलब्रुडिबिकांनो ॥
हाट ॥ ॥२॥ बांध्योनजांनेजलउदमाद ॥ कहेक बीरमो
हेसबस्वाद ॥२॥ ५३॥ ॥ विनसिजाएकागदकीगुडीया
॥ जबलगपवननतबेलगउडीया ॥ टेक ॥ ॥१॥ गुडीयाको
सबदअनादहदबोलै ॥ पसमलीयेकरडोरीडोलै ॥ ॥२॥
पवनपक्योगुडीयागहरांनी ॥ सीसधुनेधुनिरोवेआनी ॥
॥ कहेकबीरनजि सारंगजांनी ॥ नहीतरके कै
गोचातांनी ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ नरहरसहजेहीजिनजान
गतफलफूलततरुपलवअंकूरबीजनमानो ॥ टेक ॥
॥१॥ प्रगटप्रकासग्यांनगुरुगमितेः ब्रह्मअगनिपरजारी
॥ ससिहरसूरदूरदूरंतरलागी जोगजुगतारी ॥ ॥२॥ उलटे
पवनचक्रषटवेधामेरडंडसरस्वरागगनगरजिमनसुन्य
समानां ॥ बाजेअनहदतूरा ॥ ॥३॥ सुमतिसरीरकबीरवि
चारी ॥ त्रिकुटीसंगमस्वामी ॥ पदआनंदकालतेछुटै ॥
सुषमेसुरतिसमांनी ॥ ॥ ५५ ॥ मनरेमनहीउलटिसमां
नां ॥ गुरुपरसादअकलिनईतोकूं ॥ नहीतरथावेगानां ॥
॥ टेक ॥१॥ नेरातेदूरिदूरितेनेरा ॥ जिनजैसाकरिजांनां ॥

औ लोती का चढावन लीडे: जिनि पीया ति निमांनां:॥२॥
उलटि पवन चक्र षट बेध्या: सुन्न सुरति लव लागी:।
अमर न मरै मरै नही जीवै: ताहि षोजि बैरागी:॥३॥ अन
भै कथा कौन सु कहीये: है कोई चतुर विवेकी:। कहै क
बीर गुरु दीया पलीता: सो झल दैषी:॥७॥५७॥ २२
इहि तत रांम जपु रे प्रांनी: बूझै अकथ कहांनी:। जा
परि क्रिपा न ई सत गुरु की: जागत रै नि विहांनी:॥
॥टेक:॥१॥ डायन डारी सुनहा डोरै: सिंघ रहै बन घेरै
। पंच कुटंब मिलि झूझन लागे: बाजत सबद संघे
रै:॥२॥ रोह्यो मृग सुसौ बन घेरै: पारधी बांन नमे
लै:। सायर जलै सकल बन दाझै: मछ अहेरै षेलै:
॥३॥ सोई पंडित सोई तत ज्ञाता: जो इहि पदहि वि
चारै:। कहै कबीर सोई गुरु मेरा: आप तिरै मोहि
तारै॥७॥५८॥ ॥अवधू ग्यांन लहरि करि मंडीरे:
सबद अतीत अनाहद लागा: इहि बिधि त्रिस्ना षां
डी:॥टेक॥१॥ बन कै सुसै समद घर कीनां: मछा बसै प
हाडी: सुन्न पीवै बांम्हन मतवाला: फल लागा बिन
बारी॥२॥ षाउ बनै कोली मैं बैठी ...
तांनै बांनै परी अनवासी: सूत कहै बुनि गा...
कहै कबीर सुनहु रे संतो: अगम ग्यांन पद ...
गुरु परसाद ...
आनै जांही॥७॥५९॥ ॥एक ...
बाढा संपष वावै गाई:॥टेक:॥१॥ ...

ई:॥ चेला के गुरु लागे पाई:॥२॥ जलकी मछली तरवर ब्याई:
पकरि बिलाई मुरगे षाई: बैल हि डारि गूनि घरि आई: कु
ता कूं ले गई बिलाई:॥३॥ तलि सारवा ऊपरि मूल: ब
हुत जोति जउ लागे फूल:॥४॥ कहै कबीर या पद कूं बूझै॥ ता
कूं तीन्यूं त्रिभुवन सूझै:॥५॥६०॥ ॥ईसो माहि दिखु गीआ
देखि विचारी: बिन ही पुरुष त्रिया का धूं नारी:॥टेक:॥१॥
आवटे हु धध स्यो उतराई: केन लेऊ मुगें मुं जाई:॥२॥
घारे चढिनै सिव रावें जाई: बिन ही बरद गूं निचलि
आई:॥३॥ बरद बिवाय गाय ले पोसा: ऊत्र चले अ
ढाई कोसा:॥४॥ कहै कबीर ईहै पद सारा: जो जानै सो
उतरै पारा:॥५॥६१॥ ॥हरि षारे बेर पकाये: जि नि
जोरति निपाये:॥ ज्ञान अचेत फिरै नर लोई: ता तैं जनमि
जनमि उहकाये॥टेक:॥१॥ ढोल मदली या बैलर बाबी:
कउवा ताल बजावै:॥ पहरि चोल नांग दहा नाचै: जेसा
निरति करावै:॥२॥ स्यंघ बैठा पांन हि कतरै: घूस गि
लौरा लावै: उदरी बपुरी मंगल गावै: कछुआ ने
द सुनावै:॥३॥ कहै कबीर सुनउ रे मैं तो गउरी पर
वत षावा: चकवे बैस अंगरा निगल्या समंदर का
साधवा॥४॥६२॥ ॥वरषा जिन जेरे: काहूगी
हजारी का सूत: नणद के जईया की सों॥टेक:॥१॥
जल जाई थलि ऊपनी: आई नगर मे आप: एक
अचंभा देषीया: बिटीया जायो बाप:॥२॥ बाबुल मे
री ब्याह करि बर उतम ले चाहि: जब लग बर पावै न
हीं तब लग तूं ही ब्याहि:॥३॥ सुबुधी के घरि लि बधी

आयेः औनबरू केनाईः। झूलैः अगमि अन्यायकरि
फलसो दीयो ब्ता ई॥ ॥४॥ सबजगहीम रिजा सः एकबद
दिया जिन भरेः सबनर उनको साथ्य चरणा को फिरैः॥५॥
कहैकबीर साईपंडित ज्ञाताः जो या पद हि बिचारैः। पहलै
परखै गुरु मिलै तौ पीछै सत गुरु तारैः॥५॥६२॥ ॥
रूगरा एक निवेरौ रांमः जे तुं मअपनां जनसुं कांमः।टेक
॥१॥ ब्रह्मा बडा कजिन रूप उपायाः॥ वेद बडा कि जहां तै
आयाः॥२॥ इअमन बडा कजहां मन मांनेः॥ रांम बडा करांम
हि जानेः॥३॥ कहैकबीर हूं षरा उदासः तीरथ बडे कहरि
दासः॥४॥६४॥ दास रांम हि जांनि हैरेः अवर न जानै को
ईः॥ दास बिबेकी सब न लैष रिसे दसबानां होईः।टेक
॥१॥ काजर दे ईसबै कोईःच ष्य चिकन मांहि बिनांन
। जि नि लोयन मुनि मोहीयाः ते लोय न परवांनः॥२॥
बोहत जंगत नव सागराः नाना बिधिना नाव
जि हि हिरदे श्रीहरि भेटीया सो भेद कऊं कऊं गंवः।
दरसन अमर क्या कीजीयेः जो गुन होन हीहोत समा
नाः। सीधे नीर कबीर मिल्यो है। वो फटक न मि
लैपषांनः॥४॥६५॥ ॥ कैसें होयगा मिलावो
हरिसनांरे तु बिषै विकार न तजि मनांः।टेकः॥
॥१॥ रे तैं जोग जुगति जांनां नहीः तैं गुरु का सबद मा
न्यां नहीः। गंदी देही देषि न फूलीयेः संसार देषि न
भूलीयेः॥२॥ कहैकबीर मन बड गुनीः हरि भग
ति बिनां दुष फुनि फुनीः॥३॥६६॥ ॥ ॥

।।का स्यक सी ओम सु निर मांने राम रमन जाने को यजी।।
दास बिबेकी सबजन ले: परिने दन ठांना होयजी।।
।।टेक।।१।। एसकल ब्रह्म सो उने स्वरीया: अलख जाम
हि ध्यानजी: मे सब घट अंतर पेषीया: जब देष्या ने
न समानजी।।२।। राम रसायन रस पिके है: मदन तग
ति विस्तारजी।। परम निसा जोगत करें: ता हि मे जेस
सारजी।।३।। सिव सनकादिक नारदा: बहु लीया नि
जवासजी।। कहे कबीर पद पंकजा: अबने रान निवा
सजी।।४।।३३।। ।।मे ओरे ही ओरे जाउगा: तो मे बऊ
रिन नवजल ल्याऊगा:।टेक।।१।। सूत का सूत कब
रिन नवजल ले कंध ओरा:।कंध्या ओरा लागा:।
धोरा: ताते लायले कंध ओरा:।।२।। जहां सूतक पाअन
तबजरा मरन न नवजागा:
तहां बसे इक सून असूनी: सूनी सुचित ला
सूनी: तहां बसे इक रिन नवजल ल्याऊगा:।।३।।मेरे इ
ऊगा: तो मे बऊ रिन नवजल ... उस राजा ऊमन
इक राजा: तहां बसे इक राजा: ल्याऊगा:।।४।।ज
लाउगा तो मे बऊ रिन नवजल ... लायले जोती: उस
हीं बऊ दीरा घन मोती: तहां तत लायले जोती:
जोति ही जोति मिलाऊगा: तो मे बऊ रिन नवजल
ल्याऊगा:।।५।। जहां उगे सूरन चंदा: तहां देष्या प
रमानंदा: उस आनंद सु चित लाऊगा: तो मे ब
ऊरिन नवजल ल्याऊगा:।।६।। मूल बंध्या इक
पावा: तहां सिध गनेस रावा: उस मूल हि मू
ल मिलाऊगा: तो मे बऊरिन नवजल ल्याऊ

गाः॥७॥कबीरा ना हिब तेराः न हो गो [illegible]
मेराः जे हेत हरी चित लो [illegible] गाः [illegible]
वजल [illegible] गाः॥ [illegible]॥ ॥संतोः [illegible]
गगन बिन सिंगयाः सबद [illegible]
सा मो हि नि सि दिन व्यापेः को ई [illegible]
॥टेक॥१॥ नो हि बसंउ पिंउ पुनि नाही [illegible]
नी नांहीः इडा पिंगला सुषमन नांही [illegible]
समाई॥२॥ नहीं ग्रह द्वार कछु नांही [illegible]
रचनहार पुनि नांहीः जोवनहार अतीत सदा [illegible]
[illegible] नहीं समाई॥३॥ [illegible]
पुनि [illegible] जब तब होय बिनासः [illegible]
[illegible] को [illegible] बिसतारा॥४॥ [illegible]
[illegible] बिनसे [illegible]
[illegible] पद [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]॥२॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥५॥ [illegible]
[illegible]॥५॥ [illegible]
[illegible]

कलसरीरा: तामनमैरमिरह्याकबीरा: ।।६।।१८०।। ।।
नाईरे बिरलेदोस्तकबीरके: रऊतनबारबारका
सुंकहीये: ।नाजएघउएसवारएअमरपजूंराषे
ज्यूंरहीये: ।।टेक:।।१।। आलमदुनीसबैफिरिषोजी:
हरि बिनसकलअयांनां: छहदरसनछिंनवेपाषंड
आकलकिनउनजांनां: ।।२।। जपतपसंजमपूजा
अरचा: जोतिगजगबौरांनां: कागदलिषिलिषिज
गतभुलांनां: मनहीमननिसमांनां: ।।३।। कहैकबी
रजोगीअरजंगमएसबझूठीआसा: गुरुपरसादरटो ।।:।।
चात्रिगज्यूं: निहचैचरननिवासा: ।।४।।१९।।
।।मनेरक्याकहीयेक्यानांही: जोयामृगअधिककरि
कहैअतिपडेमैमांही: ।।टेक।।१।। वेदकतेबकुरानपुरानां
निगमहिअगमविचारा: पारअपारपारनहीआवे:
नेऊपचिपचिहारा ।।२।। कहैकबीरमनमनहीसमा
नां: सबपरकारअकेला: एकैमेदूजादिषलावे: ता
सगुरुमेचेला: ।।३।।२०।।   ।।कितेकसुरअंकरगये
जरि: ।रांमअमाधिअजऊनहीछूटि: ।।टेक।।१।।ब
लैकालककूं कितेकनाम: गयेरजैसेअगिनैलाष: ।
।।२।। ब्रह्मांडोजिपरलोगहिकाल: कहैकबीरउहेरांम
निराल: ।।३।।२१।।   ।।अचिंताचिंतयेमाधो: सोय
बमांहिसमांनां: नाहिंबडिजेआंनभजतहै: तेसब
मनभुलांनां: ।।टेक।।१।। ईसकहैमैध्यांननजांनूं: दु
पदनिजमांही: रहैकनककरनांकाननकेसो: नाव

रनं क्तं नोही:।।ञा।।कहो थौं सबद कहां ते आवे: अर फि
रि कहां समाई: सबद अतीत का मरम न जांने: अमिन्न
ली उनीयां ई:।।४।।पंडि मुकति कहा ले कीजे: जो पद
मुकति न होई: पंडि मुकति कहे मुनिजांनां: सबद अती
ता सोई:।।५।।प्रगटि गुपत गुपत पुनि परगट: सो कत रहे लु
काई:।कबीर परमानंद मनायो: अकथ कथ्यो नहीं जा
ई:।।५।।७२।। ।।का कहि पंडित कर सि विचारा: रांम
नांम विन उवार पारा:।।टेक:।।१।।जस कहीये न सहे तं
नहीं रांम:।एक हिय न मनु के विश्रांम:।।२।।मूढ न जा
नहि ताकर अंतु: कहे कबीर ऐसे रांम अनंतु:।।३।।७३।।
सो कबु विचार अ पंडित लोई: जाके रूप न रेष बर
न नहीं कोई:।टेक।।१।।उपजे प्यंड प्रान कहां ते आ
वे:।मूवा जीव जाय कहां समावे:।।२।।इंद्री कहां
करहु अस मांनां: सो कत गये जु कहते रांमां।।३।।
पंचतत्व जहां सबद न स्वादं:।अलष निरंजन तहां
विद्या नवादं।।४।।कहे कबीर मन मनहीं समांनां:।
तब आगम निगम झूठ करि जांनां:।।५।।७४।। ।।
जो पै बीज रूप भगवांनां: तो पंडित क्या कथसि
ग्यांनां:।।टेक:।।१।।नहीं तन नहीं मन नहीं अहंकार:।
नहीं सत रज तम तीन प्रकार:।।२।।विष अमृत फल्या
अनेक:।बेद बोध्यो कहे ता रूप ऐक:।।३।।कहे क
बीर ईह मां नामां न:।कहि थी कूटे के वन करि जान:

॥४॥७४॥ ॥रे नर राम नाम हित नांही॥ बांधे धरम मरा
य के जांही॥टेक॥१॥ काहि सनान धात अरू मांझ॥
।क्या न्यया दादुर पांनी मांझ॥२॥ काया रत जे रूप रचां
हीः तिन कूं हरि सुपने नी नांही॥३॥ आसन तप तीरथ
व्रत इजा॥ उदे अज्ञान करम फल न जा॥४॥ कहे कबी
र दुस्तर है माया॥ कैसे तिरे विना राम राया॥४॥७५॥
॥ ॥जो मन कै है राम सनेही॥ तो विन जलि मंजन
निर्मल देही॥टेक॥ उपर के मल जल सूं धोवे॥ अं
तर के मल काहे न षावे॥२॥ सुमिरत राम सुपच ग
ति लहै॥ विन हित विप्र बऊत डब सहे॥३॥ कहे
कबीर चंचल मति तजि रे॥ रसनां राम नाम निज
न जिरे॥४॥७६॥ जिन नहीं जांन्यो केवल रांम॥
कहि कहि पचि पचि मूये निकांम॥टेक॥१॥ जेसे
भर चंदन कर नारा॥ संमृति वेद पढे व्योहारा॥२॥
आपुन पढि पढि लोक चितावे॥ घर दा के जायक
र उकूं जावे॥३॥ सा॥ सा॥ डि पेड जर वही॥ कहे क
बीर सकबऊ न पचही॥४॥७७॥ ॥ऐसे पांडत
कालि के आये॥ राम कहत जन विछुवन घाये॥टेक॥
॥१॥ स्वाद लुबध अैध धरम न पावे॥ हरि वासुर ह
ठि भोजन करवावे॥२॥ पढि गुन हि आगम क
हि देही॥ अवर को नार आपन सिर लेही॥३॥ बर
न अगर का बल करही॥ कर दीवाले कूवे परही॥

॥७॥ कहेकबीरबांनन्नदेस्यांनां॥पढिगुनिहरि
कामरमनजांनां॥५॥७०॥ ॥पंडितबादबदे
तेझूठमे॥ रांमकह्यांदुनीयांगतिपावे॥तौषांडक
ह्यांमुषमीठ॥टेक॥१॥पावककह्यांपावजौदा
झे॥जलकहेत्रिषाबुझाई॥भोजनकहेंन्नभजे
न्नाजे॥तौरांमकहेंदुनीयागतिपाई॥२॥विनवि
स्वासवेरासविनरांमकह्योक्याहोई॥मायाक
ह्याजोमायामिलेतौनिर्धनफिरेनकोई॥३॥न
रकेसंगसूवाहरिबोलेः हरिपरतापनजांने॥जे
कबहूंउडिजायजंगलमेः तौबहुरिनसुरतेंआं
ने॥४॥सांचीप्रीतिविषैमायासुंःहरिन्नगतन
सूंहासी॥कहेकबीरप्रेमनहीउपज्योःबांध्यो
जमपुंजासी॥५॥७१॥ ॥कहेकोंकीजेपां
डेछोतिबिचारा॥छोतिहीतेंउपनांसबसंसा
रा॥टेक॥१॥हमरेकैसेंलोहूंपांडेतुम्हारेकैसे
दूध॥तुमकेंसेंब्रांमनपांडेःहमकेंसेंसूद॥२॥छोतिछोतिकरतातुमहीजायेःगर्भवा
सकाहेकूंआयेः॥जनमतछोतिमरतहीछोतिः
कहेकबीरहरिनिर्मलजोतिः॥३॥७२॥ ॥
॥जोपेकर्त्तावारनविचारेः॥तौजनमतेतीनिडां
डिकिनसारेः॥टेक॥१॥जोतुंब्रांमनतोमैसूद्र॥
हंमारेलोहूतुमारेदूध॥जोतूंब्रांम्ननबम्ननीकाजा

होउ नहोने: तब उहहनंदकहांथो: ।टेक।।१।।जामेभरेन
संकटि आवे: नांव निरंजन जाको: अविनासी उप
जे नहीं विनसे: संत सुजस कहै ताको।।२।। लषचोरा
सी जीव जंत मे भ्रमत भ्रमत नंद थाको: ।दास कबीर
को ऐसो ठाकुर: जगति बिनांद रिकाको ।।३।। ८८।।:
निर्गुन रांम निर्गुन निर्गुन रांम जपहु रे भाई: अवग
ति की गति लषी न जाई: निर्गुन ।टेक।।१।। च्यार वेद
जाके समृति पुरानं: नव व्याकरन मरम न जांनां
कहै कबीर जाके जै है नांही: निजजन बेगे हरि की
नाही: ।।२।।८९।।   ।।कहा करु पिव बेगर नांहि
आप विचारि आपुन पे मांहि: ।टेक।।१।। कहि सत
जल तरंग है ऐसा:।को नैं विधि निरखर ते नहीं तें सा:
लूंन नीर जे से होय न न्यारा:। च उ दिसि अकासि र
ह्या रांम हं मारा: ।।२।। उ दे अस्त मदिय घट घट तै
र: । हरि उगति जांनि रांम हरि मै कबीर: ।।३।।९०।।
।।   ।। लो का जांनि न भूलो भाई: । षालिक षल
क षलक मे षालिक: सब घटि रह्यो समाई: । टेक:
।।१।। अला एक हि नूर निपाया: ता की कैसी न्यं
दा: ता हि नूर तें सब जग कीया: कुंण भल कुण
मंदा: ।।२।। ता अला की गति नहीं जांनी: गुरु गुड
दीया मीठा: । कहै कबीर मे भौ ग पाया: सा हिब अब
ट दी ठा: ।।३।।९१।।   ।।रांम मो हि तारि कहां
ले जैहो: । सो बेकुंठ कहो धो कैसा: । करि पसाव मुहि

[illegible]

गाहरा ॥मुसलमांनदुकरिहैः॥२॥

[illegible] ॥१॥टेकः॥ [illegible]

लहबहुरानाहीः देखैमलक जुनी हिलगांहीं॥

हरिगुनगाय अंगमैदीन्होः कोमःनोधनिखनि

समलकीन्हाः॥२॥ कहैकबीरइनमुलनांजु

गाः॥रांमरहीमुसबनिमेदीगः॥॥१॥१०॥ ॥

पढिबेकाजीबंगनिवाजा ९

करिमकाकबिलाकरिदेही॥
वाजा॥टेक॥१॥मनकरिमकाकबिलाकरिदेही॥उहांनहीदोजगनि
बो जनहारजगतगुरदेही॥२॥ रहिमानाइहांहीरांमा॥
स्तिमुकामा॥इहां
॥३॥विसमलतांममनरमकैंदरी॥पंचुंनभिजं
॥ दिवांनां॥मन
हायमबुरी॥४॥कहैकबीरमेनद्या
॥५॥८५॥
वामुसिमुसिमहजिसमांनां॥इहिविधिजीवका
मुलनांकरल्यो न्याव खुदाई॥इहिविनासे
नरमैंजाई॥टेक॥१॥सरजीवाआंनेदेहिविनासे
माटीविसमलकीता॥जोतिसरूपी हाथिआया॥
कहोहलाल क्याकीता॥२॥बेदकतेबकाजाबकु
रुगजोनविचारै॥सबघटिएकएककरि
जांनैं॥भी दूजाकरिमारै॥३॥कुकरीमारैबकरीमारै
हकहक करिबोलै॥सबजीवसांईप्यारे॥उबरोगेकिसबोलै॥
॥४॥दिलनहीपाकपाकनहीचीन्हां॥उसका
मरमनजांनां॥कहैकबीरभिसितछिटकाई॥दोजग
हीमनमांनां॥५॥८६॥ ॥याकरीमबलिहिम
मतितेरी॥टेक॥१॥ ॥काकएकसुरतिबफतेरी॥
धगगनमैनीरजमाया॥बहुतभांतिकरिनीरनिपा
या॥टेक॥१॥अवलिआलंमपीरमुलांनां॥ते
करिउपदिवांनां॥२॥कहैकबीर
रीमिफति ॥३॥॥
इजहेतबिचारा॥यारबयारबयारहंमारा॥
हेरिकवनकवनगुनतोरा॥कुनिकुनिम
॥ ॥

गनत्याग मनमोराः॥टेक॥१॥अंघदोगि नतउवार नही पारुः॥अस बिचारदासन हिन्दैछाडः॥२॥ कहैकबीरगुरु ग्यानकुअंजनाः॥अनजेपदमेरा मन मानां॥२॥८७॥ ॥कांहेकूंरीनलनीतुंकुमि लांनीः॥तेरेहीनालि सरोवरपांनीः॥टेक॥१॥जल मेउतपतिजलमेवासः॥जलमेनलनीतोरनिवा सः॥२॥नांतलितपतिनउपरिआगिः॥तोरहेतक हुंकासनि लागि॥३॥कहेकबीरजेउदकसमा नः॥तेनहीमुयेहमारेजानः॥॥८८॥ ॥ अबैउरुंउरउरहीमांनांः॥जबतेमोरतोरपहिचां नांः॥टेक॥१॥जबलगमोरमोरमेंकीनांः॥तबलग बत्रासजनईमतिहीनांः॥२॥कहेकबीरमोरीमैगा ईः॥अबदेरोमअबरनहीकोईः॥३॥१००॥ ॥ ॥मैनांहीनांहीकछुमेराः॥जेकछुआहिअबेह रितेराः॥टेक॥१॥ममताः एकविषेमूलाः॥चेत नदेषिकवनजमन्नूलाः॥२॥सुधाएकरसनिक टकटोरीः॥पीवेनांहिअलपमतिथोरीः॥३॥ स्वातिकसीतलमनकरिथीराः॥रेरेममैरमिर ह्याकबीराः॥॥१०१॥अबतेदसिबकुमेकछुनां हीः॥पंडितपढिअभिमांननजांहीः॥१॥टेकः॥मैं मेजबलगमेकीनांः॥तबलगमेकरतानहीनि ॥२॥कहेकबीरसुनकुनरनांहीः॥ ॥

कै मांही ॥३॥१०२॥ बोलन कां कहीयै रे भाई ॥ बोलत
बोलत तत नसांई ॥टेक॥१॥ बोलत बोलत बढै बिकारा
बिन बोल्यां क्युं होय बिचारा ॥२॥ संत मिलै कछु क
हीये कहीये ॥ मिलै असंत मूंनि गहि रहीये ॥ ग्यानी
सुं बोल्यां हितकारी ॥ मूरख सुं बोल्यां झखमारी ॥३॥ क
हे कबीर आधा घट डोलै ॥ भर्यो होय तो मुषां न बोलै
॥४॥१०३॥ ॥ का है कुं नर हारका जयकुं ॥ आर
धे नांव परम पद पायकुं ॥टेक॥१॥ नेनत राजु वेदन
पंडोरी ॥ रांम को नांम ज्यो केर कसी ॥२॥ रांम नांम
हीरां व्योहार ॥ कहै कबीर जिको आधार ॥३॥
॥१०४॥ ॥ बागर देस लवन का घर है ॥ तहां जिन ज
का दाझन का डर है ॥टेक॥१॥ सब जग देखुं कोई न
धीरा ॥ परत धूरि सिर कहत अबीरा ॥२॥ न तहां स
रवर न तहां पांनी ॥ न तहां सतगुरु साधु वांनी ॥
॥३॥ न तहां बिरष न तहां छाया ॥ माया रंग बिलास
उपाया ॥४॥ न तहां कोकिल न तहां सुवा ॥ ऊंचे
चढि चढि हंसा मुवा ॥५॥ देस मालवौ गहर गंभी
र ॥ डग डग रोटी पग पग नीर ॥६॥ कहै कबीर घर ही
मन मांनी ॥ गुंगै का गुड गुंगै ही जांनी ॥७॥१०५॥ ॥
अवधू जां निरालंब मन गाहर ॥ जो कछु षोजौ सो उम
ही पै है ॥ का है कौं नर मो बाहर ॥टेक॥१॥ मै मै मे टिस
च कुरि मुवा ॥ आपन मिलि दिढ कीजे ॥ अनहद स
बद गरीबी कीजे ॥ तहां जोगी मन धीजे ॥२॥ सत्यकरि

षपर षिमा करि जोलीः ग्यान बिभूति लगाईः ।। उलटि
पवन जराथ रि जोगीः पीगी सुन्य बजाईः ।। ऐटै नीत रवि
र वरवन मंडा घटै नीत रिम्यात समंदाः । घट ही नीतर ता
रामंडलः घट नीतर रवि चंदाः ।। ३ ।। नाटक चेटक भै फु
ल बाइन मे जोग नहोईः कहै कबीर रमता सुं देही आदि
न षोईः ।। ४ ।। अवधू जोगी जग ते न्याराः । मुद्रा निरति सु
ति करि पीगी नाद न षंडै धाराः ।। टेक ।। १ ।। बसै न गर मे सु
नीन देषैः । चेतन चौडै बैगाः । च ढि आकास आसन नही
छाडैः पीवै महारस मीगाः ।। २ ।। परगट कंथा मांहे जोगीः ।
दृपनि मे दिल जोवैः । सहंसा इकस ईस भै भागाः निहचै ना
के पोवैः ।। ३ ।। ब्रह्म अगनि मे काया जारैः त्रिकुटी संग
म जागैः । कहै कबीर सोई जोगेसर सहज सुन्य लो लाः
गैः ।। ४ ।। १०७ ।। ।। अवधू गगन मंडल घर कीजैः । अ
मृत झरै सदा सुष उपजैः बंकनालि रस पीजैः ।। टेकः ।।
।। १ ।। मुल बांधि सर गगन समांनांः सुषमना यौं तन ला
गीः । काम क्रोध दोउ न्या बलीताः तहां जोगनी जागीः
।। २ ।। मनवा जाय दरीबै बैठाः मगन भया रसि लागाः क
है कबीर जिय संसा नांहीः सबद अनाहद बागाः ।। ३ ।।
।। १०८ ।। ।। कोई पीवैरे रस रांम नांम काः जो पीवै सो
जोगीरेः । संतौ सेवा करौ रांम कीः और न दुजा भोगीरेः
।। टेकः ।। १ ।। चंद सूर दोय भाठी कीन्हाः सुषमन चिग
वा लागीरेः । अमृत कुपी सांचो पुरयो मेरी त्रिसनां भा
गीरेः ।। २ ।। और सबै रस फीका भयाः ब्रह्म अगनि पर
जारीरेः । ईसर गौरी पीवन लागेः रांम तनी मतिवालीरे
।। ३ ।। इह रस पीवै गुंगा गहिलाः ताकी कोई न

रे:।कहैकबीरमहारसमहिमां:कोईपीवैगापीवनहा
ररे:।।७।।१०२।। ।।रांमरसपाईयारेतातैबिसरिगया
रसऔर::।टेक।।१।।रेमनतेराकोनही:षांचिलेऊजिनभा
र:।।बिरछिबसेरांपंषीका:ऐसामायाजार।।२।।औरमर
तकयारोइये:जोआपाथिरनरहाय:।जोउपज्यासोबि
नसिहै:तौदुखकरिमरैबलाय:।।३।।जहांउपज्यातहांफि
रिचल्या:पीवतमरतलाग:।कहैकबीरचितचेतीया:रां
मसुमिरिबैराग:।।७।।११०।। ।।बिनतीएकरांमसुनि
थोरी:।अबननचायराषिपतिमोरी।।टेक।।१।।जेसेमंडला
ठुमहिबजावा:तैसेतैसेनाचतमैदुषपावा:।।२।।जेमसि
लागीसबैछुडावो:।अबमोहिजिनबहुरूपकछावो:।
।।३।।कहैकबीरमेरीनाचउठावो:।ठुमारेचरनकंवल
दिषलावो:।।७।।१११।। ।।अबमेरोनाचनिवारमुरारी
दीजेहरिपस्योजनहारी:।टेक।।१।।मैनाच्याठुमतालब
जाई:जनममरतबहुतदुषपाई:।।२।।आवागवनका
तोरोडोरा:।ठुमाराबलमरनन्जयामोरा:।।३।।कहैक
बीरसुनिमंडलधारी:।मतिऊठरांवनिकरोहमारी
।।७।।११२।। ।।कांकिपस्योआतममतवारा:पीवत
रांमरसकरतविचारा:।टेक।।१।।बहुतमोलिमुहगा
गुडपावा:।दैकसावरसकाजचवावा:।।२।।तनपाट
नमैकीन्हपसारा:।मांगिमांगिरसपीवैबिचारा:
कहतकबीरफाबीमतिवारी:।पीवतरांमरसलाग
छुमारी।।३।।७।।११३।। ।।हमारेरांमरहीमकरीमांकेसो
अलहरांमसत्यसोई:।बिसमिलमेटिबिसंभरएकै:
अवरदूजाकोई:।टेक।।१।।इनकेकाजीमुलांपीरपै

कंबररोजा पछिम निवाजा: इनके हरब दिसादे
व दिजह्जा ग्यारसि गंग दिवाजा ॥२॥ तुरक मसी
ति देहुरे हींदू: दुहुवां रांम षुदाई: जहां मसीतिदे
हुरा नांही: तहां का की ठकुराई ॥३॥ हीदु तुरक
दुवेरह दूटी: फूटी अरु कनराई: अरध उरध
दसुं दिसि जित तित: हरि रह्यारांमराई ॥४॥
कहै कबीरा दास फकीरा: अपनी निचल न
ई: हींदु तुरक का करता एकौ ताग तिलषी न
जाई ॥५॥११४॥ ॥राग गौडी॥ दुलहनि
गावहु मंगलचार: हम घरि आये हैं रांम भरतार:
॥टेक॥१॥ तनरत करि मैं मनरत करिहूं: पंच तत
बराती: रांमदेव मेरे पाहुने आये हैं: मैं जोबन
मैं माती: ॥२॥ सरीर सरोवर वेदीर चिहूं: ब्र ह्मा
वेद उचारा: रांमदेव संगि भांवरि लेहुं: धंनिधनि
भाग हमारा ॥३॥ सुरतेतीसुं कोतिक आये: मुनिय
र सहस अठ्यासी: कहै कबीर हम ब्याहि चले हैं:
पुरुष एक अबिनासी: ॥४॥ ॥हे नारी तुं लषी
ण बिहूंणी: सूतबरो बरल्याई हणी: ॥टेक॥१॥ या
सूत का मरम न पाया: माता का तिर जनम गमाया
जपणे रांमजी सुं षडऊंडकी नी: गुज माटै ने गाजर
लीनी: ॥२॥ कहै कबीर तूं लावालि तरी: ताते
रांमजी के चित धउतरी: ॥३॥

।।मरंजनजाकेकुलोजनकेहोत उजेरेरुनजाम
धरम ठहरे नहीं।।करन करनजामेउपजेकुल [illegible]
नकुकुलजैसो लागेजामेपेटकलेरै नहीं।।जाति
कोटो कीमजेसो कुलमें नकोहो होय।।जाति [illegible]रनजा
मेंरी [illegible] नहीं देवी।।जामेलो [illegible]
अरहेसु पिवेनकोकेऐसोकारज [illegible]रै नहीं।।
अपरसअंवरहींकेमहावरमो हिजीमनरअंवर
होहे।।कीमपरेकछुकी मनमावन कीमसुको मिन
कोहिलौहोहे।।कानजुबोनकही उछिजानमानो
रनचानानानकहोहे।।ईहहेजस कीमहिमाप
वहेतो नलेप विदेसन होहे।।२।।हिमरिजरम
गांमजीपिनावेगावात।।हिमरि पाछे हरजंग
हिनावे दसमापा।।हिमति लघगोवोमीह[illegible]म
फेंनपवाडे।।हिमति काजे जोगसिद्धआ[illegible]
वाडे।।हिमतिनकी कीमति बडाइ हिमतिहिप
हिविद्धडीये।।हिमतिसौं न दीपतिजावे हिमतिन
तांन छडीये।।३।। ।।सवईया।।अपनेउनमान
आगवानीकीजे।।सहजके पेडे पावन बदीजे।।दिल
देलगांमहुहरपुहचाउ।।दिकलीजी मे कितन
दोडाउ।।४।।चालवेकोऊंचतो हिलेना[illegible]
कोतके मकानाजे [illegible] मान।।१।।[illegible]कवी
नऐसानअसवार।।वेद कुतैब दुहुते न्यारा।।४।।

॥श्रीगणेशायनमः॥ कवित॥ बातन तै गोरष कबीर ग्यानत
त्व पायो बातन तै संत आरु महंत पुजात है॥ बातन तै भूत
प्रेत डाकन बुलाई बोलै बातन तै कारी नाग निकसत रात
है॥ बातन तै यार होत आर सैन हे जात करू बातन तै रंक
पत स्याह तै मिलात है॥ सम कहै यह बात बात बिना
कौन बात बात कर जानी यै तो बात करामात है॥१॥ सीषो
हैं सिलीमुष कबिलाई तना हेबद जो तस कूं सीष समर हत
गरूरमैं॥ सीषो सौदागरी सराफी यूं बजाजी सीषो लाषत
को फेरफार कह्यो जात कूं रमै॥ सीषो सब जंत्र मंत्र तंत्र कूं
सी षलायो पिंगल पुराण सब सीषलायो उरमै॥ सीषो स
बै बातघात नियटस यानो नयो बाल बोन सीषो सब सीषो
गया धूरमैं॥२॥ कयरा कोरो सजान है बरको हो सस तान
न्याव कू निबरजा नैरा जरात जानबो॥ लषणतो बतीसजा
नैरा गता बतीस जानै चूंपच तराई जानै महलन को मानबो
बाद जानै स्वाद जानै सगपन कूं साध जानै रतन परिष्या जा
नै रषन को आनबो॥ कहै तुरसीदास एतो जान
कौन काम बिना रघुनाथ जानै इ्रा सब जानबो॥२

॥कवित्त छपै॥ विघन मिनजे विजै मबलबलमंगल
कारी। नंदसुनंदसुनंदनंदजगत्रामैहारी॥ ब्री
मचैउ पुनीत वनीत कुमुद कमा स करना लै॥ सी
लसुसीलसुसेन नावनगर्तनत्रिपालै॥ लि
घमीपति पीननवीनन जनानंद नगीनेह
द॥ मो चित्त मति [illegible] नुति नित्यजहां रहैं त
ती नारायन पद पारषद॥२१॥ न्यायशास्त्र [illegible]
जगत ईस्वर वाद मीमांसक शास्त्र मांहि ब्रह्म वाद कहत
है। विसेषशास्त्र मांहि काल वाद है जु सिद्ध पातंज
लि शास्त्र मांहि जोग वाद कहत हैं। सांष्य शास्त्र मां
हि जु निरुक्त तिहुरम वा प्रकृति श्लोक शास्त्र मांहि अल
वाद गानो है। सुतंत्र कहत वेद शास्त्र मांहि न्यो वाद
तो के रघु नव ग्यान को तो वाद मैं कहत हैं॥२॥

॥ अथ श्री जोतिस्वरूप निरंजन देव परब्रह्मणे नमः॥
अथ सिद्धांतसार ग्रंथ लिष्यते ॥ दूहा ॥ सत चेतन आ
नंद मय महा प्रकास क आदि ॥ ग्यान रूप अरु गुन
रहित ऐसो जांनो ताहि ॥१॥ इच्छा जांनि स्वरूप देषि
यताहू निजरूप ॥ प्रियताकू माया समुझि सो फिर
जइ अनूप ॥२॥ महाप्रबल सामर्थ्य तें माया करयो
प्रकास ॥ बहु रूपो प्रक्रित स्कंनायतें उपज्यो त्रिगु
न बिलास ॥३॥ तब तें फैल्यो ब्रह्म यह विधि विधि
नानारीत ॥ बिना अनुग्रह ताहि कुनि सक्यो न को
ऊ जीत ॥४॥ ब्रह्म कह्यो है ब्रह्म तें इश्वर भिन्न प्रका
र ॥ निर्गुन सगुन प्रमान फिर ब्रह्म चल्यो ब्योहार ॥
५॥ ब्रह्म कह्यो करता सगुन ब्रह्म अकरता कीन ॥
निरविसेस सविसेस है कीने ब्रह्म नवीन ॥६॥ नि
गुन सगुन परि ब्रह्म नें कह्यो बोहत विस्तार ॥ ता
को कबहू होत न हि काहू तें निरवार ॥७॥ ब्रह्म
करी निजरूप लें ताहि अविद्या जांन ॥ आवरन रु
विक्षेप सक्ति दइ है मांन ॥८॥ ब्रह्म कह्यो आका
स कुनि ब्रह्म कह्यो है बाय ॥ तेज नीर अरु भूमहू
कीनी ब्रह्म बनाय ॥९॥ नाना कीने जीव भ्रम ताहू
मे है रीत ॥ ब्रह्म अंस अविबिंन है अरु प्रतिबिंब
नीत ॥१०॥ पंचतत्व ए ब्रह्म कित पंची कित फिर कीन

॥इहिविधिरचिभ्रम:बिस्वसबसतितांइवरदीन॥२२
॥स्वेदजअंडजउदिबिजरुकरेजरायुजजोनि॥भर
मरचंदिजीवकीइहिविधिचारुषांनि॥२३॥भरमकि
येएकरमसबकरिकीनोनिरधार॥करमलगायेमो
नसनओरनतेनिरवार॥२४॥करमजीवभरमनै
दोउकरेअनादि॥कोनअंचंभोकीजीयेजिनकेदे
भ्रमआदि॥२५॥त्रिविधिकरमकीनेभरमसंचित
अरुक्रियमान॥ओरप्रारबधतीसरेभ्रमकेबेल
निदांन॥२५॥भरमकह्योदेकरमबसयरतेजिय
कोआंनि॥करतभोगफिरतेरहतितयोदितयोयह
मांनि॥२६॥अंतहकरनकरिभ्रमनेकीयेभेदप्रचा
रा॥संकल्पविकल्पमनकरेनिश्चेबुधिनिरधा
र॥२७॥निश्चेजाकुबुधिकरेसोसुधिराखेचित॥
करतामानेआपकोअहंकारकीवृत॥२८॥इहि
विधिकरिभरमनेइंद्रीकरेबनाय॥श्रवनसुन
तदेषतडिगनपरसतपरससुतांय॥२९॥रसनो
रसहुभरमतेभ्रमतेआघ्रणघ्रांन॥करमेंद्रीकारज
सहितभ्रमदीकरेप्रमांन॥३०॥भरमकीयेजेकरम
हैतिनतेजगमेजाय॥मातपितासंजोगतेंपुत्रभयो
हैआय॥३१॥भरमपितामाताभरमभरमेपुत्रस्वरू
प॥भरमानंदबंधायमनभरमकहायोभूप॥३२॥

भरमगोत्र भरमेंबरन भरमधरायोनांव ॥ भरमआनंदित
ग्रिह भयो भरमआनंदितगांव ॥ २३ ॥ भरमनछत्रजन
म्योभलैभलेनवौग्रह जोग ॥ बोहतदोइगीआयब
लबोहोतकरैगो भोग ॥ २४ ॥ योतादेषेसकष भयो
चाचापूबतबात ॥ भइ यात्यावतषेलनेबहिनगोद
लेजात ॥ २५ ॥ नानीदेषसिहातमनमोसीबलबल
जात ॥ कुफीझुलावतपालनेझूलतहै दिनरात
॥ २६ ॥ दिनदिनअबवढतेचल्योत्यौंत्यौंभमह
साय ॥ पढिबेलायकदेषकेदयो विपकेहाथ
॥ २७ ॥ ब्रह्मचारीकेगुरुनिकटबैठ्योहैचितला
य ॥ जोजोसंथादेतगुरुसोसोपढितवनाय ॥ २८
॥ पढतपढतपंडितभयोमनमेंधस्योगुमान ॥
कोमोसोंअबवोलदेयहकरिरह्योप्रमान ॥
२९ ॥ पिताप्रत्रजांन्योपढ्योतबलेआयोगेह
गुरदछनादेविप्रकोअसकीनोबडनेह ॥ ३०
॥ पितसगाइप्रत्रकीकरिकेक स्योविवाह
न्यातगोतसबहीमिलेमनमेंधरैउछाह ॥ ३१ ॥
ब्रह्मभोजनताकेदयोदछनाफिरदीन ॥ बो
हतदयोबंदीजननिसबविधितेजसलीन ॥
॥ ३२ ॥ भरमषेलभरमेपढ्यो भरमकीयोब्रह्मच
र्ज ॥ ग्रस्थभयोअबभरमतेदेषोभ्रमआश्चर्ज ॥ ३३

ततेजिपापकूंदेषोनरमसंतापा॥४७॥क्रियाव
जोबनबंधोविद्या कोअभिमाना॥दानि
रकंदरमदासबकोउकरैग्रमांना॥४८॥कां
निसुनजसआपनोगरबधरितमनमांहि॥करत
नास्तिकरमपैअपबसलैकबुनांहि॥४६॥पु
कलत्रधनधामअरुसेवकसुजनसनेह॥इनं
तेस्रुबविस्वसमतिकरिजान्योग्रेह॥५०॥
कदिनासोवतकुतापस्योसुपनमेजाया॥देषैतो
कपुरषदेतिनयहलीयोबुलाया॥५१॥फ्रियेम
कहिलेचल्योआगेआपनहाथा॥चलेजातवनस
नमेंपुरसआहियदोउ॥५२॥चलेजातइनयहव
दीआगेनगरअनूया॥सबपुरवासीयुकहोइक
नदीकोउनसूया॥५३॥पवयोमाकूंसबनमिलय
मिलैसोल्यात॥महानगरअरुदेसकोताकोक
रियेराज॥५४॥तातेमनआनंदधरितोकोंदेहेराज
देसनगरपुरग्रांमकूंनिहयगयसकलसमाज॥
५५॥ऐसेसुनिकैमनविषेधस्योहरषउबाह॥क
हि॥५६॥जा
हि॥दोउक
॥५७॥तहांप

कैबरीजुराइकोषवटतामाहि
बेंवदानलावपरिचत्नपारकोजांहि ॥४४॥ बीचधा
रमेजबगयेतबतदछूडीनाव ॥ मदानवरजलजोर
मैतेसीदीफिरबाव ॥ ॥ ब्रह्मतयाकोजलविषै
लकरालागेपादाथ ॥ ताहिंगदहतेवल्योजल
प्रवाहकेसाथ ॥४७॥ बहतबहतलकराकहू
टापूलागेयोजाय तापरदेष्योमगरइकनिश्चैजां
न्योषाय ॥४८॥ मांनसदेष्योमगरनैपकरनअा
येधाइ ॥ गह्योजांनिअतित्रासतेतबजागेपाअ
कुलाइ ॥ ॥ जागेहबिनपकहैमिट्योतम
नतेत्रास ॥ रूपनजांनजांन्योयहेप्रबलत्नरमकोपा
स ॥ ॥ अैसेबीतेबहुतदिनरागकुषकेमाहि ॥ अ
बकीजेसाधनकछूजीबोनिश्चैनांहि ॥४९॥ जा
सेछूबीतिनकहीमनहूकस्योविचार ॥ बांनप्र
स्थअबकिजीयेयहकीनोनिरधार ॥५०॥ देषिम
हरतपुत्रकोंथाप्योअपनीठौर ॥ कुलमारगकों
गाडिकेजितमनथारेअौर ॥ ॥ सजनसनेहीसों
कह्योयासोंकरीयोप्रीत ॥ ताहीविधनिरबाहीयो
जोमोसोहीरीत ॥५२॥ यहकहिकेघरसोंचल्यो
लइनारज्यासंग ॥ जाइकुटीकरियासकोरहेनि
कटतटगंग ॥५३॥ स्नानकरतनितनेमप्रतिनि

बादेतवनाय॥मनलगाइहूजेरिषनकथासुनन
हूजाय॥५६॥कथासुनतरोवतरहेरोऊरीऊमन
मांहिायदेसोचमनमेकरैकहाकहूंकहानदि
॥५७॥सोचकरैसंतापसहबतश्रतिसकुचात॥
कासौंकहूजायकेश्रपनेमनकीबात॥५८॥कौ
मोसौंकहिहैदइमेरेहीतकीज्यय॥जातेयाजिय
देहकीपरमनलाइहोय॥५९॥सोचतहीकेते
कदिनाश्रैसेगयेविहाय॥कथासुनैदरसनकरै
नितउठिश्रावेजाय॥६०॥कथासुनतइकदिन
सुन्योसाधनकरियेजोय॥ग्यांनपायतिश्रेवो
ऊरश्रावागवननहोय॥६१॥तबसुनउयोविनै
करिसाधनहइवताय॥कहियेनाकेविधसहित
जेहैमुक्तिउपाय॥६२॥सुनतउमकोमांनिगुस्क
हियेहोयक्रिपाल॥तुमविनश्रैरउपाइनहिकाट
नकोभ्रमजाल॥६३॥विनैवचनसुनिहुनिकह्यो
चितकैांकरिविश्रांम॥साधनसबतीकैकहूंतिन
तैकैहैकांम॥६४॥प्रथमजमरुफिरिनैमुकरिश्रा
सनजोसुषसाध॥प्रांनायांमहिकरिक रैप्रांन
श्रपांनेबाध॥६५॥बौहैस्योप्रत्याहारकरिसवहि
सतैमनल्याइ॥मनथिरसोइधारनाश्रैरनकितहूजा

ई॰ धार्यौमनजोएकदिसथर्यौरह्यौतिहिवेर॥
सोइनिश्चैध्यांनहैमनकौचालनऔर॥६७॥ध्याताध्या
नरुधेयजवनएकरसजांन॥जहांनासनासैनहीं
तांहिसमाधिवषांनि॥६८॥याहिजांनिअष्टांगतंय
हैकहावैजोग॥याकेसाधैहोतनहिंकिरिप्रपंच
कौभोग॥६९॥एतनीकैसाधिकरिमोसोकहिये
आइ॥विधिपूर्वतौकौनकरिकहिहैध्यांनरुकना
इ॥७०॥ऐसेसुनिमुनिवचनतबकरिचल्यैपुनो
म॥साधनविधिसुनिमनधरीसाधौआवैजाम॥७
१॥आइकह्यौनिजनारिसौकियाकरीमुनिमोहि॥
स्वागतिनिअतिथ्यहितयहसबकरनोतोहि॥७
२॥यहकहिरह्यौएकांतकैआसनथर्यौविनाइ॥
विधसैाजमअरुनेमकौताःपाकरनवनाइ॥७३॥
सुरैनयावतऔरकौताहिअहिंसाजांन॥असतव
चनबोलततन्हीसतिकरिह्यौप्रमांन॥७४॥विनदीने
कछूलेततनहीमनआस्तेयविचार॥रह्यौनारिज्यासं
गतजिब्रह्मचर्जचितधारि॥७५॥ममतात्यागीसक
लविधिअपरिग्रहसोआदि॥इहिविधिपंचप्रका
रजमकरकह्योज्योआदि॥७६॥चितइहीकोसुध
करैरुचितयहप्रमांन॥त्रिश्नात्यागसंतोषयह
तपऊप. वासविधांन॥७७॥करतअध्यातमपा

वनितिस्वाध्याययह जांनीं ।। सिवचिंतनि बिन बिन
करत आहिय देह निधांतिं ।।७८।। ऐसैयां बहुप्रकार
सोसाध्यौ नेम वनाइ ।। मुनि सकमरहु करि मन विषैंबे
वे आसै जाइ ।।७९।। आसनबैठि सकचित्तकै इरक
कुंभक करे च ।। प्रांनायाम प्रकार तेंकरत पवनके
पेच ।।८०।। विषै विश्वतें रोंकि कैं इंद्रिनको संचार ।। म
नलगाय लग्यो करत विधिसों प्रत्याहार ।।८१।। मुनि
सुरति धरि मन विषै मन सुरति मैं धारि ।। इहि विधि रा
षी धारना दृढ चपलता डारि ।।८२।। जिहि इछ जब धा
रना तबनां हिन जगत्तांन ।। मुनि सुरति यह मन भयो
ऐसे लग्यो ध्यान ।।८३।। सुरति मन अरु ज्ञान नैंतीं
नो भय विलाइ ।। इहि विधि रह्यो समाधि मैं मुनि प्रता
पते जाइ ।।८४।। बीतिया हि समाधि मैं केतिक दिन
अरु रात ।। षांन पांन अरु नींद बिनु ऐसैं काल बिह
त ।।८५।। ऐसैं सुनि वाकी दसा मुनि आये या पा
सा ।। आय जगायो जतन करि तब भाष्यो आ नास
।।८६।। सिथल अंग तन षीन तें मुनि कों बंदनि कीन
।। तब मुनि धन्य या सु कह्यो लहि समाधि मैं लीन ।।
८७।। तब मुनियासों यौं कह्यो अब तुक रि सं त्या
सा यह निश्चै करिजांनि मन कै देग्यांन प्रकास ।।
८८।। ...

होवाकउपदेसकरिलैबैठोआपपास॥८१॥त
बगुरुवासौंयौंकह्यौप्रथमआपकौंजांनि॥तनइं
द्रीगननाहितूंजाहिरह्योहैमांनि॥८२॥मैजाग्र
त्तंकद्त हैसोमतिजानैदेह॥इधीतैरत्नहाय
हतिश्चैकरिलेह॥८३॥मनतैरौत्वमननहीबुधि
तैरीतूजांनि॥चितहूतैरौत्वनतातन्यारोहैमांनि
॥८४॥इनसबतैंतूआपकूंन्यारौकरिकैजांनि॥
चितजडकोसंजोगजोताहिआपकरमांनि॥८५॥
ऐसौहूतूआपकौंजिनसमुझैंकनिवात॥गये
अविद्याअंसकैंतूस्वरूपवहरात॥८६॥मैंकी
नौंमैंयौंकरौंमैंकरिहूंअबताहिदेखिअविद्या
अंसतेअहंकारयहयाहि॥८७॥अहंकारइ
हिरीतिकौंयहतेरौत्वनांहि॥करताचेतनआ
पकौंयहैसमझआपमांहि॥८८॥कह्योसमुझिस
बविश्वकौंमिथ्याकरिमनमांहि॥एकआत्मा
अतिरिक्तऔर दूसरौनांहि॥८९॥नानाविधअ
सतजगतहैतअविद्याताहि॥ईश्वरजीवअभेद
तेनासअविद्याआहि॥९०॥देखअविद्यासतनही
नहीअसतहूजांन॥नांहिकहौवहसतअस
तअनिरबचनतीमांनि॥९१॥जांनिअविद्यारू
पहुमपरञकासतैनास॥याहिदिखावतताहि

सतजानौब्रह्मप्रकास॥२७०॥औरअविद्याकीसक्ति
द्वैप्रकारतेजानि॥आवरनअरुविछेपहैनामदोउ
परमान॥२७१॥जातेकछुनासैनहीकहैआवरनि
ताहि॥आनभासभासैकछूतबविछेपस्वआदि
॥२७२॥रीतअविद्याकीकहीलखनरूपसमेत
उपजाईउपजीनहीनईविश्वकोहेत॥२७३॥
ग्यानभयेतेहोतहैयाकोनासप्रमान॥याहिअवि
द्याकौसमुझिनिश्चैहैअग्यान॥२७४॥ग्यानभये
अग्यानकहिरहैकहांकिहिठौर॥निजस्वरूप
समुझोतबैनाहिदूसरौऔर॥२७५॥तेरोहीसब
रूपहैयहनिश्चैकरिजान॥नोनाविधिनासत
तऊअपनौरेमतिमानि॥२७६॥ईश्वरमायाते
भयोसोमायाकरिहरि॥ईश्वरमिटिसोइभयोक
तोजपहैलैमूर॥२७७॥ऐसेहीयहजानहूजीव
अविद्याकीन॥जीवकहलतेभिन्ननहिभयेअवि
द्याहीन॥२७८॥मिटैअविद्यादेषहुमायाको
नहिमान॥एकयतैमेतबकहैचाहिकौनप्रमा
न॥२७९॥ऐसेहीनिजरूपकोभलेसमुझिअ
घमाहि॥जेजेदेषततेसबैलोतेन्यारेना

तातेसगरेरूपपावाकोंजांतिस्वरूप॥२२२॥वेदेव्यापव
कवेदेवेदेपवकदेजांति॥संध्याकोसो॥कनदिइजे
नुयदनांदि॥२२३॥नांनाविधसोदेवकदासबकदि
सोकादि॥डिस्यकदादरसनकदाकदिडिष्टाको
दि॥२२४॥कदनासभासेकदाकदांनासत्रवका
॥जदांस्वरूपनिजज्यांतकोहरनजोतिप्रकास॥२
श्रैसेकहिके॥योंकह्योश्रवननयोंसबतादि॥कवि
नीकेतमतनकरिदसात्र्रापनीमोदि॥२२५॥तुमउ
नापकीनेंमननिनयेतिदिकाल॥विनांअनुग्रह
नकेकोकाटेभ्रमजाल॥२२६॥कहोंबातहूआपनी
फनियेप्रभुचितलाय॥क्रियातुम्हारीतेंदसामोकों
नइजुत्रा या॥२२७॥नरमहतनरमेंपीतामातानर
स्वरूप॥नरमनारज्यांदितसदितदेष्यो॥नरमअन्न
॥२२८॥नरमगोत्रनरमेवरननरमकदावेजाति॥
नरमनांवलेलेकदतजेसेजादिसकदाति॥२२९॥श्र
नुवारीकेनरमतेभ्रमकीनोंगुरुमांनि॥यदनयदाव
दारहृयदोकभ्रमजांनि॥२३०॥नरमपदोघरल
नरमनरमधर्योत्र्रभिमांनि॥नरमओरतेंआपकुजा
नतअधिकअमांनि॥२३१॥नरयदेमैंआइकुनिकि
नरमविवाद॥नरमकदाइनायका॥नरमकद
नाद॥२३२॥नरमघ्यापकुलदेवको॥नरमभेद

स्यच्चार॥नजाप्रतिमा॥नरमप्रनरमैपूजनदार॥१२३॥
नरमदो निवृति अद नरमनरमैतीरथजाति॥नरम
स्नानउपवासह नरमनेमनितधात॥१२४॥नरम
सक्रितडक्रित नरमनरमंजो निविस्वास॥नमते
चादतफलनरमनमतेमानतत्रास॥१२५॥नस
जाग्रतनरमैसकपननरमसकथोपतञ्चादि॥दितौ न्र
मयदाकदी विवेकदायोकोहि॥१२६॥नर
मञ्चापहमा निके नरमधरीयदचादि॥नरमप्र
तिष्टाजगतमैसकनिनमधस्रौउबाद॥१२७॥नरम
श्रासत्रिष्णा नरमनरमडुत्रपरवार॥सजनसनेह
ह नरमनरमपरसपरप्यार॥१२८॥नरमलानेहान
नरमनरमसोकउवाद॥नमउपायनरमैजतन
नरमकरनतिरवाद॥१२९॥नरमवादिउ हिमनर
मनरमहारअरुजीत॥नरमचलनबेवननरमन
रमैरीतकुरीत॥१३०॥नरमदेस नरमैनगर नरम
आदिसबगाव॥नरमबसेअरुअतबसे नरमैवा
वडुकवाव॥१३१॥नरममंमतमननमैधरैनरमनिवा
सीलाग॥नरमअनंदितकैरहे नरममानिके नेग
॥१३२॥ उ
यकपककौ नरमतेदेषोकरतअदेष॥

मस्कदेसविदेसहू नरमैदेसाचार ॥ परेनरमबसक
रतपनांना विधव्योहार ॥१५४॥ नरमकुटंबपरि
वारसबनरम ग्रिहस्थावास ॥ नरमउदासीनरम
प्रबानप्रस्थसंन्यास ॥१५५॥ पंचअग्नितापननर
मन्रमग्रीषमरितिमांदि ॥ न्रमवरषामैबैठनोस
दनमैदविनबांद ॥१५६॥ नरमसीत रितिमैति
सान्रमपैठनजलबीच ॥ ध्रमपांनन्रमतेकैग्या
गिबारिकैनीच ॥१५७॥ नरमकरितयरिदबिना
न्रमबैठनइकठौर ॥ न्रमतेवाढेनैमुग दिलदेत
न्रमकेत्योर ॥१५८॥ नरमबाङऊरधकरैनरम
लैनव्रतमौन ॥ नरम डिष्टऊरधधरीन्रमतेबच्यो
स्कैान ॥१५९॥ नरमत्यागअन्नकोकरतनरम
करतपैपांन ॥ न्रमदीयदनिस्चैकस्योइनतैमुकि
प्रमांन ॥१६०॥ जमजोपांचप्रकारकोसोउनरम
प्रतीत ॥ नैमुकरनफिरपंचबिधयेहनरमकी
रीत ॥१६१॥ आसनप्रांनायामहू पमुनिनरमप्र
कार ॥ नरमैदिसदिसरोधिन्रमनरमैपत्याहार
॥१६२॥ नरमधारणाध्यांनन्रमनरमैआदिसमा
धि ॥ जेतेसाधनतेसबै देकेवल न्रमव्याधि ॥१६३॥
॥ साधनअकरनकरनडकनिपसबनरमकलो
ल ॥ चितथिरराषनअचलकरनरमैफोलअफोल ॥

॥१५४॥साधनकरिफलचांहतैाअनिकीनैप्रतिवा
दा॥भ्रमतैकुनिप्राक्षितकारैकर्मविपाकदिषाय
॥१५५॥करतकरममनमैधरैस्वर्गादिककोभोग
विकलभएजांनतनहीग्रसैभ्रमकेरोग॥१५६॥
सकलपदारथअनितएकहूकहैहैनित॥नित्या
नित्यविचारजोताकोभरमनिमित्त॥१५७॥स्वरूप
मानतभ्रमतैभ्रमहीतैउपदोय॥परमानंदस्वरू
पकहैभ्रमकीनैपदोय॥१५८॥भ्रमकीनैायह
विस्वहैतामैभ्रमविलास॥प्रबनभ्रमकहनोभर
मभरमैहरतत्रास॥१५९॥भरमैगुरुसिषऊभर
मभरमैवाकिंविचार॥हवैपवमस्यातहभ्रम
श्रादिनिरधार॥१६०॥श्रवनभरममतुनोभरमनि
दध्यासनभ्रमरूप॥सद्यरथहभरमैलबनाभरम
अनूप॥१६१॥भरमजीवइस्वरभरमभरमकरन
हेएक॥भरममइएसबगनोजेहैहैतअनेक॥१६
२॥नदित्याधिइस्वरविषैअरुनादिनविषय॥
नेदबुधिाकत्वमैभरमकरैआवेप॥१६३॥जो
नयाधिइस्वरविषैतोकोसकैनिवारि॥नदित
याधिनिरुपाधिमैभरमैलेऊविचारि॥१६४॥इ
स्वरतोएककहैअरुमानतजीवअनेक॥पुनि
होइगीतबकहैहैजबकैहैएक॥१६५॥

धिहोउ मिटै मुक्ति कहै तब होइ ॥ एक जीव से सा
पदी इस्वर कहा रह्यो सोइ ॥ १५६ ॥ एते जीवन की मुक्ति
इहि विधि कैसे होइ ॥ कासौं करीये एकता इस्वर
नां हिन होइ ॥ १५७ ॥ नहीं उपाधि इस्वर विषे नां हि
नता हि विषय ॥ निरविसेस इस्वर सदा निरविका
र निरलेप ॥ १५८ ॥ निति सकल अरु गुन रहित केव
ल बोध प्रकास ॥ ताकौं कैसे होइगौ जीव जीव सं
ग नास ॥ १५९ ॥ यहै निति इस्वर यहै यहै ब्रह्म निर
धार ॥ व्यापय है व्यापक यहै यहै अनंत अपार ॥
१६० ॥ कहित यादि सु उपाधि जे ते हो आहि अगं
ना ॥ परे अविद्या जाल मै तिन यह कस्यौ प्रमांन ॥
॥ १६१ ॥ अप अपने आरोपते इस्वर कस्यौ सो दो
ष ॥ तिन कौ अपनी भूल ते होनो ना हि संतोष
॥ १६२ ॥ सगुन दोष इस्वर विषै जे मांनत अग्यान
ते सदोषय या विस्व कौ सांचै करत प्रमांन ॥ १६३
॥ जीव भरम इस्वर भरम भरम उभै मै दोष ॥ भरम
मिलावन होइ कौ भरम गयै संतोष ॥ १६४ ॥ कन
न भरम कहनौ भरम भरम अरथ अरु बात ॥ मांन
न अनमांनन सबै भरम साथ प जात ॥ १६५ ॥ स
कल विस्व भासत जु तौ ॥ नांना विधि बहु रीत ॥
सो सब अब वपु कै भयौ कितव कहा इ प्रतीत ॥ १६६

देहभ्रमछडीनरममनबुधिनरमसरूप॥अदंबात्म
रुचितनरमभ्रमन्यारौमैरूप॥२६॥गतनितहार
आनंदमयग्यानरूपस्वप्रकास॥नितापरतर
हैसंबकरिजांनैतास॥२७॥पुरुषार्थीयं
हैसिषकहीयकोमांन॥अदंब्रह्मधीपविनापर॥
नंदनिरवांन॥२८॥सर्वपद्योमिलगयेसंध
मांन॥अदंब्रह्मधीपैविनापरमानंदनिरवांन॥२९॥
कोमांननग्यानमांननाच[illegible]
धीपैविनापरमानंदनिरवांन॥३०॥कंद[illegible]
मांन[illegible]
रमानंदनिरवांन॥३१॥[illegible]
[illegible] अदंब्रह्मधीपविनापरमानंद[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

बांन ॥२७६॥ कासौ को अपरोछ देका को अनभव ष्यां
ना ॥ अदं वस्तु षोषे विनां परमानंद निरबांन ॥२७७॥
अदं सब्द उच्चार मे षोषै कौसी रीत ॥ दैतो नां दोइ स
रीये कहु होत प्रतीत ॥२७८॥ कह्यौ जदां लौं कदि
सवैचार ह्यौ सब्द संचार ॥ अनबोले कैयद कह्यौ नां
दिन वारापार ॥२७९॥ मनमे मुनि स्फषपायकै कह्यौ
तो दिसा बास ॥ ज्यौ कौ त्यौ तौ कौं भयौ पुरन ग्यांन
प्रकास ॥२८०॥ मुकदसा तेरी स्फनै नयौ परम स्फष
मोदि ॥ निश्चै मे जांन्यौ अबे मिट्यो भरम तें तो दि ॥२८
१॥ भयौ परसपरयास मे परम पवित्र विचार ॥ सिद्धं
तसार या ग्रंथ को धर्यौ नांव निरधार ॥२८२॥ सतै
सिद्धांतसार कौं जो नीकै मन ल्याय ॥ मुक्ति दौंन कौ
तादि फिरि करनैनां नादि उपाय ॥२८३॥ कीनो ज
सवंत सिंघ यद आत्म ग्यांन विचार ॥ कह्यौ कहं
लौकदिसकौ जाकौ नां दिन पार ॥२८४॥ इति
श्री महाराजाधिराज श्री जसवंतसिंघजी कृत सिद्धांत
सार ग्रंथ संपूर्णं ॥ ॥ श्रीरस्तु ॥ ॥ श्री कल्याणमस्तु ॥
लिषतं वोजा [illegible] दत श्री आंबेर मध्ये चैत्र मासे सं० १९०१

श्रीमातेनमः॥ ॥सिधांतबोध लिष्यते॥ दोहा॥ प्रकारकरिब्रह्मकौंबंदोगुरुकेपाइ॥ कीजे ए कृपादयालकेजातेंसंसेजाइ॥१॥ सिष्योवाच॥ मे यहप्रस्तावबोहतवेरसुन्योहेपमेरोसंदेहनाही मिट्यो॥ तातेमेंतुमसोंइहैवेंदोजुबुधिसोंजान्योजा इहेकिब्रह्मसुबुधिजानीजाइहै॥ औरसाइहमेंसु न्योहैजुब्रह्मबुद्धिगम्यनाही॥ अरुयहीसुन्योहैजु बुधिजडहै॥ सुयहअरथक्रिपाकरिमोकोंसमु झायकहीये॥ गुरुवाच॥ यहजुतेमोसोंपूछीसुयह वडीवातहैअतिसूक्षमहै॥ तनीकेमनलगाइसुनि यो॥ औरजहांआसकाहै॥ इतहांफेरपूछीयो॥ अव सुनितंजुबुधिकूंजडकहैहैतातोपेंग्यानसोंअ रुबुधिसोंभेदकियोजाइगो॥ सिष्योवाच॥ कबुमे रेमनमेंसेंआवेहैजुग्यानजुहैसुतौब्रह्मस्वरूपहै तामेंतोअविद्याकोंअसनांहीं औरबुधिमेंतोअविद्या कहीहैऔरमनहमेंआवैतातेंबुधिजडकहीजा यहै॥ गुरुवाच॥ तसघुज्यातेसैनाहीबुधिहैसोबो धहैतबहैषिकबोधमेंअरुग्यानमेंकहाभेदहै॥ कौ किग्यानकारणहैअरुबोधकारजहै॥ ज्योंजेवे ओजलअरुघलतोजलबंध....

जोचल्यौहैतौऊजलपतौनगयौ॥ तैसैहूग्यांनअरु
बोधजांन॥औरअविद्याजुहैसुइनतैभिनहैअविद्या
विषैमैंहैविद्युकहैहै किबादरचैउमाकैआडैआय
।सुकबूंवउमाकैआछैनहीआयौ॥दिष्टकेआंकेअ
वैहै॥तैसैहीजांनजुअविद्याकबूबोधिमैनांहीमि
ली॥अविद्याविषैमैंहै॥औरादेषिकिग्यांनीकीबु
धिकीकौनअवस्थाहोइहै॥ग्यांनीजुहैसौविस्वमि
थ्यासमुझैहै॥बोधमिथ्याक्योंकैसमुझै॥औरविस्व
मिथ्यासमुझौतबविषैताजतहैतैसबविस्वमैंहै
औरअविद्याहूविस्वमैंहै॥तातैविस्वमिटै॥विषैमि
टै॥औरविषैमिटैअविद्यामिटैतबडिस्यकबूनर
ह्यौतबग्यांनकौ॥बोधकौनकौंहोइ॥तातैंयुजां
निकिडिस्यनरहै॥बोधग्यांनस्वरूपकैरह्यौ॥और
तूजोयेजांनैकिशास्त्रमैंकह्यौहैजुब्रह्मबुधिमैंकौ
केआवेसअैसैनांहीकह्यौहै॥किबुधिमैअविद्या
हैतातैब्रह्म न आवैसतौतूंसमुझिअैसैकह्यौहै
जुबुधिज्यौंविषैकौंगहैहैत्यौंब्रह्मकौंनांहीगहैहै
॥कैयौंजुविषैमैअविद्याहैतबडिस्यहैऔरब्रह्म
मैतौअविद्यानांहीतातैडिस्यनांहीं॥ब्रह्मग्यांन
॥अरुबोधहूग्यांनस्वरूपहै॥यहइति

संदेहकौरिजांनि औरबुधिमैजुब्रह्मनांहीआवैहै

सोऽपैनेत्रविस्वकोदेषैहै।पैअपनपौनांहीदेषति।औरह
ऽपांतअरूबोधपनिसंदेहकरिएकहोऽज्ञानि।पैब्रह्मकेअ
नुग्रहविनांबोधनहोइ।यहप्रस्तावतोमै तोसोंनी
केवनाइकह्यौ॥औरोकछूसंदेहमनमेआवैसोपूछिये
॥सिष्योवाच॥सहअसत्रअरथइनकेप्रस्तावकोनिर
नैमेरैमनमेकछूनीकैनांहीभयो॥क्योंकिकोऊकहै
हैसहअसत्रअरथएकहै।औरकोऊकहैकिसहअस
अरथ [illegible] न्यारेन्यारेहै।गुरूवाच॥सहअसत्रअर
थजैसैतकह्यौतैसेहीहै।एकहूहैऔरन्यारेन्यारेहू
है॥सिष्योवाच॥यहतोमैयाहीतैपूछतहौंएकहैसो
कौनप्रकारतैहै।औरन्यारेन्यारेहैसोकौनप्रकार
तैहै।यहप्रसंगमोकोंकृपाकरिसमुझाइकहिये
॥गुरूवाच॥सहअसत्रअरथएहैभिन्नहैसोयामैं
तिहै।एककोऊवातकहैहैताकैश्रोताअनेकहै।प
नएकवातकहीअरूश्रोताजितेऊतेतिनअपनेअप
नेचितमेअरथजुदीजुदीन्यांतिसमुझ्यो।तोहेभिजअ
रथअरूसहएकहै।तितोजुदेजुदेकाहेतेसमझ्यो॥
तोतऐसेसमुझिकियानोतिसहअसत्रअरथन्यारे
न्यारेहूहै।औरपरमारथविषैसहअसत्रअरथएकहू
है।क्योंकिवेदांतकहैहैकिसहअसत्रअरथएकहै

रहै॥ अरु परमारथके सब्द अरु अर्थ कहै॥ न यह ऐसे
है कि जैसे घट पट सब्द है॥ इनको अरथ कहियेहु
घरा अरु कपरा देषियतु है तो सब्द अरु अरथ जुदे
हैं॥ पै सब्दको अरथ यह नांही सब्दको अरथ वस्तु
है॥ क्यौं कि घरा अरु कपरा॥ तौ मायिक है मिथ्या
है॥ तो अर्थ मिथ्या कैसे होइ॥ अर्थ तो सांचो हो
इ॥ अरु सांचो तौ तब होइ॥ जब सब्द वस्तु होइ॥
यह प्रसंग तौ मैं तौकौं समुझाइ कह्यो॥ और ही क
हु आसंका होइ सो कहीये॥ सिष्यो वाच॥ जीवको
स नियै है कि आवरन है और यह बात सब कोऊ
कहै है॥ अरु सब कोऊ मानै है॥ ताते आवरन तौ
जो नियै है कि है॥ क्यौं कि आवरन जो न होइ तौ अ
ग्यान क्यौंकै होइ॥ पै यह आवरन कौन विधि है
या आवरन कौ संदेह तुमही तें मिटै॥ ताते यह प्र
स्ताव कृपा करिकै मोकौं नीकै समुझाइ कहिये
गुरुवाच॥ यह प्रस्न जो तैं मोकौं पूछ्यो॥ एकवार
यह प्रस्न मैं अपने गुरु सौं कर्यो हो॥ तब गुरु मोसौं
कही कि शास्त्र मैं तौ आवरन मात्र कह्यो है॥ और प्र
कार तौ विसेष नांही कह्यो॥ तब मेरे हू मन मैं संदेह
मिट्यो न हो रह्यो हो॥ और सास्त्र हू बोहत देषे पै य
ह प्रस्ताव कहू नीकै करि न देष्यो॥ और इस्वर गु

ग्रहनेमयाको निरने कियो है। ताही विधिहूं तो सो कहूं हूं सावधान होइ सुनिये है। देषि आवरन को एक बेर चाहिये बिनां गेरे आवरन को फिर कहो जाइ। तब विचार तें प्यार गेर मन में आवे है। तिन में एक तो जहां सुध ब्रह्म को प्रतिबिंब अविद्या विषयें है। एक बेर तो आवरन कीयहूं है। आरु एक जीव के अरु मन के बीच है। दुसरी गेर आवरन कीय है। और एक मन के अरु इंद्री के बीच है। तीसरी गेर आवरन कीय है। और एक इंद्री के अरु विषै के बीच है। ऐसे प्यार गेर है। तिनमें देषिये तौ सोपतब कहो। जहां सुध ब्रह्म को प्रतिबिंब अविद्या विषयें है। तहां तो आवरन न चाहिये। क्यों कि तहां जो आवरन होइ तो अग्यान कैसे मिटै। पानी को ऊ होइ हीनाही तौ यह निसंदेह जानो कि उहां तौ आवरन नाही॥ और जीव के अरु मन के बीच है। सू जान्यो जात है कि आवरनाही। क्यों कि जो बात मन लगाइ देषी अरु सुनी सो तत काल समुझी है। और देषि मन के करज कहु जीव सों जुदे जाने नाही जात है। तातें हूं सु निसंदेह जान्यो कि आवरन नाही। और इंद्री अरु विषै के बीच है। सू जान्यो जात है ...
हारता.

सो तातें जांन्यो जात है जुहां हू आवरन नांही॥ और
मनके अरु इंद्रीके वीच ह्यां जांन्यो जात है कि आवर
न है॥ क्यों कि॥ एक बात को एक कहै अरु न समझे॥
और एक बस्तु दिष्ट आगे हती अरु न देषी के कछु
और को और समझ्यो अरु और को और देष्यो तो त
ब जांनि कि मनके अरु इंद्री के वीच आवरन है॥ औ
र आवरन जु है सो अविद्या को है॥ और एक आव
रन अरु विछेप अविद्या की सक्ति है॥ ताते निसंदेह जा
न्यो जात है कि आवरन इहां है॥ सो यह आवरन ईस्वर
अनुग्रह ते मिटै॥ यह प्रसंग तो मैं तासूं नीके समुझ
इ कै कह्यो॥ और एक संदेह होइ तो पूछीये॥ सिष्यो
वाच॥ ब्रह्म जु है सो अपार है ताको वेद हू कहै है कि
अपार है॥ साध हू कहे है कि अपार है॥ और जांन्यो
हू जाति है कि अपार है॥ तो ब्रह्म की अपारता में तो
संदेह नांही॥ पै मनमें यह संदेह है कि ब्रह्म अपनो॥
पार जानै है कि नांही॥ सो यह मोको क्रिपा करि समु
झाइ कहिये॥ गुरु वाच॥ यह बात बोहत कठिन
क्यों कि जो कहिये है कि ब्रह्म अपनो पार जानै है
तो तो पार आवै है अरु जो कहिये है कि ब्र
ह्म अपनो पार नांही जानत है तो अग्यानता आ
इन दोऊ उतरन में तो एक को नांही बन
त है और बिन बने तो उतरके संदेह रहि जाय॥ ताते

यौंजांनिकैंब्रह्मजांनतहैकिमोकौपारनांही॥तबदे
षिया रस्तनआयौ॥अरुअग्यानकृतनआयौ॥यद
निसंदेहजांनकिब्रह्मग्यानस्वरूपहै॥अरुअपार
हैयहप्रसंगतौमैंतौसौंकह्यौ॥औरसंदेहहोइसकु
बीयै॥सिष्योवाच॥यहप्रपंचजुदेषीयैहैसुतौनिसंदेह
जांनीयैहैजुपंचभूतआत्मकहै॥पैयहसंदेहहैजुये
पंचभूतकौनभांतिमिलेहैं॥मिलबेकीभांतिहै॥एक
तौभांतियहहैजुएकवस्तुमुषहै॥इतामैऔरबस्तैमि
लेहै॥औरइहसरीरभांतियहहैजुपांचौंजुदेजुदे मिले
सुयहप्रस्तावमोकौंक्रियाकरिसमुझायकहियै॥
गुरुवाच॥तैंजुयह प्रसंगपूछ्यौसुयहमैंसास्त्र
मैंबोहतबारदेष्योहैपैतहांतौंऐसेहीकह्यौहैजुप्रपं
चपंचभूतआत्मकहैऔरइनकेमिलिबेकीभांतिव
हकहाहै॥जुपांचौंजुदेजुदेमिलिकैएकभएहैं॥पै
यहमेरेमनमैंऐसेआवेहै॥जुप्रथ्वीमुख्यहैतासौंजल
अरुतेजमिलेहैअरुपिंडजुहोइहैसुइनतीनहीं॥
कैसंजो गतेहौतहै॥औरइनतीननतैंभिन्नजहां
षालीरह्यौ॥तहीआकासहैअरुपवनहै॥क्योंकि
आकासतौसून्यहीसौंकहीयैहै॥अरुइनतीनन
तैंतौपिंडहोइहैतौजहांपिंडतहांसून्यनहीं॥अरु
जहांसून्यतहांपिंडनहीं॥

ज्ञातहैजु पिंड ॥ इनतीननकौहै ॥ अरु पिंडमैजहां
अवकासरह्यौतहांआकासआयौ ॥ अरु जहांआ
कासतहांपवनआयौ ॥ क्यौंकि विनांअवकासप
वनकौसंचारकैसेहोइ ॥ शिष्योवाच ॥ तुमजुकही
प्रथ्वीजलअरुतेजयातीनहीमिलेहै ॥ औरआका
सअरुपवनयाजुदेहीहैं सुयहमेरेमनमेंआइयौ ॥ का
ठमेंअरुपाथरमैंआकासमांन्यौहैअरुपवनहूमां
न्यौहैसुकाहेतैं ॥ क्योंकिकाठमेंअरुपाथरमैंतौ
अवकासनांहीतहांआकासअरुपवनकैसेमांन
ये ॥ गुरुरुवाच ॥ काठजुहैसोवृक्षपहिलैतैसुक्योंही
नांहीउपज्योपहिलैंहर्यौंरूषहै ॥ औरजबहर्योहै
तबजलडारफारपातपातपहुंचतहै ॥ तबतौअ
वकासथौंही ॥ क्योंकिअवकासविनांजलकैसेपु
हचै ॥ अरुजहांअवकासहैतहांआकासहै ॥ अरु
जहांआकासहैतहींपवनहै ॥ औरअबजोयह
सूक्यौतऊअवैवतौबहरेकेसूकेकाठहूमैंहै
तबहीयाभांतिकाठमैआकासहूआयौअरु
पवनहूआयौ ॥ तैसेहीपाथरहूजांनक्यौंजुपाथ
रहूजबउपज्यौहै ॥ तबकछूअैसोकठिननही
पज्यौ ॥ क्योंकिप्रथ्वीअरुजलकेसंजोगतैउपजै
है ॥ औरपाथरजबप्रथ्वीअरुजलकेसंजोगसै

उपजे है। तब कहे थि कि बिना अवकास पृथ्वी में जल संचार कैसे होइ तो अवकास ते आयो है। और ज हां अवकास न यो तहां आकास तहां पवन। ता तें यह जान कि तत्व तीन ही मिले है। क्यों कि उपनिषद में कह्यो है जु त्रिवृत करण। औ र ए पांच हू तत्वन के पांच गुन है। सो कहे तो स कहूं। अवकास को गुण सब्द है। वाय को गुण परस है। तेज को गुण रूप है। जल को गुण रस है। पृ थ्वी को गुण गंध है। और ए पांच पांन इंद्री ते उप ज़ी तत्व आत्मक है। क्यों कि श्रवण इंद्री है सो आकास है। सब्द ग्रहे है। त्वचा इंद्री है सो बाय है। परस ग्रहे है। नेत्र इंद्री है सो तेज है। रूप ग्र हे है। रसना इंद्री है सो जल है। रस ग्रहे है। घ्राण इंद्रि है सो पृथ्वी है। गंध ग्रहे है। और जैसे ए पांचों इंद्री पंच भूत आत्मक है। तैसे ही काम क्रोधादि कहू जानि है थि कि मोह जु है सो आकास है क्यों कि सून्य है। और मद है सो वाय है क्यों कि उ नमाद है। क्रोध जु है सो तेज है क्यों कि तीवन है। काम जु है सो जल है क्यों कि रस है। लोभ जु है सो पृथ्वी है क्यों कि वासना है। और सब रजु है सो त्रिगुन है।

नीहैपैएकामक्रोधादिकजेपंचतत्वआत्म
ककहेतेतामेंअंतहकरनकेधरमसुनेहें॥
तौएतत्वआत्मककैसेहोइ॥सोयहअरथमो
कौंजुक्तिपूरवकसमुझाइकहियें॥गुरुवा
च॥यहदेषिकिअंतहकरनतेजीवकहा
वेहे॥पैहेपरमात्मातौदेषिकिपरमात्माको
कांमक्रोधादिककैसेहोइ॥औरदेषिकिपा
नीजोहैतौताकौनींदकहुआवेहे॥औरसीतउ
स्नकहूजांनेहे॥औरविस्वकौंबहुतरूपकरिदे
षेहे॥औररसस्वादकहूजांनेहे॥औरगंधकहूजां
नेहै॥तौदेषिकिएकामक्रोधादिकजेअं
तहकरनकेधरमहोतेतौपानीकेतौअंतह
करननांहीं॥औरएअवस्थातौपानीकौंस
बहोहिहे॥औरपानजयेकहूदेषैहें॥
क्योंकिजीवनमुक्तिकहियेहे॥तौयाजानि
कापंचतत्वआत्मकहेतेदेहगुनहोयहस्व
रूपावतामेंताहूनीकेसमुझाइकहो
औरासदेहहोइसुखवीयो॥सिष्योवा
च॥ चैतन्यतौसरबव्यापकहेंअरुजं
इजुहेसोमिथ्याहे॥तामेंतौसदेहनांहीं

१२

औरयहभेदजुहै।सोज्योंदारमैंहै।तहांकहेषिकि
औसेहैजैसेंआकासमेंचंद्रहै।ताकोबिंबसबप
रपकसौंपरैहै।कहांजलकहांपथ्थरकहांपरब
तकहांबिंबकहांरेत।पैदेषिकिजलमेंप्रतिबिं
बहोइहै।औरऔरप्रतिबिंबनांहीहोइहै।चांद
नोंहोइहै।तोदेषिबिंबतोसबऔरपरपकसौ
है।पैजलस्वछहै।तातेंयामेंप्रतिबिंबहोइहै।औ
रऔरस्वछनांही।तहांचांदनीयेहोइहै।त्योंही
देषिकिजैसेंजलस्वछहै।तैसेंहीअंतहकरन
स्वछहै।तातेंचेतनकोप्रतिबिंबहोइहै।तबचे
तनभासैहै।औरजहांस्वछनांही।तहांकचां
दनीकीनांतिचेतनतोहैहीपैप्रतिबिंबनांही
होत।तातेंजडकहै।पैतत्वजोजांनिचेतनएकहै
।तामेंकछुभेदनांही।औरजडजूहैसोअपनांत
करिभासैहै।अरुजबहस्वरकैअनुग्रहसौंपं
नहोइहै।तबसबचेतनभासैहै।जैसैसबआयु
षणस्वर्नमेंहीहै।यहप्रस्तावतोमेंताकोंनीकै
समुझायकहौ।औरोसंदेहहोइसोपूछीयै।।
सिष्योवाच।।इस्वरजुहैसोकोनप्रकारहैमेरोसं
मिटो।।

रैसंदेह मिटाइयै ॥ गुरुरुवाच ॥ शास्त्रमतौ कहीं है शु
माया कै विषै सुध ब्रह्म कौ प्रतिबिंब सो इस्वर ॥ सि
ष्योवाच ॥ तुम कहो कि माया कै विषै सुध ब्रह्म कौ
प्रतिबिंब सो इस्वर तब याते यै इस्वर की उतपति
आवै है और ईस्वर कौ अनादि हू मानै है। सु जो इ
स्वर कौ उतपत है तौ अनादि पनौ कहां ते। और
जो इस्वर अनादि है तौ उपजनौ कैसै
बनै। और शास्त्रमतौ इस्वर की पदो उरीत कही
है। और इन दोऊ न्यां तिन मतौ विरुध प्रतब है।
सो यह तुम्हारी क्रिया विनां कैसे समुझ्यो जाइ॥
तातै हूं तुम सो बिनती करू हौ कृपा करि कै जे
सै ईस्वर की इन दोऊ न्यां तिन कौ विरुध मिटै तैसै
समुझाय कहीयै॥ गुरुरुवाच ॥ तै यह बडी बात पू
छी है यह विरुध अनाद चल्यो आयौ है। और जा
नि कि इस्वर की क्रिया ते जो अन नवी होइ सो इ
यह विरुध मिटावै। असु तू चित लगाइ कै सुनि
देषि कि इस्वर अनादि मान्यौ है। निराकार मान्यौ
है। व्यापक मान्यौ है। और करता मान्यौ है। तातै
सगुन मान्यौ है। और देषि कि ब्रह्म तौ अनाद ही है
निराकार हू है अरु व्यापक हू है। और अकर
ता कहै है। तातै निरगुन है तौ अब देषि कि त्र

जांनि॥ औरविस्वहैसोइथ्याह्नस्तउपज्योहै॥ तबदेषिकिम

नादित्तामैनिराकारतामैअरुव्यापकतामैतोजांनि
ब्रह्मकौंअरुइस्वरकौंकछूभेदनांही॥ रह्योकरत
करताकोभेदासुब्रह्मतौअकरताहूमांन्योचाहि
तातैजांनिकिब्रह्मतौअकरताहैसुकरताकैसा
नीयै॥ तातैकरिविलवकेलयैइस्वरमांन्योहै॥ पैंदे
किइस्वरकेभिन्नमांनैअरुजीतकैसेवद्रै॥ तातैब
कीइछ्याकोंइस्वरमांनैअनादिताहूआइ॥ औरउ
पतहूआइ॥ क्योंकिइछ्याविनांभयेहूं
चेतनमैइछ्या ॥ तबदेषिकिइछ्याकी
अनादितामैतौसंदेहनांही॥ औरइछ्याकैहेतर
उतपतभइ औरइस्वरकोमायाप्रतिबिंबचेतन्यम
नेहै॥ औरदेषिकिइछ्यामैकछुप्रियताहैसोइप्रि
तामायातबजांनिकिइछ्यासोइस्वरतंबदेषिवि
अनादिताहूआइ॥ अरुउतपतहूआइअरुविस
ताहू गइ॥ औरब्रह्म करताहूहैअरुअक
ताहूहै॥ औरयकदीहैपैविनांअनुग्रहअैसैजांन्यै
नजाइ॥ तातैयहप्रस्तावमैतौसोकह्योसात्अनुग्र
हहीजांनि॥ औरयहहूनिसंदेहकरजांनिकिमुक्ति
कौउपांइग्यांनहीहै विनांग्यांनमुक्तिनहोइ॥ और
यहनिसंदेहकरिजांनिकिविनांअनुग्रहग्यांनहो
इ॥

बीजरूपैहैहोवैंकिकी

तादिकही॥इहउयासनआगममारगआक्तहोमनि
रंतरही॥पुरानकथारुत्रिकालसथैंसकधग्यानननही
इनतैकबही॥यहैमनआंनिसंदेहविनांविनुवहल
अनुग्रहग्यानननही॥१॥जगजागकियेरुदियेवहल
भोजनस्नानकियेकुनितीरथही॥त्रमिपतीवत्रप
तित्रयैंकुपढेषटशास्त्रनिपिंडतही॥गरुवाइमज्जो
पेपंचनमेतकुग्यानतैंही॥इनतैकबही॥यहैमनआंनि
संदेहविनांविनुवहलअनुग्रहग्यानननही॥२॥जल
भीतरपैठिरहेसबरैनिसहैसिरमेहबसेबनही॥
जराइसरीरपंचागनितैकुतिरापिरहैकरऊरधही
॥घरेहरहैगदिमौननिरंतरग्यानननहीइनतैकब
ही॥यहैमनआंनिसंदेहविनांविनुवहलअनुग्रह
ग्यानननही॥३॥फिरेसब त्रमिकरैयरिदबिनबेवि
रहैजोपैराकतही॥श्रमरयानकरैउलटोउपवास
निबीनकरैतनही॥दिगंबरहोइरहैबनमेतकुग्यां
ननहीइनतैकबही॥यहैमनआंनिसंदेहविनांवि
नुवहलअनुग्रहग्यानननही॥४॥जमतैमकरैजिदि
रीतकहैदिढआसनबैठिरहेनितही॥हरकउंर
करेचकसो [illegible] कुनिप्रानायामकरैकि
प्रांनअयानकरेगतिरोधयेग्यानननहीइनतैक
बही॥यहैमनआंनसंदेहविनांविनुवहलअनुग्रहग्यानननही

॥५॥ इत्यादिकरिकैमनपैचितकैधारनधारिहैमनहौ
॥धरिध्यांनरहैनगहैमनश्रोरसवैतजिदोरश्रचंचलहौ
॥त्रिकुटीतजिसोधिसमाधिरहैतकुप्यांननहौइनते
कबहौ॥यहैमनश्रोनिसंदेहविनांविनुबह्मअनुग्र
हज्ञांननहौ॥६॥सुचितासुरहैवकसाधनकैसे
गबह्मकथानितहोइजहौ॥गुरुतेंकुनिसेनक
रेबकुनारज्ञग्रथश्रनेकश्रध्यातमहौ॥सुनिवेकुपि
रेवकुतीरथवौरनिग्यांननहौइनतेकबहौ॥यहे
मनश्रोनिसंदेहविनांविनुवह्मश्रनुग्रहग्यांननहौ
॥७॥सुनिहौसोनिफेरविचारकरेकुनित्रबेविसे
षनजांनतहौ॥सुनिकेसमुझेवकुतांतिविचारक
रेनिहचेमनचिततहौ॥निदध्यासनफेरिकरेनि
तहीतकग्यांननहौइनतेकबहौ॥यहैमनश्रोनि
संदेहविनांविनुवह्मश्रनुग्रहग्यांननहौ॥८॥ग्यां
ननसाधनतैउपजेनउपाइकहूउपजैयहजाते
॥हिष्ठश्रगोचरसुपनहौकहूदेषतमैनहोश्रावत
याते॥नवनैकहतेसुसनैननबनैवनिहैकहिकैं
सेबनायलेवाते॥याहीतैजांनिश्रनुग्रहसाधि
हैश्रायहीग्यांनस्वरूपहैताते॥९॥सुकर्महैं

सतसंगतकौंपरस्योकबहूनधस्योनहिसाधनकै
मगमै॥ ऐसेभयेंहूगयोनकबूपगहैसबकुंजर
केपगमै॥ होतअनुग्रहकाजनयोंसबभाषनदे
षियहैनिगमै॥२०॥ दोहा॥ जसवंतसिंघकीनो
समुझिअनुग्रहहेतसबतिसार॥ सिद्धांतबोधयाग्रं
थकौधस्योनांवनिरधार॥२१॥ अनुग्रहकेफल
कौअरथजांनैअनुग्रहजाहि॥ कहैांकहांविस्तार
कैबोल्तबात मेवाहि॥२
२॥ इतिश्रीमाहाराजाश्रीजसवंतसिंघजीविरचि
तेसिद्धांतबोधग्रंथसंपूर्णः॥ श्रीकल्याणमस्तु॥
लिषतंवोजाकस्मदतआंबेरमध्येचैत्रमासेसं०१९०२

॥श्रीपरमात्मनेनमः॥ ॥अथअनुभवप्रकासलि
ष्यते॥ कवित्त॥ इहोदोंप्रनामकरिकेहियेक्रिपा
केसा॥ ॥ हेतसंदेहजोमेंऐसेक्रैजनाइयै॥तु
म्हारेसरनआयोताकीतोतुम्हेंहीलाजइस्वरस्व
रूपमोहिनीचैकेवलाइयो॥गुरूकह्योऐसेजांनिइ
स्वरवेहेतुसधचेतनकोप्रतिबिंबमायामेलषाइयै
फेरइहबोसिष्यतबमायांधोंकहांवेकोनयाइकोस्व
रूपफेरिआबसपुछाइयो॥१॥ब्रह्मप्रतिबिंबहोतई
स्वरकोदेषीयाहिव्यापंकरूपंकेगर्गरऐसीजारिबरहे॥
प्रथमप्रकासकेकेनेहदेपवनरूपवहेतेजवहेयां
नीवहेननइधरहे॥नानाविधदेमीपेरगदीजातवेयां
दुनोहिसबजगमाहोयाकोंकोनेदयोवरहे॥दुमे
प्रतीतऔरऔरकोदिषावेऔरकोनदेकहोथोमा
याजातेभयोफरहे॥१॥गुरूकह्योऐसेमांतिचिदानं
दरूप्रकासऐसोजांअपडब्रह्मताकीइछाजानबी
॥इछाहीतेइसभयोताहीतेप्रकासपोनताते जलते
ज ताते धरामानीबी॥ताहीतेअनेकरूपदेषापं
रे विस्वसबनिसंदेहयाकोंसदाइछाप्रहिचानिबी
॥वारवारकहूतेसोमाया जिननजांनेयहसबहीको॥
हेतपकइछाउरआनबी॥२॥ऐसेतुम जानेजोअवि

कौन है अविद्यावहकाहूसौंतइहै किधौंआप
हीसोंउपजीहैकौनभांतकहिये।औरजोकहैअ
विद्याहैतसबकोय हैकाहूतेनतईआपउ
पजीयोनहिये तेतौकहेवचनमेकैसेहूनआव
तहैअनिरवचनताहिकैसेकहिगाहिये॥४॥नां
हियाकैरूपकहूनाहिकछुआक्रितहैअसतरू
नोहियहनांहियहसतहै।नकाहूसोउपजीन
आयसेतईहैयहऐसेकहेंवाहिवहकेसेवह
तहै।तासोंकहूकैसेकरिकहियेजगतहैतक
बुवेनहोइताकोकैसेकरूहैतहै।औरविधि
कहेउकोनांहिनेवनतवाततातेमेविचारकहै
इआमेरेमतहै॥५॥फेरिकूजोऐसेकहोइआ
हतोमांनतहौयेजगहैतिकिनअविद्याहीजांनी
ये।अविद्याकैमांनेवहूअनिरवचनहोतब्रह्मअ
अविद्याहोऊहैतकाहेमानीये।यातेमकहोहै
तोहिसमुझिविचारिदेषियहैवातिनिश्चैसोचित
मांहिआनीये।इआहीकैकहेंहातयाकविषैकार
नतातोतेयहजगतकोंकारनवषानीये॥६॥जोपे
चिअसेनिरगुनब्रह्म
वहतौहैरूपकासचेतनस्व
रूपवहैचेतनाहीइआतासोंसबकछूकरेहै।चेतनातो

मांनिविषैविनांमांनैचेतनाकोजडताश्रोसून्यताग्रसं
गश्रांनिपरैहै।।निर्गुनस्वरूपश्रायसबैगुनवादीमां
हिष्टरनताश्रोनेविनकहेकेसेसरहै।।७।।करिके
प्रनांमकहूसरनतम्हारेश्रायोकोजीयेनिवादजे
सोरावरोवषांनहै।।तुम्हारोहीगुरदेवध्यांनधरूरैन
दिनबचनतुम्हारोमोकोवेदसोप्रमांनहै।।ज्ञांनतही

थिजारि

जिम्रसेर्ज

फिरिसिष्यतबम्रविद्याकेवि

फिरिभेदजिनमानोष

तोएकेसवद

यहकृपालकैदयासिंधुअपनोसमुझिमोसोमयाक
रिवैकहे॥२०॥ वडुरयोकहतगुरुसिष्ययहऐसे
जांनिजीवहैकहतमानऔरनांहीवातहै॥ऐसेह
तजांनिजीवदेहकेनमांहिकहूदेहकोव्योहार
हैतप्रांनहीलषातहै॥औरस्कनिदेहजबहोतउ
तपतितबजांन्योपरैनीकैनांहिसबकोसंघातहै
देहकोनिवाहप्रानबायहूसकजांनिलेहुऐसे
कहूपरितासोजैसेजांन्योजातहै॥२१॥अंतसमैं
नीकैकरिविचारैतेजांन्योजातकेवलप्रतछप्रां
नवायकोआधारहै॥देषियतसांसकुनिनारीहु
जोहैपीयतहैषियतसांसहीसोंआयकोविचा
रहै॥सीतलताउष्नताप्रकारऔरकेतिकजेहै
षियत तिनहूमेप्रांनकोविस्तारहै॥देहमांहि
जीवक हैकौनविधिकह्योजायजीवकेवियो
गकैतोयकौनप्रकारहै॥२२॥ औरस्कनिसरीर
विषेवहाजेतीककुतितनीसबैयप्रांनवायहै
सोजांनबी॥औरजुहैप्रानयहजातेसबजांन्यो
जातप्रानकोधरम नांहिनिसेदेहमांनिबी॥
प्रांनमांन्योचाहियेहीयामै विचारनां हौविधि
मांन्योजायसोईउत्तरआनबी॥होइसमाधांनऐसेउत्तर
तरहैतामैप्रांनकीअवस्थाऐसीजांतिकैवषांनबी॥२३॥

शास्त्रमैंतौसबवेरकह्यौहैअविद्याविषैचेतनकौप्रतिबिंब
सोईजीवजांननौ।ताकौंफुनिआवरनमांन्यौहैअविद्याही
कौंजीवविषैयाहीकौंअग्यांनलयनमांननौ।प्रतिबिंबमांनै
हैंपिआवरनकैसेवनैआवरनहोतेप्रतिबिंबकैसेआंननै
।आवरनप्रतिबिंबदोऊकौनिबाहनाहिंऐसीविधिजीव
कहौकैसेकैप्रमांननौ॥॥अथअबसुनिमैंरैमनआवतहैसो
रुकहौजामैंनिसंदेहब्रह्मतत्वकौप्रकासहै।हहतौविचा
रतेंअभासहीसोलागतहैतैसेंहीविचारयामैंग्यांनकौअ
भासहै।लगायोहैषिरकीमैंपारेविनांकाचजैसेंतामैंजै
सेबाहिरकौभीतरविलासहै।ऐसैंप्रतिबिंबमांन्यौआव
रनजांन्यौगयौतैसेंहीसरीरविषैग्यांनकौनिवासहै।२५॥
तबकहग्यांनकहूकाचकौधरमनांहीअंतहकरनहू
कौनवहधरमहै।जोहौतौहैधांमअरुकाचवहवाही
मैरितौतौंवहग्यांनकैंआभासकौंभरमहै।तैसैंहीसरीर
अरुअंतहकरनजोलौंतबलौंग्यांनकैआभासकौभ
रमहै।ग्यांनकौअभासयहतामैंतौसंदेहनांहीयाहि
सोंकहतजीवयाहीसोंकरमहै।२६।औरयहऐसै
जांनिग्यांनजोपदारथहैकाहूकौधरमनां।हिसवही
तैन्यारौहै।देषियतजेतेतौजडअरुमायाकहैति
नकौधरमग्यांनकैसेंहोंनहारैहै।तासैंहौंकहिवफे
रिनांहिकहूयामैंफेरिसबग्रंथनकेमतयहनिरधारौ

य विस्वकौउजारौहै॥२७॥ सतचिदानंदताकीइछ्याही
कोईसजांनिमायातौकहीमैंतोहिइछ्याहीकोरूपहै॥
ग्यांनतैवतायोतोहिवहीहैश्रभासमात्रग्यांनकोश्रभा
सवहैजीवकोस्वरूपहै॥ इछ्याश्रोश्रभासदोऊइनको
नृश्रैसेजांनितौंकोस्वरूपजासोकहैहैश्ररूपहै॥ जे
सेकैवतायोतोहिश्रैसेहीवियारिलेहनिसंदेहहोइदे
षिदेऊकेनरूपहै॥२८॥ सवैया॥ विस्वकोकारनवि
स्वकोपोषकविस्वस्वरूपवहैजुकहावै॥ विस्वश्रधा
रश्रधारनहीतिहिरूपसबैरूश्ररूपसुभावै॥ याहैकरै
नधरैकहूइछ्याकरतासदाकोउदासीलषावै॥ श्रा
पश्रनंतश्रषंडश्रपारसुश्रैसोसरीरमेकैसेकैश्रावै॥
॥[illegible]॥ तबश्रतबश्रभोगताभोगकोभोगकरैकबहू
नश्रघावै॥ निर्लेपसबमेनिरलेपसदावहसाबीश्रसं
यहैसुतिगावै॥ सबैगुनस्रलैर्गुनसोईनिरंजनहैलवि
राटदिखावै॥ श्रापश्रनंतश्रसंषश्रपारसुश्रैसोसरी
रमेकैसेकैश्रावै॥[illegible]॥ एकश्रनेकसदाहैसमानरे
स्थूलहैसबमग्रंथवतावै॥ श्रविनासीहैनित्यप्रगट
बियोनिरबंधनिसीमहैकेसेबंधावै॥ श्रादिश्रनादिहै
कारनकोंजंतिसिंधुकोंकोहैजुपावै॥ श्रापश्रनंत
॥२२॥ सवै
तिश्रोरचलैनहलैबिभुव्यापकहैसबजामेसमावै॥
निरंतरहैश्रजश्रंतनहीतिहिकारनकोंकहिकोउपजावै॥

निसेधयंरमतवारनपारनहीपरिमांनश्रमांतजताहै॥
आपअनंतअखंडअपारकअैसेसरीरमेकेसेकेआ
वै॥२२॥गंम्यअगंम्यअसेमिअचिंतउपाधिमिल्येनि
रुपाधिकहावै॥निरखधियहैनिरवांनसदायहअै
सोयतब्यागहैनगहावै॥क लाविनुहैरुकलासब
वाहीमेहैनिरवैबनावै॥आपअनंतअखंडअपारक
अैसोसरीरमेकेसेकेआवै॥२३॥परेसबकेनपरेक
हुैवहकेठरेरूनहीकछूवातलषावै॥हैसतअैचित
आनंदनित्यविसेसभरयौनिविसेसकहावै॥रहौन
रहरविनांअवकाससरीरकहैतामेकेसेअमावै॥आ
पअनंतअखंडअपारकअैसेसरीरमैकेसेकेआवै
॥२४॥कवित्त॥देहनांहीइंद्रीनांहीमननांहीबुधि
नांहीअहंकारचितनांहीदेषिवोनहीतहां॥कहि
वोकछूनजांमेसकनिवैकीवातनांहीध्येयनांहीध्या
ननांहीध्यातारूनहीजहां॥गुरुऔरसिष्यनांहीन
मरूपविस्वनांहीउतपतिप्रलैनांहीबंधमोक्षहैव
हां॥वचनकौविषैनांहीसाखअरुवेदनांहीऔर
कहाकछूउहांग्यानरूनहीनहां॥२५॥दोहा॥
घोरहीमेवोलतहैजसवंतकरयौविचार॥याअनु
वभकासकोयढिसकनिसमरकोसार॥२६॥इतिश्री
महाराजाश्रीजसवंतसिंघजी।

॥ऽिर्द्धय॥श्रीपरमात्मेनमः॥ ॥अथअपरोक्षसिद्धं
तलिष्यते॥जाकीइछातेनयोविस्वसबैनिरमांन॥
कारनअरुकारजहोऊजातेनयेप्रमांन॥१॥करत
हैसबविस्वकौताकोकरतानांहि॥बंदनऐसेब्रह्म
कौंनायक ताजांमांहि॥२॥बंदनकरिगुरुदेवकौं
रमविचारितापाबेकिरिमुक्तिकोकहीयै
कार॥३॥कौनकरमतेहोतहैमनुषदेहउ
करतोकिहिविधिभोगतोकिहिविधिकर
तो॥४॥किहिविधिनिर्म्योविस्वसबकबकी
तारा॥नइअविद्याकौनविधिकैसैजीवभया
॥यहअरुऔरोअरथसबहीजेमोहिवताय॥
कहियेनिपटकिपालकैतौयहसंसैजाय॥६॥त
बगुरुकहीदयालकैकहूंसिष्यसबतोहि॥अव
नमननतेअरथसबजैसैभास्योमोहि॥७॥स्वेद्ध
रोकरमजबहोउहोतसमांन॥करहुशास्त्रमेहो
तबधुरषदेहनिरमांन॥८॥मनुषदेहतेकरिसके
मलोकरमजोकोइ॥ताकोसिषयहजांनतूनिश्चै
करफलहोइ॥९॥बकर्योयाहीदेहतेकरमजु
रेकरलेत॥तेइयासंसारमेताहिबुरोफलदेत॥१०
मनुषदेहतेकरमफलागतसबहीआहि॥नलोउ
रोसमुझतसकाल

वैपसदेहैतेलागतहैतोसंदिह॥ नतौबुरोसबहीक
रैविनुसमझेमनमांहि॥१४॥ औरदेखियहबुधिदेम
नुष्यदेहकेसाथ॥ नतौबुरोसमुझतऊकरतेनांहि
नहाथ॥१५॥ तातेजांन्योजातयहबुधिपातहैजो
३॥ करतातोबुधिदेनहीईस्वरकैसेहोइ॥१६॥ म
नुषदेहतैकरमफलागतऔसेआइ॥ रुवैहीयहआ
पसुकरताकहतवनाइ॥१७॥ करतातेकोऊऔ
रहैतातेपर्योवियोग॥ तौहीफिरिफिरिहोतहैस्त
कर [illegible] कोभोग॥१८॥ तातेयाकीबुधिहूंफलइ
तनोहीमांन॥ करताको [illegible] औरहै [illegible] तौसमुझेजानि
॥१९॥ जबहीयहसमुझैइतौकरतातौमैनांहि॥ त
बहीताकोकरमफलभोगमिटैछिनमांहि॥२०॥
करतातोइस्वरकहैइनकैमतैनहोइ॥ जीवकर
मजेक [illegible] हतहैअनादिहैदोइ॥२१॥ इनकोज
बयहपूछियेपहिलेजीवकिकरम॥ तबयाकह
तजुहैदोऊबीजअंकुरकेधरम॥२२॥ जीवकर्म
इहिविधिकहैबीजअंकुरकैन्याइ॥ औसेऊतर
[illegible]नविधिकैसेमांन्योजाइ॥२३॥ तबफिरिपूछै
[illegible] कहैइनकैनांहिनआदि॥ ब्रह्मअविद्याजीव
कर्मचार्योकहतअनादि॥२४॥ इहिविधिहूऊत
रदयेकैसेहोतप्रमान॥ घटिवढिनांहिअनादिमैया

स्योहोतसमान॥२३॥तबईस्वरक्रूकौनविधिकरतामांने
जाइ॥जोइस्वरकरतानहींईस्वरपनेसकबाइ॥२४॥उत
पत्तिकहितअनादिहेउपजतिनांहिननित्ताऐसेहू
उतपत्तिकोइस्वरनांहिननित्त॥२५॥पइफिरियोंक
हतहैनिहचेकरिचितिमांहि॥ईस्वरकेअनुग्रहविन
सुननकर्मउपजेनांहि॥२६॥इस्वरजोइनको मतेक
रतानांहिनआहि॥ताहीइस्वरकोंकहेअनुग्रहमांने
कांहि॥२७॥जोइस्वरयाविस्वकोकरतायेनकहाइ
ताहीकोंअनुग्रहकहेंकोंकिरमांनेंजाइ॥२८॥य
हकहियेसमुझाइकेंफलहोतहैयांहि॥उपजतअप
नेंकरमतेकेइस्वरतेंआहि॥२९॥करैकहायकमी
ढइनतेकछूनहोइ॥फलदाताइस्वरसदानिस्चेक
रिकेजोइ॥३०॥अनुग्रहमांन्योचाहियेइस्वरकोंचित
मांहि॥इस्वरकेअनुग्रहविनांकछुवेकारजनांहि॥३१
॥करमनमेनहियांनकछुयहहनिश्चैमांनि॥यांनअ
विद्यामेंकहांहोहेकजडजांनि॥३२॥इस्वरहीतैयाः
येज्ञांन्योजातप्रमांन॥यांनरूपइसरसदाजोमैवरन्यं
नां॥३३॥इस्वरहीतैंहोतहैजियकोंयांनप्रकास॥इस्व
रविनंयहकोनतेंहोइअविद्यानास॥३४॥इहिवि
धिअनुग्रहमांनबोईस्वरकोंनिरधार॥तबइस्वरन
नोसहीनिश्चैहैकरतार॥३५॥

योनेमनहीकबूताहि।कै।किरिकरता।कहैनिनि
तहीकरताअहि॥७६॥औरशास्त्रहनिति।करता
मानैनाहि।कहतजुऐसेकोनविधिहममानेमनमा
हि॥७७॥नितिकरतातेमानियेजेसबकेरसमा
ना॥नलखुरेदेषतद्रिगनयातेअतिबप्रमान॥७८॥
औरयहोदेषतसबैग्यानीकोइकहो ता॥अरुत्र
ग्यानीबोरहतहैमाइकजरमउदोत॥७९॥अनु
ग्रहइस्वरकेविनाउपजैग्याननआइ॥ग्यानीको
इकहोतहैसोइस्वरअनुग्रहयाइ॥८०॥ [illegible]
ग्यानीअनुग्रहतेनग।इस्वरकेनिरधार [illegible]
विनाअनुग्रहतेरहैमानऊअगपअपार॥८१॥क
नपरअनुग्रहजयोविनाअनुग्रहाका।लबआव
तइस्वरविषेरागद्वेषअनेका॥८२॥विषैपनोइस्वर
विषेकबस्तुचाहतनांहि॥इस्वरताकैसीकहोरा
गद्वेषजामांहि॥८३॥अबसुन्हिसिधांतयहनि
श्चैकरिकैधारि॥विनुसमुझेंलकरततेसहजा
लनिरवारि॥८४॥नीकेकरिकैसमुझितचिवर
करिविश्राम॥इस्वरमेकरुपाइयेरागद्वेषको
नाम॥८५॥इस्वरमेभासतजिनैरागद्वेषादोइ॥
दोषधरेअपदोषतेजुबिनुधितेजाइ॥८६॥जे
मैजसतहैकोउसूरजकेनिरधार।दोइस्वतावत

कर्कै अपनै दिष्टि विकार॥५३॥ भलौ निरमित्तिं रम
त बुरौ कबहू काहू तौ दि॥ बुरौ न फिरि निरमत भ
लौ ईस्वर या जग मांहि॥५६॥ निरमत्व है समदिष्टि
सब वाकी रीत न और॥ तौ तऊ ईस्वर मै कहै राग द्वेष
किहि ठौर॥५७॥ ऐसे दोषि अनेक मै राग द्वेष की र
ता॥ ईस्वर मै कबहू नही राग द्वेष अनीत॥५८॥ ई
स्वर निश्चय कै देवहू जो नित ली दि॥ जो भासत्व्र
भास बड़ तक नई जो आदि॥५९॥ तौ यह अप
नौ आपपरि कैसै रागरु द्वेष॥ वहता है नित एक
तहा न है जो लेष॥६०॥ राग द्वेष कहा याई ये जहां
न है जो आदि॥ याके जानि विवादि बिनु निसंदेह क
रिता दि॥६१॥ चाहै जब तब ही करै जैसो चाहै त
हि ता दी तै यह समझ्वक हत सुतत्रसु वा दि
॥६४॥ स्वइच्छाचारी है सदा वाकौ जानि प्रमान॥ वि
वल इच्छा मात्र तै विस्व कर्यौ निरमान॥६५॥ इच्छ
तै जब जग कर्यौ कैरम करता तब जानि॥ इहि वि
धि निरम्यौ विस्व सब ॥ ऐसै करता मानि॥६
६॥ और अकरता कहत है करता होके लोग॥
करत इतौ पै होत नहि किये करम कै भोग॥६७॥
करत अकरता है सोई इच्छा तै जग जानि॥ निश्चै

करिकैकरमा ऊतेनलबलमानि॥७९॥विल
मयैतेकर्मा॥जीवकरतहैदेषि॥तेइसंचितप्रारब
धक्रीयमांण॥हलेषि॥८०॥ज्ञानहीकरमनतेबऊ
रफिरिफिरिलेग्रातार॥कबहूंपरूकमानसकल
मवतदेषिसंसार॥८१॥तोलौयहनवलरहैकर्म
जालकेमांहि॥जौलौयापरहोइनाइस्वरअनुग्र
हनांहि॥८२॥इस्वरअनुग्रहतेबऊरिकरमस्क
रतनिहकाम॥तबउपजतिवैरागऊनितापावै
विश्रांम॥८३॥श्रवनमननकेहोतहीसाषीमास
तजांहि॥निश्चैकरि [illegible] लजानयहहैविश्रा
मसतांहि॥८४॥साषीजाग्रतमैसोइसपनेहीमै
सोइ॥साषीसोइस्कषपतिमैप्रतिब
नलेदारिहोइ॥८५॥जानिपस्योजु
स्कषपतिमैसाषीपनोनिदांन यहे
अकरताहैसदाकहतजुसद
प्रमांन॥८६॥मिलेअविद्यासोतहैकरताया
कोनाम॥नातेमा[illegible]तेनांहिनहोतवि
रांम॥८७॥अरुतहकारनसजोगतेजीवकहत
हिं॥याकेतीनसरीरहैपहिलोकारनश्रा
॥८८॥चेतनकोप्रतिबिंबजबहैतिअविद्या २
हीसोजानोसहीकारनदेहकहैजु॥८९॥

अंतह्करनचतुष्टइसोइस्वबिंमदेह॥इहिविधिकरिदे
इगतितीजैस्थूलसरीरहु॥९॥अंतह्करनसच्यारीमन
बुधिचित्तअहंकार॥होतअविद्याकेमिलैइहिविधितें
मध्यकार॥१०॥ताहीसे सबकहत यहमनमा
रोजुबताइ॥यातेंसुधस्वरूपलौंकबहूबुधिनजाइ॥
११॥चितकौंतातेंकहतसबउज्जलकरीयेधोय॥अहं
कारहूकौंकहतहरिकियैंसिधिहोइ॥१२॥इनच्यार
नकोंहसबेइहिविधिहैतत्तपाइ॥क्योंजुमिलिइनके
बिषेमलिनअविद्याआइ॥१३॥औरहेपियतेंजबै
होइअविद्याहरि॥जीवनामतबहोगयेरह्योब्रह्म
नरहरि॥१४॥सुनितबमनहैचेतनाबुधिप्रकासहैसु
खि॥छियताचितसमरथताअहंकारपरतब॥१५॥
इहिविधिकरियजानतहैसैसुधिस्वरूप॥रूपयतब
वाकेसबैअपनेनोंनहिनरूप॥१६॥जीवअविद्याक
मेंकुनिपापपुनिहैमानि॥सुषदुषइनकेभोगसब
यहैब्रह्मकरिजानि॥१७॥द्रुबलतापरवतनदीथा
तुसमुद्रवषानि॥दामिनघनओराबरफयहैब्रह्मक
रिजानि॥१८॥येबाकीटपतंगपसुअरुजलचरपंछि
चांनि॥थलचरकिंनरजष्यरूयहैब्रह्मकरिजांनि
॥१९॥

लेसबैयहैब्रह्मकरिजोंनि ॥७१॥ घरीपहरअरुरैन
दिनपखमासरुतैमांनि ॥ संवबररितुअरुनजुगायहैब्र
ह्मकरिजांनि ॥७२॥ कलपकालअरुआकासअरुप
वनतेजपरमांन ॥ जलअरुपृथ्वीअरुदिदिसोंयहब्रह्म
करिजांनि ॥७३॥ सपरसरूपरसगंधरससहअर
थविनुयार ॥ विनांअरथरूससहजेयहैब्रह्मनिर
धार ॥७४॥ परापस्यंतीमध्यमाअरुबैखरीप्रकार
इहिविधिभानीच्यारयहैब्रह्मनिरधार ॥७५
होदसास्त्रस्मृतिरितिसकलबजरुबुधिबाकवि
धार ॥ स्वैपवितसिधांत रूपयहैब्रह्मनिरधार ॥
॥७६॥ गुरुउपदेसरुसिष्यक्रनिसतरजतमवि
स्तार ॥ नीचऊचअरुसमविसमयहैब्रह्मनिरधा
र ॥७७॥ सदुअरुवनउपमानअरुहैअनुमानअ
धार ॥ देखहोतप्रतबसोयहैब्रह्मनिरधार ॥७८॥
अनुपलब्धिपरमांनइकअरथापातिपैधार ॥ इदि
विधिकहैप्रमांनषटयहैब्रह्मनिरधार ॥७९॥
भावअभावरूतरकजेभ्रमसंसैजगजार ॥ निस्वेवि
क्रिरुजातहैयहैब्रह्मनिरधार ॥८०॥ बरनचारि
दरसनवहैजेआश्रमहैचार ॥ विनआश्रमपावं
उसवयहैब्रह्मनिरधार ॥८१॥ स्फुरऊउरऊजेस
वैवंधमोक्षसंसार ॥ अरुसमांनविसेषयहैब्रहो
निधार ॥८२॥ मायाइस्वरजतनक्रनिरब

अरुविस्तार॥कारनकारजनितिसनितनसेयह
निरधार॥१५२॥बडेबडैहैपारलौतिनतौनलैएग
पार॥यहनिश्चैकरिजांनतत्वहैब्रह्मनिरधार॥१
५३॥जामैहैसबहीकछूकहनसुननजामांहि॥ता
तेन्यारौनैकनहिंनांहिनन्यारौनांहि॥१५४॥ज्यु
समुझिकैएककछुहुऐसैकहतअनेक॥पेत॥
वहोतसबतबहूरनएक॥१५६॥समुझवाभेदा॥
सबैसबहीकछुवामांहि॥न्यारेहोलयप्रानतें
न्यारेनांहि॥१५७॥यहनिश्चैकरिजांनतत्व
येयाहिनिबेक॥एकएकवहएकहैएक
यहएक॥१५८॥कीनौजसवंतसिंघयहग्रन्थ
तत्वविचार॥अरुअपरोक्षसिद्धांतयहधर्मो
नांमनिरधार॥१५९॥याअपरोक्षसिद्धांतको
अरथधरैमनमांहि॥छूटैसोसंसारतेफिरि
फिरआवैनांहि॥१६०॥इतिश्रीमहाराजाधि
जसवंतसिंघजीकृतिअपरोक्षसिद्धांतग्रन्थ
लियतंवोलाक [illegible]

॥र्येय॥श्रीपरमात्मेनमः॥ ॥बरवै॥एकदंतगजबद
नसुभगवरीनंद॥विघनहरतगनिपतिकरआनंद॥१॥
दोहा॥अपनीइछाकरिकीयोविस्वरूपपरकार॥बंद
नपरमानंदकोजोजगकोआधार॥१॥व्याससूत्रको
भासपटसंकरकरयौवनाय॥ताओढेअगयानकोसी
तसबैमिटिजाइ॥२॥संकरगंगातटविषैबैठेसहजसु
भाइ॥तहांउदासीपुरषइकनमसकारकियोआइ॥
३॥तदसंकरपूछोकहोजातिलांउअरुगांउ॥अरु
मतकीइछाकहोकयोआएतजिगांउ॥४॥बरबै॥जा
तिनजांनतआपनतातनमात॥जीवसबैमोकहतक
रतजबबात॥५॥मिथ्याजांनिप्रपंचभयोउपहनावि
षयसुषनमेंदुषबहुसुषअतिन्यून॥६॥घरकुटंब
नहींमेरेआवतकांम॥मोहतेउनकोनहिजातबि
रांम॥७॥विषयसुषममतातेंलषिजहांहियदह
सबझूठीलागतममतामोहि॥८॥अरिल॥सुक
चिरियाघरमांहिपुरषकेरहतजु॥सुवामरेदुष
होइचिरीनहीदहतजु॥समतादीउपकरिपमो
हियदहभासदी॥परिहोकाकेसहरनेजांउकोतासै
हिराषही॥१०॥बरबै॥इनवातनदुषउपजैअ
चरिजकौन॥मोतनहीमेंअरिजांनतहौन॥११॥

यसबै दै दुषकी षांन ॥१२॥ कांम करत यह सबही
अचरिज सा जा ॥ बिन ही कारन देषऊ उपजत
काज ॥१३॥ रुधिर मांस की मुरति बीन ब होत ॥ ता
ही मे सिंगार प्रगट उदोत ॥१४॥ रूप दिषाइ रु मन
कौ करत अधीन ॥ रुधि आंयै हू सब अंग कीनै
दीन ॥१५॥ जब उपजै तब सूझत कछु वैनां हि
धरमाधरम विवेक तबै मिटि जांहि ॥१६॥ डुष सदा
ही जांनौ डुष कौ हेत ॥ ता अधीन नये तैं न हो डुष
देत ॥१७॥ कांम डुष के ज्यौं ज्यौं होत अधीन ॥ महा
प्रबल इहि त्यौं त्यौं बढ़ डुष दीन ॥१८॥ क्रोध ध्यावै
सनयै कछु परत न जांन ॥ पूज्य अबध्य न सूझै इक
रै निदांन ॥१९॥ ई हि करि कौतक लषऊ न अचरि
ज बात ॥ धरम विवेक न रहै करै अपघात ॥२०
॥ लोभ सु मारग जांनि न कारू देत ॥ सदा कुमारग
ही कौ हैय हेत ॥२१॥ लोभ मिटावै सब गुन अ
रु गुर कौ नि पुनि हरुवाई अपनी निश्चै जांनि
॥२२॥ त्रिपति होइ न ति कब हू अचरिज जो
[illegible] तिहू लोक की संपति जो घर होइ ॥२३॥
ज्यौं ज्यौं बीन सरीर उपहि त्यौं आस ॥ या त्रिश्ना
॥२४॥ देह छुटे हू छूटत
न इक्षा रोग देत [illegible] न भोग ॥ ति

॥२५॥मोहविसनतैंहरहतनग्यांन॥मिथ्याजगकौसु
रतजुसांचसमांन॥२६॥धरमराहमेंवर्त्तनमनकौदेत॥
अधरमनीकौत्यागतयाकैहेत॥२७॥रागमोहकौरूप
सजांनतहैंनै॥बुधिविवेकमिटावतकरतअचेन॥२८
॥मदतैंइंद्रियग्यांनसबैमिटिजाइ॥धरमाधरमविवेक
करूनलषाइ॥२९॥पीयेकरतविकल तातुबमद
रीत॥बिनपीयेतनविहबलयह विपरीत॥३०॥प
रगुनतैंडषउपजेमबरजांनि॥धरमविवेकनरहैंसब
कीहांनि॥३१॥पषटडषकेकारनपरगटदेष॥अवस
इंद्रिनिकेगुनकहौविसेष॥३२॥देहचलनकौहारसपर
नकेसाथ॥मोरनांहिनपबसिहैंइनहाथ॥३३॥नैनदि
षावतसबही मिथ्यारूप॥सीयमांजिरूयेपकरतअन्धप
॥३४॥श्रवननतैंसुरसबलैंपायोनांहि॥अैसेंकछु
नसुनायेजिहिडषजांहि॥३५॥सपरसरसनांआघ्राण
डषकीषांन॥करमैंडीझझ कैजांनिसमांन॥३६॥नै
निदीपकदेषतपरयोपतंग॥आउनिहांनिलहैजैसै

॥३७॥

न्य हौवासअघांइ॥३८॥र
सनांकारनबुदगलबांध्योमीन॥त्यौंहीगजसपरसतैं
बंधनलीन॥३९॥अलि॥एकिकइंद्रीतैंजुइन्हैंडषहोत है
॥पांचौंमिलिमेमांहिकहौइनतेंसहै॥

ग्मोत्मिनलेतहै॥परिहांग होउषकीषांतिसदाउषदेत
है॥४१॥अंतह्करनविचारयोहैइहि रीति॥यहसबत्र
यत्नेबसकरक रतत्रनीत॥४२॥विषैरूपमनचंचलथि
रनहीहोइ॥संकल्पविकल्पयाकेहैगुनदोइ॥४३॥
बुधिकोकारजनिहचैनिहचैजांनि॥मनकेपाबैरह
तगनतनहिहांन॥४४॥अहंकारयहकहतजुमेरसो
कौन॥कोऊवौरनदेषतजामेहौन॥४५॥रुधिराष
नगुनचितकोऔरनबांन॥मनकोध्याध्यायाकोजांनि
निदांन॥४६॥अंतहकरनअरुजगसबदुषकोरूप
॥बिनरूपदेषतसबकोरकरहमूप॥४७॥पतोदुषमै
जांन्यौअपनेजांनि॥तबमैबाड्यौघरअरुकुलकीकां
नि॥४८॥आवतआवतआयेतुम्हरेपास॥जांनतहूं
अबकैहैपूरनआस॥४९॥मेरीइछ्याऊलीसकही
वनाय॥तुमसरनैहोंआयौलेहुबचाइ॥५०॥श्रीरल
संकरदेसाबासकहौतूंधन्यहैसतगुरषनकोरीरिंज
गततैनित्यहौ॥तेरीइछ्यासुनतनयौसुषचित्तको॥प
रिहांहितकारीयहदसाकरैगीहितकौं॥५१॥दोहा॥
तेजुकहौसंसारमैदुषहीभासतमोहि॥ऐसेहौयहजां
नतूंजैसेभासततोहि॥५२॥जिन्हेअविद्याआवरनति
रलीनोसुषसौ
॥५३॥रोगीमीठोषायजूंदुषीहोतपरिणाम॥त्यौं
हीजगसुषसौलसतअंतजांनिदुषधांम॥५४॥यकत्र

विद्याभ्यास रैजोंनसकलसंसारा॥नासैअविद्याणे
नदैयहैमांननिरधारा॥५४॥कहैाजीवपरणामिक
रिदीजैमोतिवताऽ॥५५॥पोनपदारथकोंनहैवैंयाक
रिजांनैंजाऽ॥५६॥तदसंकरअैसैकहैोसाधनप
थंमउपाऽ॥पीछैग्यांनप्रकासदैसदजैताभैआऽ
॥५७॥षटसाधनकहवहैंआदिदैजज्ञास॥
समदमइंद्रीबसकरनमुमिछोपकीआस॥५८॥बे
ठीबसतनफिरिचहैसोऽउपरमजांनि॥बवैतितिछ्या
मांनिलैसकषउपसहैसमांन॥५९॥यसिथसाध
नहैंबहैताभैकरतप्रकास॥ओरयावनोसातवै
सतगुरूसरनआस॥६०॥इस्वरअनुग्रहतैइहां
आयेभैरयास॥ताकोंश्रधाचाहीयेबचनविषैवि
स्वास॥६१॥करनकहतहैंजोगहवतेरहितकै
जोग॥साधनकरिअष्टांगकोज्यौंचितउज्जलहो
इ॥६२॥बंदनकरिकैजीवतबसुधौंधरिमनपी
तिपविधसुवैहवजोगकोकहियेमाकोरीति॥
६३॥जमुअरुनेमहिजांनिदंआसनप्राणयाम
॥प्रत्याहाररूधारणाध्यांनसमाधिसुनांम॥६४॥
जमहैपांचप्रकारकोऽहिविंधिसुलमांनि॥छुरे
नवाहेअैारकोंताहिअहिंसाजांन॥६५॥सत्य
सांचुकोबोलनोअस्तैकीयहरी

जैन सों राखै मोय है प्रतीत ॥९६॥ परनारी सों राखै
ब्रह्मचर्य जि सु चित देह ॥ अपरिग्रह ममता न जे ज
ग पाये गति लेह ॥९७॥ नेमु पांच विधि सु चिये है
इंद्री सुध अरु चित्त ॥ त्रिष्णा त्याग संतोष तप करै ब्र
ता दिक नित ॥९८॥ स्वाध्याय जु पढतें रहै अध्यात्म
चित लाइ ॥ प्रणिधान नित विष्णु कों चिंतन करै बना
इ ॥९९॥ सुख थिर आसन बैठि कै षट क्रम करै बनाइ ॥ ता
पाछे कहिहौं बहुरि प्राणायाम सु नाइ ॥१००॥ अहि
॥ नेती धोती वसती न्योली जानीयै ॥ त्रसत्री त्राटक पा
षट करम वषानीयै ॥ इनतें सुध सरीर करै गोमां ह्रि
य रिहां ॥ तबै कछाई नै कर दै गी नो हिरे ॥१०१॥
॥ या सब करि कै कीजीयै प्राणायाम प्रकार ॥ पूरक
कुंभक करि चहै पातीन्यो निरधार ॥१०२॥ और वार सों फे
रि कै मन कों ल्यावै वो रि ॥ प्रत्याहार सु जानियै जा
मैं न हि मन दौर ॥१०३॥ या कवोरि चित लाइ यै यह
धारना होइ ॥ चित ल्या ज्यों ल्याग्यौ रहै ध्यान कहावै
सोइ ॥१०४॥ सुरन ह्रीनासत ही ध्येय रूप चित मांहि
॥ सोइ जानि समाधि यह और विषै कों नां हि ॥१०५॥
॥ इन वातन सू चित्त कों उज्जल करै बनाइ ॥ श्रव
न मनन करि कै करैं नित अभ्यासन साइ ॥१०६॥
ब्रह्म विद्या कौ तत जबै समुझे अब यासु होइ ॥

यदवदरावैजुगतिकरिमननकरावैसोइ।।७८।।नि
तअध्यासनअरथकौंदिढकीनौचितमांहि।ताकौ
सुमरननितकरैमलैबिनहूनांहि।।७९।।जीवक
हैसाधनसबैमैंकीनौचितलाइ।।अबअहंकरि
कैध्यानअबदीजैमोहिबताइ।।८०।।संकराचार्यो
वाच।।विस्वरूपयासकलतूंमिथ्याहीकरिदेषिप
कआत्मासत्यहैनिश्चैकरिकैलेष।।८१।।जीवोवा
च।।तुमप्रपंचमिथ्याकह्यौफिरिसबलइहिहेत
श्रवणादिकहूविश्वमेंसांचौफलक्यौंदेत।।८२।।
संकरोवाच।।जौलौंगुरहैंसिष्यतौंलौंहीजगदेष
श्रवणआदिदै।सबैतौलौंसतिकरिलेष।।८३।।श्र
वणादिकतैजौनितउपजतग्यानअषंड।।तदश्र
वणादिकसिष्यगुरुमिथ्यासबब्रह्मंड।।८४।।
श्रवणादिकहैविस्वलौविस्वगयेंतैजांहि।त्यौंही
लकरीकेजरैंदहितआगहूनांहि।।८५।।जीवोवा
च।।संकरकिपाकरोबितेमिटैचितकेद्वंद।।रूपमें
समुझोअबविस्वरूपकोभेद।।८६।।मिथ्याभ्रमसं
सारकौऔरबिनांक्यौंहोत।।रूपैरूपोजांनीयैंदीपि
सीपकीजोति।।८७।।औरआत्मायकतुमकहेउस
चिकरिधारि।ताकौवोरस्वरूपकौकहियेमोहि
विचारि।।८८।।आचारिजहसिकैकहैलेताहिसाबा
साअधिष्ठानयाजगतकौजांनौब्रह्मप्रकास।।८९।।

पु कैसेरन ही आत्मा व्यापक है यह जानि ॥ इहि सिगरे
संसार कौ ब्रह्मरूप ही मानि ॥७०॥ करि प्रणाम जि
यं यह कह्यौ जगत रूप तुम आदि ॥ हां ऊ संसय
नां मिट्यौ कौन मिटावे ताहि ॥७१॥ कह्यौ आत्मा
रूप तुम याते संसय मोहि ॥ सत्य ब्रह्म हूं क्यूं जग
कहै रूप क्यौं होइ ॥७२॥ अधिष्टान है ब्रह्म सति
ताते जग सति जोइ ॥ ऐसे ही भ्रम साप कौ रसरी
चिंतां न होइ ॥७३॥ सा जिस बिन भ्रम है नहीं जानि
य मैं यह होइ ॥ तौ यह कबु वैन मुन हि सा जिस वि
न हू जोइ ॥७४॥ ज्यों आकास मैं नीलमां संख पीत
हू जोइ ॥ पित ते गुर कर वौल गत बिन सा जिस भ्रम
होइ ॥७५॥ पांच प्रकार प्रपंच मैं निश्चै तू राजानि
अस्ति भाति प्रिय रूप ता नांम रूप ले मानि ॥७६॥
अस्ति भाति प्रिय रूप या कौ त्रिविधि सतित मान
नांम रूप पर दोइ तू मिथ्या मन मैं जांनि

जीवकहैयासीयमैजूवैरूपाजोइ ब्रमरूपैकौचि
तमैसीपनजांनैहोइ॥१९७॥ विस्वरूपया ब्रमकौ
कारनकहियोमैहै॥ सत्यआत्मा एकलैहजो ब्रम
कैयोहोइ॥१९९॥ संकराचार्य्योवाच॥ ब्रमरूपयाज
गतकौहेत अविद्याजांनि॥ औरअविद्याकीकहौं
दोइरीतलैमांनि॥२००॥ रोपैदोपिस्कआवरन एकसक्ति
यहलैष॥ औरबिछेपसकऔरकौऔरदिषावै देषि॥२०१॥
मिलैअविद्याकेजयेनांनारूपप्रकार॥ त्योंहोइहिस्त
धब्रह्मतैंकीनोजीवअपार॥२०२॥ जगतब्रह्मकौहेत
दूएकअविद्यादेषि॥ ताकौहोतास्त्रैल बिनरूपविसे
षा॥२०३॥ हैनांहीनांहीकछुवैकहीनजाइ॥ अनिरव
चनयातैकहैबजरूपीकेमाइ॥२०४॥ मायाआश्र
ब्रह्मकेतातैयाहिप्रकास॥ देषोताहीब्रह्मकोकरतआ
वरणयास॥२०५॥ अरिल॥ जबैबंदकरेहआसरहेत
हेतबैचंइमावाहिकरितऊदेतहो॥ ताहीससिहूराहवि
पावतदेषरा॥ परिहां ब्रह्मअविद्यारीतयहैहलबरो॥
॥२०६॥ दोहा॥ मायाब्रह्मप्रकासतैआपनईस्वरहोइ
॥इस्वरहोइब्रह्मकौरूपदिषावतसोइ॥२०७॥
॥मायाप्रथमअ
सकैफेरितदेवाश॥ ऊनिकैतेजलैबिछरि

रिमितताइ ॥ स्थूलव्रत फिरियांचकरिजगत कह्यो है

ताइ ॥ १०८ ॥ अधिष्टांनता विस्वकौ सुधआत्मा जांनि

तौ तौ यह सांचौ लगत जौ लौं नही ज्ञान ॥ ११० ॥

जीव कह्यौ तुम वचन ए मेरे हरन त्रास ॥ ग्यांन कहोत

सो अबे होइ अविद्यानास ॥ १११ ॥ तद संकर असे क

ह्यो सत्ति वचन ए जोइ ॥ ग्यांन यहै जो एकता जीव ब्र

ह्म की होइ ॥ ११२ ॥ जीव कह्यो या जीव को रूप बत

वैतौन ॥ कह्या येमो हिंदयाल के ब्रह्मरूप है कौन ॥

॥ ११३ ॥ संकराचार्योवाच ॥ मैं जु कहत हं आपकौं

ताही कौं जिय जांनि ॥ मैंन होइ वह देह सु निइ चौ हृ

म तिमांन ॥ ११४ ॥ मन मेरो मन मैं न ही तातें मन मैं नांहि

॥ चित ह्म मेरो मन ही मैं न्यारो इन मांहि ॥ ११५ ॥ बुधि मे

री मै बुधि न ही यह सांच करि मांन ॥ यातें इन मैं नांहि

मैं न्यारो करि जांनि ॥ ११६ ॥ रहै देह जाकै रहे जाहि

गयेते जांहि ॥ असो प्रांण सु मैं न ही मेरो ही यह बाइ

॥ ११७ ॥ जो कदा चित्त जांनि है अहंकार मैं दा ग्यान यो

अविद्यातै प्रगट अहंकार जड होइ ॥ ११८ ॥ सो रवा

अंतःकरन मै होइ चेतन को प्रतिबिंब जब ॥ मैं हूं कं

ही येसो इ याहू कौं जिय जांनते ॥ ११९ ॥ जो कदा चि

चेतन के प्रतिबिंब सो है

हमिलन ॥ १२० ॥ याके तीन सरीर है

कारणस्रूक्षिमजांनि॥तीजेदेहस्थूलदेहइहिविधि तेंलमांनि॥१२१॥प्रथमदेहकारनकह्मीताहि अविद्यामांनि॥इजेअंतहकरनह्मसूक्षिमदेह पिछांन॥१२२॥कारणसूक्षिमदेहाजीवलगेइ होतापंचभूतकोतनयहेस्थूलकरलउहोत॥ १२३॥अरिल॥कारणसूक्षिममांनदेहयदोइहे॥ याह्मीतें लहेषिजीवयहतोइहे॥इनदोऊकेन सजीवपदनांरहे॥परिहां॥पाछेसूथस्वरूपम यौजोहोवहे॥१२४॥दोहा॥औरस्थूलसरीरयह होतकरमअनुसार॥अबयाकीउतपतिकोतो सोकहूंविचार॥१२५॥॥एकैनीरफिरपांचवहोत पुरषउतपति॥प्रथमसंकलपकीजीयेजाणोहि ककोसति॥१२६॥इजोआऊंलहोमकीमंत्रसक्ति केनाइ॥वाकोधूवाअरकेमंडलपाहच्योजाइ ॥१२७॥रविमंडलतेमहकेपरेभूमिपरिआनि॥ होतनीरयहतीसरेइहिविधिकरिलजांनि॥१२ ८॥वहेअंनमेआइकेपुरषपेटमेजाइ॥वाहीज लहूसमुझिहचोथेहेयहभाइ॥१२९॥सक्तवी रकेगरभमेनीरपांचवसति॥ऐसेकरियहहोत हेस्थूलदेहउतपति॥१३०॥करमहोइजसेकु वतेसोहोततनहोइ॥ ८

सोइ॥२८२॥करमजुतीनप्रकारकेयातंनिश्चैजा
नि॥संचितअरुप्रारब्धहैक्रीयामांणजांनिमांनि॥२८३॥
जनमजनमकेकरमहैतिनकूंसंचितजांनि॥जिनतें
उपजीदेहयहताहिप्रारब्धमांनि॥२८४॥अबउप
जेगदेहतेक्रीयमांणगजोग॥इस्वरआराधनकि
येंबंछितसफलहोइ॥२८५॥जीवोवाच॥मो
मनतेसबहीमिटेसंसयपरमप्रेनका॥आसंकाम
जीवमेजीवकहोदेपाक॥२८६॥इस्वरसफलफ
लदेतजोआराधनकोमांनि॥तोआवतइस्वरविष
रागद्वेषकीबांनि॥२८७॥संकराचार्योवाच॥नि
कटगयेंवटजातहेहरिरहेंगढिजोइ॥यातेजांनो
अगिमेरागद्वेषनहीहोइ॥२८८॥रागद्वेषकब
हूंनहीनिर्दयेइस्वरमांहि॥करमनकोंफलजांनि
जडफलदाताबांनांहि॥२८९॥निश्चैफलपावकरम
सबजडहीकरिकेजांनि॥सदासफलसबकर
मकोदाताइस्वरमांनि॥२९०॥जीवकहोयहह
मेअबसमुझौसबेचनाइ॥ताइस्वरकोरूपगुन
दीजमांहिवताइ॥२९१॥संकराचार्योवाच॥
त्रिबिधमायाकेविषैसबलब्रह्मकोआहि॥यह
निश्चैकरिजांनतूंइस्वरकहियेताहि॥२९२॥त
नस्थलब्यनकहतहेइस्वरकोंनिरधार॥उपजा

वेपोपैसदाबऊरकरैसेघारा॥१४२॥अबस्वरूपलछ
नकहौंइस्वरकौलजांनिांसकधसचिदानंदहैअैसेही
तंमांनि॥१४३॥सोरठौ॥सताजांनऊसबचित्तप्रकास
कौंकहतहै॥आनंदआनंदनित्तअैसेअरथविचारले
॥१४४॥जीवोवाच॥दोहा॥तीनधर्मतुंमब्रह्मकेमोकों
दए।गनाए।तौवहनिर्गुनकौनविधिकहीयेमोहिव
ताइ॥१४५॥जोतुमकहिहौतीनकौअरथजुदेमन
मांहि॥इनकौएकस्वरूपहैअैसोइलजांनि॥१४६॥तौ
सतचित्तआनंदलमतीनकहेकिहिनाए॥इनकौअर
थदयालकैकहौमोहिसमझाइ॥१४७॥आचारजसुस
काइ तबकह्यौधन्यलआहि॥फिरिवनाइतोसौंकहैं
यहहूसंसयजांहि॥१४८॥सत्तयाहियातेकहैंअसत
नकबहूहोइ॥चितप्रकासतातेकहैअप्रकासनहि
सोइ॥१४९॥आनंदपदयातेकह्यौकबहू नहीदुष
रूप॥इहिविधितत्तजांनिलैअैसोसकधस्वरूप॥१५०॥
यहस्वरूपलबनकह्यौइस्वैकौलजांनि॥ताईस्वरअ
रजीवसोंहोइअभेदसक्पानि॥१५१॥जीवोवाच॥जी
वकह्यौइनकौसकललोगकहतहैदोइ॥इस्वरअ
रुयाजीवसौंएकपनोकौंहोइ॥१५२॥संकराचार्य्योवा
च॥अरिल॥बालअवस्थामांहिउरपंडकेदेषीये॥ब
ढवैवाहिफेरवि

कहीविदहैयहै परिहां उक्तअवस्थाबांडिमांनी
येनरवदहै ॥१५३॥दोहा॥ तौजियतेंअंतदकरन
न्यारोकरियेमांनि ईस्वरहीसंभिनकरिमायाते
सेंजांनि ॥१५४॥ ईस्वरअरयाजीवकोपउपाधिक
रिहरा। पौबिसकथस्वरूपहोरहिहेचेतनपूर ॥१५५॥
इस्वरअरुयाजीवकोरंकपनोहोग्यांन। ग्यांनत्ये
तेंकरमकोहोतनासयहजांन ॥१५६॥ संचितयेब
लेकरमसबजनसमजेयहंमांनि। अबउपजेंगेंनांहि
फिरिक्रीयमांण हूजांनि ॥१५७॥ बंधीदेहजातेंरहे
कहेंपारब्धताहि। रहेदेहतौलोंरहेदाघवस्त्रज्यों
आहि ॥१५८॥ असोग्यांनीहोइकेंजीवैतोलूंजांनि
॥सोकहियेजीवनमुकतनिश्चैकरितूंमांनि ॥१५
९॥ सोहेंजीवनमुक्तकीरीतकहोंयहतोहित
हिकांमनाकीकबूंइछ्याहूनहिहोइ ॥१६०॥ अ
पनेंसकथस्वरूपमेंसदामगनजोआहि ॥ इछ्याकी
इछ्याकबूंकोंकरिउपजेताहि ॥१६१॥ औरकर
मपारब्धपातनलौंरहियहमां नि। करमफेर
इ नतेंअबउपजनकेंनहिजांनि ॥१६२॥ रहियाकी
मपारब्धजोइ ॥ तोलौंयाकीदेहकोंसुष
होइ ॥१६३॥ ग्यांनत्येपहदेहगुनरततेंहे

अतेडुषव्यापैनहीस्रषितैस्रषनहिमोहि॥जैसैस्रष
डुषऔरकेनगैऔरकौनोहि॥२६५॥जबजैदेआरइ
यतदसरीरहूजाग्रातौलौजीवनमुकतदेबऊसौ
मुक्तस्रनाश॥२६६॥देहसमायतकैविषैउपजैजा
कौग्यांन॥ताकोसहोमुक्तसबनिहचैकरहतप्रमां
न॥२६७॥अनुग्रहकरिकैरावरेअबमेरीयहरी
त॥संतनियेप्रभुमेरीदसामैनथरिसत्तषतीत॥२६
॥सोरठा॥पहिलैस्रषडुषसतिमोकौंएलागतऊते
ताहूमैडुष तिस्रषहूतैलागतऊतो॥२६९॥दो
हा॥क्रिपातुम्हारीतेदसामेरीऐसेजोहि॥स्रषडुष
नेऊनभासहीमेरसेरामोहि॥२७०॥अरिल॥चलै
जातहोएकबटाऊबासमौ॥तहांएककेछत्रनयौ
हेतासमै॥तहांएककेसौकछुत्रमनलैगयौ॥पहि
हां॥वाहिबटाऊनेकस्रषेडुषनांनयौ॥२७१॥दो
हा॥ऐसेहीदेषतसबैसबमैसाछीहेहि॥स्रषडु
षअरुयहदेहडुनिलगैबटाऊमोहि॥२७२॥पहि
लेहूंजांनतऊतौमैनचंचलअतिआहि॥थिरकरि
केसैराषिहौकौनजतनतेयाहि॥२७३॥सोमनअ
ऐसोनयोफिरैनकितहूंऔरा॥जातनकबहूंदेषि
येताहिडुसरीबारा॥२७४॥जाइकहांयहमनअवे

पंषीतैंफ़ैजिहाजकोनहीआयगार्थ्रोर।उफि फिरि बिक
स्योत्रावही बेतनकोवहैंगेर॥१९६॥मनश्रैसे थिरहो
इकैलीनन येमोमांहि।बुधिरूकदेषतजउद्बैपा
वतनांहि॥२९९॥सोरठो॥श्रबजोदेषतचित्तयाह
रूंपावतन ही॥ग्यानजानैंकितिधरीबातसबसा
थलै॥२००॥दोहा॥ग्रहंकाररूसबग्योयोदेषतत्तमो
मांहि।कबूरहोहैताहिरूउहिविधिदेषतनांहि॥
१३०१॥तपश्रसविद्याकोगरबग्रोरजतोग्रभिमान
॥एसबइहविधितेंगएतनतेंगयोगुमांन॥२०१॥मे
जुकहावतरूसदरुवहीमोपास।ताकीतेंमोरूं
ग्रवैनेकनग्रावतबास॥२०१॥ग्रहंकारमोकोंग्र
वासतग्राहिग्रनूप।ग्रबजगसिगरोमेनयोमेही
ग्रानंदरूप॥२०२॥त्रिभुनबंधतेदोरतोघरछग्र
बनमांहि।बंधनबूटेथिरनयोचल्योजाइग्रबनां
हि॥२०३॥जितजितग्रबरूंजातरूंतिततहींतिच
समाधि।मुक्तहोंनकोनेकऊरहीनमोकोंसाध॥
२०४॥षालीगेरननेकऊकहांनिकटकहांदूरि
सिंधुलौंरहोग्रातमापूरि॥२०५॥यह
हि।ग्यांनग्रग
॥२०६॥नसमस्त

येउपज्योतहांपरमानंदप्रकार।स्यैयहबातचाहत

कहौंआवस्यकइकवार॥१८७॥कहैंकौनसौं
मोहिं॥अबउमहूंभासतनांहि॥देषतहूंकरिएक
सबसहूंआतमामांहि॥१८८॥नांनाविधिदेषतहूं
तोउबप्रकासकैमांहि॥अबहूंमहाप्रकासतैंदे
षतकछुवैनांहि॥१८९॥आनंदफलप्रापतभ
योउमप्रसादतैंआज॥उमयहऐसेमांनीयोइ
जासहजसुभाइ॥१९०॥जोहैंबोलतहौंकहूं
सोलीजोजपमांनि॥औरक्रियाजेसाधुकीतेस
बमुद्राजांनि॥१९१॥पांइनतेंउपजतक्रियांप
रदछिनासुआहि॥औरुजोभोजनकरतहूंहै
मजांनीयोताहि॥१९२॥जबहूंसोवतहौंतबैले
उंसुमवतमांनि॥सबतनकीचेष्टामेरीकरिमति
जांनि॥१९३॥उपजतहैपदतैंपमामैंकहूंहै
ना॥बोलतहूंवेदहू तैंतातैंबोलतबैना॥१९४
॥तदसंकरऐसेकहेउमनमैंअतिसुषपाइ॥द
सात्रापतितैंकहीमोसौंसबैवनाइ॥१९५॥द
साजुजीवनमुक्तिकीनिसंदेहनइतौहि॥धन्ति
जांनितौहूंअबैआनंदउपजैपामोहि॥१९६॥
औरजुयहसंवादहैमेरौतेरौजांनि॥हरिआनं
दविलासकौसुषसमुद्रकरिमांनि॥१९७॥

जो आनंद विलास कौं पढै सुनै चित्त लाइ ॥ ताकौं
उपजै ग्यान सु निति जीवन मुक्ति सु ताइ ॥ १८८ ॥
भाषा कीनो ग्रंथ यह जसवंत सिंघ नाइ ॥ सुष
आनंद विलास तब दीनौ नांव जनाइ ॥ १८९ ॥
रस याकौ याकै पढे जो व पढै चित लाइ ॥ फल
याकौ तब आप ही समझै सब वनाइ ॥ १९० ॥
संबत सत्रह से वरष ता ऊपर चौवीस ॥ सुकल
पष्य कार्त्तिक विषै दसमी सु तर जनीस ॥ १९१ ॥
इति श्री महाराजा श्री जसवंत सिंघ जी कृत आ
नंद विलास ग्रंथ संपूर्ण ॥ ॥ श्री कल्याणमस्तु
लिषतं दोसाऊं छ्छ दत श्री आंबेर मध्ये चैत मासे सं० १९४०

ण बिषई दुषित नकुणः। कषा ईश्वरी को णको वि
प तिहरै हीं णः॥१०५॥ को ण छिपई वै कलजे जाचा
को णउ शांनः॥ पर दुर्जन के दषै निहसो को णउमान
ण॥१०६॥ जो श्रारणागत कोंधै विनां सहै के दुःष्यः
सो अपराधी का पुरुसः। निलही रहै उन कैः॥१०७॥
लोई दान अरु सूरसो: कोई पंडित सुजाणः॥
गुणी साध अरु सुमति सो जाकै धन सु विज्ञान
॥१०८॥ हू पवीन गुण वंत सो सो ईस र कुलीनः
कुंडोआर कुरूप सो कहै न ये धन हीन॥१०९॥
वेपदी जे सा सकृं च कछु धिक निहीनः। पडे
उन्हके सदा दोषै चकु गवीणः॥११०॥ चुगली
करै कधन हरै धूंनी निलीछि चोरः। लै पर असु
कायर हृपं णवै सिके सबगेर॥१११॥ जे नर हैं
सुहावनी अहित हार लोहायः। हितकारी द्रव्या
सवै वको विरला होयः॥११२॥ सुषको सागर सां
तिजल गाको नां हि नैरां ति विनां जुंग दान है रूम
विनो जुगानहः॥११३॥ जो अंगा लोकां वरुका
समीर गुजराणः। परम रांमया जी कुंदिन
कवी धिलै जाणः॥११४॥

उत्तराफाल्गुन्यापादसिंह॥५॥उत्तराणांत्रयपादस्तोचित्रा
र्द्धंकन्या ह चित्रार्द्धस्वातिविशाखापादत्रयंतुल:७विशा
खापादमेकंअनुराधाजेष्ठांतंवृश्चिक८मूलंचपूर्वाषा
ढाउत्तराषाढापादमेकंधनु:९उत्तराणांत्रय:पादा:श्रवणध
निष्ठार्द्धंमकर:१०धनिष्ठार्द्धंशतभिषापूर्वाभद्रपदपा
दत्रयंकुंभ:११पूर्वाभद्रपदपादमेकंउत्तरारेवसांतंमी
न:॥१२॥ इतिवक्रराशिप्रमाणं॥अथराशय:॥मेष१
वृष२मिथुन३कर्क४सिंह५कन्या६तुल७वृश्चि८ध
नु९मकर१०कुंभ११मीन१२॥इतिराशिप्रमाणं॥ ॥
चुचेचोलालिलुलेलोअमेष:१इउएओवविवुवेवोवृ
ष:२ककिकुघङछकेकोहमिथुन:३हीहुहेहोडा
डिडुडेडोकर्क:४ममिमुमेमोटटिटुटेसिंह५टोपापिपु
षणठपेपोकन्या६रारिरुरेरोतातितुतेतुल:७तोननि
नुनेनोयवियुवृश्चिक:८ययोभभिभुधफढभेधनु:९भोजजि
जुजेजोखखिखुखेखोगगिमकर:१०गुगेगो
ससिसुसेसोदकुंभ:११दिदुथझञदेदोचचिमी
न:१२॥अथलालाभेष:१उवाहृवृष२कावामिथुन:३डाह
कर्क:४मालासिंह५पाठाकन्या६रातातुल:७नोजा
वृश्चिक:८भोजाधनु:९भाजामकर:१०गोदसाकुं

मः२दाचामानः२८इतिराशिग्रमाणे॥ ॥निजराशिस्थं
कराशिःफलंशेवेषु लाभुते॥जन्मस्थेऽर्कसुतेपुष्टिःशि
येनास्तिनिहतिः२ द्वितीयेराज्यसन्मानंचतुर्थेकलहागमं।
पंचमेऽर्थपरिक्लेशःषष्ठे वेनव्यासंयः२षष्ठेनक्षत्रागमं
सप्तेराजपूजाचसप्तमे॥अष्टमेप्राणसंदेहोनवमेतोगांग
वचः२८ दशमेकार्यनिष्पत्तिकादशेमेकादशोजय॥ द्वादशे
नराणांकेनमृत्युरेवनसंशय॥इतिचंद्रफलं॥तिथि
करणशताकं।नक्षत्रंचचतुर्गुणं॥वारंचाष्टगुणंज्ञेयं
करणंबोफसान्वितं॥५॥द्वात्रिंशद्गुणोयोगस्ताराषष्टीगुणातथा
चंद्रस्यसद्गुणंप्रोक्तंतस्माच्चंद्रबलाबलं॥६॥शुक्लपक्षेबलं
चंद्रःकृष्णेताराबलीयसी॥२पंचपनवम०अष्टम्राकृपदे३
कृवदयवा॥७॥मेषेचसिंहेधनुःपूर्वभागेदृषुचकंन्यामय
रेवजाम्यां॥मिथुनेतुलेकुंभेचपश्चिमायांककैटकोलीनस
उत्तरायां॥८॥सन्मुखेअर्थलाभायदक्षिणेसुखसंपद॥
ष्टितोमरणंचैववामचंद्रोधनक्षय॥९॥इतिचंद्रफलं ॥
जन्मऋक्षाद्गणेद्यावद्दिन ऋक्षंतुयावत॥नवभिश्च हरेद्
भागोशेषातारावितिर्दिशेत॥१०॥जन्मताराद्वितीयाच्चपष्ठीचं
चतुर्थिका।अष्टमानवमाताराषट्तारापुत्रावदा॥११॥यद
पिबलवान्चंद्रोऽस्तुनिनिःकथ्यतेशुभदोनवति॥त्रितीय
वदविडरितेत्रिरूपंचपसप्त०स्थितानारा१२ ॥१२॥

न्तेरा रविजोयाच धक्राक लोदूतवा पमदनी रान्ह
सावीरा ७ आनंदा दलवमा ७ धूम्रता ॥१२॥ इतिवारा
नल ॥ ॥ विष्कुंभ १ प्रीति २ आयुष्मान ३ सौभा
ग्य ४ शोभनस्तथा प अतिगंड ६ सुकर्मा ७ धृति ८ शू
ल ९ सथे वनग जो १० वृद्धि ११ ध्रुव १२ व्याघात १३ ह
र्षण १४ वज्र १५ सिद्धि १६ व्यतीपात १७ वरीयान १८
परिघ १९ शिव २० सिद्ध २१ साध्य २२ शुभ २३ शुक्ल २४

ब्रह्म २५ ऐंद्र २६ वैधृति २७ ॥ इति सताविसयोगाराम
नाम ॥ ॥ परिघार्द्धं व्यतीपात वैधृति सकलं सजेत् ॥
विष्कुंभे घटिका पंच शूले सप्त प्रकीर्तिता ॥ षट गंडे चा
ति गंडे नव व्याघाते वर्जयेत ॥२४॥ इति योगफल
॥ क्रांतीति तिथयोर्विप्रास्तुल्ये प्रतिपदादिषु ॥ पकोना
सम ४ तताचरोबं स्यात्रबवादिकं ॥२५॥ बवंच २ बाल

वंश्चैवकौलवंरतैतलंश्चगरंपवणिजंहविष्टि७रिमा-
ऊःकरणानिचराणिच॥२६॥अंतेकृष्णचतुर्दश्यांशकु
निःदर्शीद्विनागमोः॥नवेचतुष्पदंनागंकिंस्तुघ्नप्रतिपु
द्दले॥२७॥विष्टिविनावबाद्येषुकर्णेषुदशस्वपिचतुर्बे
ग्नोस्त्रिताकार्याकर्णीयाचस्रुनाकया॥२८॥स्कृप्तसमके
मेनागेतैतलेचचतुष्पदे॥गरेविष्टांनवेष्टिस्पवणिजेबा
लवेबवे॥२९॥ऊर्द्धस्थितस्यकिंस्तुघ्नेशकुनौकौलवे॥
भवेत्॥कनिष्ठमध्यष्टफलाधान्यार्घेनिष्टिषुक्रमात्॥इति
कर्णप्रकर्णं॥ ॥दिवोर्द्धप्रहरस्याज्यचतुर्थसप्तमस्तथा
द्वितीयपंचमोह्नष्टत्रिषष्टोरविपूर्बकः॥२१॥आद्यांतुधे
सूर्यस्कतेद्वितीयासोमेत्रितीयागुरौचतुर्थी॥षष्ठीकुजे
सप्तमकालस्त्रुक्रेसूर्योष्टमीकालकलाविवर्ज्याः॥२२॥
इतिकालवेला॥ ॥कुलिकंरात्रिविज्ञेयंगुरौचैवोप
कुलिकं॥कंटकेभौममेवंहीवारमादौगणेद्बुधो॥२३॥
मघार्कवारेन्द्वाद्विनेविशाखाःश्राद्राकुजेउस्कतेचमूलं
॥वह्निगुरौब्रह्मवतीचशुक्रे॥शनौचहस्तेयमघंटयो
गा॥२४॥यमघंटेगतेमृत्युःकालवेदकरग्रहे॥कर्कुपु
ष्पप्रतिष्ठायांशिशुजातोनजीवति॥२५॥इतियमघंट

चित्रा स्वात्यभमादिसेफ्रेशोषाढात्रयंरान्ना॥धनिष्ठादि
त्रयं भौमे मेबुधे चरेवतीत्रयं॥२६रोहिण्यादित्रयंजीवे
पुष्यत्रयंच भार्गवे॥त्रयंचोत्तराफाल्गुन्यांशनिवा
रेणवरजयेत्॥२७॥इतिउत्पातमृत्युकाणयोगः॥
मूलंश्रवणोत्तराभद्रपदाकृतिकाचपुनर्वसु॥पूर्वा
फाल्गुनीस्वातीनांसिद्धयोगप्रकीर्तिताः॥२८॥इ
तिसिद्धयोगः॥ ॥मासस्यप्रतिपदाश्रेष्ठाद्वितीयाका
र्यसाधिनी॥त्रितीयाक्षेममारोग्यचतुर्थीचधनक्ष
:॥२९॥पंचमीचश्रियानित्यंषष्ठीचकलहप्रीया॥
नपानसमायुक्तासप्तमीस्कषदास्मृताः॥३०॥अ
व्याधि बहुलानवम्यांमरणंध्रुवः दशमी नृमि
लामायएकादशीचसिद्धदाः॥३१॥द्वादशीप्राणसंदे
सर्वसिद्धात्र योदशी॥युक्तावापदिवाकृष्णाव
नीया चतुर्दशी॥३२॥पूर्णमास्यांअमावास्याप्रस्थ
नैवकारयेत्॥ नंदाभद्राजयारिक्तापूर्णाः
स्तिथयक्रमात्॥३३॥प्रतिपत्षष्ठेकादश्यांस्तांश
फलाः॥शुक्रेनंदाबुधेभद्रा मंदेरिक्ता
जया॥३४॥गुरोपूर्णारिवभारंगासिद्धाःसुत्ति

थयःक्रमात्॥३६॥जातवेदः२कमला३गिरिजा४गजव
दन४भुजंगा५पशुहृद्६दिनेश७त्रिवा८दुर्गा९यम१०वि
श्वा११च्युत१२मदने१३श्वर१४हरा निशाकृत१५पक्षगणे
शा१६तिथीशो हि दर्शसंज्ञके पितृगणो सभीश्वरात्॥त्र
योदशीटतीययोःस्मृतस्कविजयोपरे॥३७॥आदि
त्ये चाष्टमी हस्तअश्विनी चोत्तरात्रये॥मूलेपुष्यधनिष्ठ
योःसिद्धियोगाःप्रकीर्तिताः॥३८॥सूर्ये निशामा भरणी
द्वादशीचचतुर्दशीअनुराधामघाजेष्ठाविशाखासप्तमी
सदा॥३९॥सोमेचनवमीपुष्यश्रवणेरोहिणीमृगः॥द
शम्यांचसदामैत्रेसिद्धियोगाःप्रकीर्तिताः॥४०॥चंद्रे
चित्रोत्तराषाढपूर्वाषाढाविशाखयो॥एकादशंपंच
त्रयोदश्यांषष्टीयत्नेनवर्जयेत्॥४१॥भौमेषष्टीतृ
तीयाचअष्टमीचत्रयोदशी॥मूलाश्विनीमृगोअश्ले
षासिद्धाउत्तरभद्रपदाः॥४२॥मंगलेआर्द्राधनिष्ठायां
द्वितीयापूर्वभद्रपदा॥शतभीषाउत्तराषाढादश
म्यांचविवर्जयेत्॥४३॥बुधवारेद्वितीयाचसप्तमीद्वाद
शीशुच॥मृगोनुराधापुष्यंचसिद्धिःकीर्तिकरोहणी॥४४॥
बुधेधनिष्ठाभरणीअश्विनीमूलसंयुता॥तृतीयानवमी

चैत्रे प्रतिपदा रेवती त्यजेत् ॥४५॥ गुरौ दशमीपंचम्या
पूर्णिमास्यां विशाखयोः ॥ योस्माश्विन्योरनुराधासिद्धि
पुष्यपुनर्वसौ ॥४६॥ जावेष्टमीचतुर्थीचत्राद्याचो
त्तरफाल्गुनी ॥ रोहिणी ज्ञातनावाषष्ठीकृत्तिकामृग
वर्जयेत् ॥४७॥ शुक्रे प्रतिपदाषष्ठ्येकादश्या
त्रयोदशी ॥ पूर्वाफारेवतीश्विन्योः श्रुतिमैत्रादिति
ष्टमाः ॥४८॥ मार्गे वै रोहिणी ज्येष्ठा द्वितीयासप्तमाष्टु
वा ॥ बुधो श्लेषामघाश्चैव सर्वकर्माणि वर्जयेत् ॥४९॥
शनौ चतुर्थीनवमीच उर्दश्यांचरोहिणीः ॥ श्रवणे
श्रमघास्वातीपूर्वाफाल्गुनीसिद्धिदः ॥५०॥ सौरे
लोत्तराषाढारेवतीचित्रसप्तमी ॥ षष्ठीचोत्तरफाल्गु
नां पूर्वाषाढाविवर्जयेत् ॥५१॥ इति सिद्धियोगाः ॥ अ
कोमः ॥ पुनर्वसुपूर्वाद्याभिः सूर्यो दहति वांति घ
॥ वेद्युवेष्टु चरा त्रिस्थउमयोश्चरपि स्तयो ॥५२॥ ध
नुमीने द्वितीयाश्च चतुर्थी वृषकर्कयोः ॥ मेषकाके
टयोः षष्ठीकन्यामिथुने चाष्टमी ॥५३॥ दशमी
वृश्चिके सिंहे च दशाम मकरे तुले ॥ एताश्च तिथ
यो दग्धादोषैरा त्रिस्थिते रवौ ॥५४॥ पतीजा

उत्तजीवेतयदिसक्रसमोभवेत्॥विवाहेविधवानारीयात्रायांमरणंध्रुवं॥कृषासर्वेविनाशायनाऽिर्ष्ट्यं मूलनाशनं॥५५॥इतिअर्कदग्धातिथिफलं॥षष्ठी उत्तरानिवारेणश्चक्रेणैवतुसप्तमी॥अष्टमीगुरुसंयुक्तानवमीचंद्रदेहजे॥५६॥दशमीभूमिपुत्रेणसोमेएकादशीतथा॥सूर्येद्वादशीप्रोक्ताःककेटयोगप्रकीर्तिताः॥५७॥इतिककेटयोगः॥ पूर्वाति येचाश्विनीदेवासोमेमृगसिरस्तथा॥भौमेअश्लेषाचैवबुधेहस्तश्चयोयदेत्॥५८॥गुरौअनुराधाश्चैवशु त्तरषाढयो॥शनौशतभाषाचैवआनंदादि कीर्तिताः॥५९॥आनंद१काल२दंड३धूम्राक्ष४ जापति५सोम्य६ध्वांक्ष७ध्वज८श्रीवत्स९मुद्गर १०छत्र११मैत्र१२मानस१३पद्म१४लुंपक१५उत्पा १६मृत्यु१७काण१८सिद्धि१९शुभ२०अमृत२१मु सल२२गद२३मातंग२४राक्षस२५चर२६स्थिर २७वर्द्धमान२८इतिआनंदादियोगः॥आदित्ये हस्तेगुरुणैवपुष्यःसोमेनसोम्यं भृगुरेवतीच॥बुध धानुराधारोहिणीचसौमाश्विनीचामृतसिद्धयोगः॥

॥ ९० ॥ ॥ इति अमृतसिद्धयोगः ॥ सप्तम्यां रविवा रस्यात्पंचम्यां दैति योबुधः ॥ संव र्तौ ...योगो विवर्ज्यः शुभकर्म णि ... ॥ इति संवर्त्तौ योगः ॥ भर ण्यां ॥ इति ... ॥ कार्त्ति णी भानुना चैव सोमे चित्रा च कार्त्ति ताः ॥ कुजे चोत्तराषाढा धनिष्ठा च ... ॥ गुरौ चोत्तराफाल्गुन्यां शुक्रे ज्येष्ठा ... दहजः ॥ ... रेवती ... निसंवत्सर ... कार्त्तिका ॥ रेवतीरा ... विवाहे ... कार्त्तिका ॥ ... शुभं ... प्रवेशे ... मरणं ... सर्वे विनाशं ... मूल ... सर्वविनाशं ... इति जन्मनक्षत्रं ॥ ... ना ... इति ... नक्षत्राणां ... विष्टा ... पंचनक्षत्राणां ... हेम कंकणं ... सोमार्के ... ता ॥ हेम कंकणं ... ॥ इति चूडामणि ... ॥ ... मैत्र ग वै ॥ ... ॥ इति चूडामणि ... ॥ ... धनिष्ठायां चित्रा रेवतिनार ... उत्तरा ... मृग ... रिक्तातिथि ... ब्राह्मी ... प्रवेश ... कारयेत् ... ॥ ... जनीयता ... मबकुली भानुवारे निषिद्धा ... योग ... करतुला ... प्रवेशो ... विनयः ॥

तदंत्री॥२॥इतिनवधरप्रवेशमहूर्त्तः॥पुष्येश्वविष्टा
मृदुवायमूले थिराश्विनीविश्रवनेषुचहस्ते॥पक्षास्वति
ष्टावकुपुत्रपौत्रणीभवतिनार्यःपतिवल्लभाच॥१॥ना
रेणसूर्येणभवतिरोगाबुधेनवैधव्यकुजेनमृत्युः॥जी
वेंदुशुक्रेणशनैश्चरेणसिध्यंतिकार्याणिवधू प्रवे
शाः॥इतिपैसारैरोमहूर्त्तः॥जीवारिभास्करदिनेगुरुहस्त
मूलेब्रह्मेंदुविष्णुयवनोत्तरसौम्यमेषुकन्याकुलीरजु
षट्श्विक कीटलग्नेधविलवंधनविधिस्थनक्रवृ
षुनं॥इतिचांमरखाटीरोमहूर्त्तः॥कारत्रयेवैश्रवरेव
ताच दितिद्वयेचाश्विनीमेधुवेषु॥ज्ञात्वाशिशूनांनृते
चतदद्विलवितासुरूपदाभवंती॥१॥इतिपालणे
रोमहूर्त्तो॥हस्तेंदुमैत्राश्रवणाश्विनितिष्यपौष्णमूविष्टाच
पुनर्वसोचश्रेष्टानिधिष्ण्यानिनवप्रयाणेत्यक्त्वानि
पंचापदिमसप्त७तारा॥१॥इतिदेलाणेरोमहूर्त्तः॥
अर्कुङणगरूडः१कखगघङ२बिलाव२चछजझञ३सि
ह४टठडढण५स्वानथतथदधन६सर्पपफबभम७मूस
ईयरलवहिरण७शषसहमीनाछ॥इत्यष्टवर्गः॥दा
राम्यांचहतायायांक्षयदोपरेदले॥सप्तम्यांचचू
र्दश्यांविष्टिःपूर्वदलेस्मृतः॥ ॥कार्द

वशुलापक्षेपरेदले॥अथमासपूर्णिमावांचविषपूर्वी
दलेस्मृत:॥२॥इतिमासः॥पडिवा१बीज२पो
रसरतंदाबीज२सप्तमी७बारस१२कृतीजत्र
तेरस१३जयाचोथ४नवमीचवदश१४रि
मी८ तेरस१३जयाचोथनवमीचवदश१४रि
तापांचम५दशमी१०पूनम१५पूर्णा॥इतितिथि
शान॥मीनेमेषेवीलावीचत्वारेवृषकेभवेत
लेसत कंत्यार्यबाणधनक कंयोश्चातलग्नमवे
लेसन कंन्यायबाणधनक कंयोश्चातलग्नमवे
नीणिप्रसूतिकायांप्रवर्तते॥३॥

मे	वृ	मि	कर्क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी
३	४	५	५	५	५	५	५	५	५	४	३
३	४	५	५	५	५	५	५	५	३	११	३८
३८	११	३	[illegible]	५३	४७	३८	३८	४७	५३	[illegible]	[illegible]

मेषकर्कवृश्चिकयो८मीन:कुंभोवृष
मकरतुला७मृतोबुध:कन्या६मि
थुने ३प्रोक्ता.कर्कस्यचंद्रमा१
स्यान्मीन॥२धन्विनोजीव:राति
मेंकारकोभवे॥सिंहस्याधिपस्तर्व
इतिरासिस्वामी॥
कथितोगण:कोत्तमे॥२॥इतिरासिस्वामी॥

विमेषे तुले ७ प्रोक्ताः अजस्य १५ अ २८ स्त्रिकौ भौमस्य मृगगे
कौ च कंन्यामीने बुधस्य च जीवस्य कर्के मकरामीने
कन्ये सितस्य च ॥ तुलामेषौ च मंदस्य ७ उच्चनीचे ७ दाहृतः
॥२॥ इत्युच्चनीचानि ॥ रवींदुभौमगुरवो ऽशुक्रशनि
ाहवः स्वस्मिन् मित्राणि च लारिपरस्मिन् स्वात्रवः स्मृ
ताः ॥२॥ कंन्याराशिगृहं प्रोक्तं राहोः स्वं मिथुने स्मृतं ॥ राज
नीचं धनुर्बाणादिकं रानिबंदस्य चः ॥३॥ जीवास्ते भृगु
सत्कुजे गुरुगृहे स्यैव च मंदे गुरौ ॥ शुक्रे स्ते कं विदस्पणे
चसयने विस्मृ विसर्गे दिने ॥ ६ द्वे मार्गे वनंदे चसयने
मासाधिके तोह्ह जेत् कंन्यायां च विवाहिता च वनधू
वर्षोत्सरनो व्रजेत् ॥४॥ इति वर्षोत्सरेन ववधूदोषलाभो ॥
आदित्यात् सप्तमं कार्ष्णं भस्मयोगं विनिर्दिशेत् ॥ यत्र किं भ
चित्कुरुते कार्यं तत्सर्वं भस्म तां व्रजेत् ॥१॥ इति भस्म
योगः ॥ चतुर्थे ४ अष्टमे ८ नवमे ९ दशमे १० चत्रयोदशेरव
विंशादिनेषु सांधिष्ठे रवियोगस्तु नामिताः ॥१॥ एकस्तग
यं चास्म भजं तिगयम्ङसहसा ॥ तद्धरवियोगयएकग
यएमिगतानदीसंति ॥२॥ भद्राककर्टयोगेसुयमघंटग
लग्रहे ॥ सर्वेषांत्रवयोगानां रवियोगेन हन्यते ॥३॥ नभ
कालं कालपासादिन भद्राश्रवयोगकृत् ॥ सर्वे षांत्र
वयोगानां रवियोगेन हन्यते ॥४॥ इति रवियोगः ॥

कृत्तिकाभरणीमूलंश्लेषाश्रापुष्यपुनर्वसू ॥ मघाचित्राविशा
खाचश्रवणेऽर्द्रमस्तथा ॥२॥ एताश्चाम्लदारिष्यास्त्रीस्ना
नकारयेत् ॥ यदिस्नानंप्रकुर्वीतपुनःप्रसूतनजायते ॥
॥२॥ प्रतिपन्नवमीचैवषष्ठीमंगलशुक्रयोः ॥ स्नानज
न्मनिविधवास्त्रीस्नानंनकारयेत् ॥३॥ दशमीपुत्रना
शायस्वधनाशायत्रयोदशी ॥ द्वितीयाउभयनाशाय
तांस्नानंविवर्जयेत् ॥४॥ पैत्रोनुराधानिलरेवतीध्रुवप्र
जापतिर्वासवसौम्यधिष्ण्यं ॥ पूर्वात्रयंत्राणितथोत्तराणिभ
वाराङ्गनास्नानशुभानिभानि ॥५॥ इतिस्त्रीप्रसूतिस्नान
मुहूर्तः ॥ उत्तरारोहणीहस्तसौम्यपवनरेवती ॥ धरस्ता
स्वातीस्नात्वाचश्रनुराधाश्विनीध्रुवः ॥ इतिदशो [illegible] वणरो
मुहूर्तः ॥ पुष्येचादित्यचित्रपश्चतनयोश्चक्रोत्तरारेव
तीस्वातौवाजिविशाखामित्रसहितेभानौगुरौभार्गवे ॥
कुंभेकीटगृहेवृषेमृगपतौवंदेस्तुमेवान्वितेसनादर
रक्तांतपडंगकुरिकाधारणेनृपाणांहिता ॥२॥ इतिद्विपि
यारेकांधनरोममुहूर्तः ॥ अदितकमलनाथोचोत्तराचि
यविशाखाभवतिनिमषवाणेसंक्रमेवाणवेदैःशिवय
शिकथितोक्षयेपत्रिं
॥२॥
नारम्भमुहूर्तः ॥ इतिसंक्रांतमुहूर्तविचारः ॥ हस्तस्वातिभ

नुराधाश्रवणपुनर्वसुमृगाश्विनीपुष्यादिरेवत्यपिदेवग
णः॥३॥पूर्वोत्तरस्त्रोत्रयोभरण्याद्रारोहिण्यपिमृत्युगणोये
ष्टामूलंकृपंचधनिष्ठात्रश्लेषाकृतिकाचित्राविशाखाम
घापलादिगणः॥४॥इतिदेवतामनुष्यराक्षसगणः॥मृ
गादिपंचस्वपिमेषुमूलेहस्तादिकेचट्टतौत्रश्विनीपु
पूर्वोत्त्रेचश्रवणेचतद्वद्विद्यासमारंभसंतिसिद्धो
॥इतिविद्यारंभमहूर्तःसंपूर्णः॥समाप्तोयं॥संवत२७
[illegible]८वर्षेसाके१६५०प्रवर्त्तमानेमाहामांगल्यप्रदःमा
सोत्तमासेचैत्रमासेकृष्णपक्षेतिथौ२सोमवासरेलिष
तंठोजमोतीरामश्रीकृष्णप्रीतयें॥श्रीकृष्णसरणंमम॥

॥सूर्यादिसप्तमंरुष्यं नक्षत्रयोगं विनिर्दिशत्॥ यत्किंचित् कुरुते कार्यं तत्सर्वं तु समं भवेत्॥१॥ इति समयोगः॥ चतुर्थं षष्ठं नवमे दशमे चत्र्योदशे विंशदिने अश्विनीमघा मूला विशाखार्द्रा विनाशनाः॥२॥ कर्कटयोगे ध्रुवमर्थं गतद्रव्यं सर्वं नाशयेत्॥ योगानां रवियोगेन हन्यते॥३॥ इति रवियोगः॥ ॥
तिथि हस्तार्कपंचम्यो। षष्ठी मृगशिर चंद्रमा॥ भौमाश्विनी च सप्तम्यो बुधे अनुराधाष्टमी॥४॥ तृतीया गुरुपुष्ये च शुक्रे मातृ रेवती॥ दशमी शनिरोहिण्यां विषयोगाः प्रकीर्तिताः॥५॥ इति विषयोगः॥
प्रतिपदा मूल कि पंचम भरणी। अष्टमि कृत्तिका नवमि रोहिणी॥ दशमि अश्लेषा गुरुहि रेवती या॥ अयोग ज्वालामुखी कहीया॥६॥ जो जनमे तो जीवे नही वसे तो ऊजड थाय॥ सुहवपहरे चूडलो सबजा नर तो जाय॥७॥ इति ज्वालामुखीयोगः॥ ॥
अर्तीज सप्तमधरे दशमि तुजे दल हो यः॥ चवदशि धुरन्धारडेजु जो लोय॥ पाचे द्वो पधुरनमी एकादशीके अंतः॥ महलीदृन मलागतीउजल पष एक॥८॥ इति ॥ छायापादे स्पोनेन एकविंशता निच॥ लब्धां के घटिका दिया शेषांके पल नाद शान्॥१०॥ इति दिनमानं॥ सूर्यना...

वम्नेनघनाउते ॥ नवत्रिश्चहरेकाग । गतंरात्रि
स्फुटंजवेत् ॥११॥ इतिरात्रिमानं ॥ श्रवमोमत्रानी
सरवारैः । दस्न णगुरु एकलौ निवारैः । अर्कश्चिके प
ति मरुधीः । मंगल बुधे उत्तर विरुधी ॥१२॥ इति
हिसाश्रूल ॥ श्रवरो हिणि सांजलि मिल्ला । उत्तर
दस्नाकदत्ताण चित्राः । पश्चिमश्रवणं मकरसिगम
णं । हरिहरवंनपुरंदरमरणं ॥१३॥ इतिनक्षत्रदि
साश्रूल ॥ जोउगेसे पुबे दिजे स्हामि मल्हि सिंघा
रगिणिजे । जोणेजो सीमजबोम्मा लः । जहांरा नीश्च
रतहांहीकाल ॥१४॥ इतिकाल ॥ पडिवानवमी
दुबेः । द्वितीयादशमी उत्तरे ॥ तृतीया एकादशी अग्नि
योः । चतुर्थीद्वादशीनेरुतेः । पंचमीतेरसिदक्षिणेः ॥
उगचवदसिपश्चिमेः । सातमइति मवायवेः । आ
ठिमऊमावसिईशांनेः ॥१५॥ इ. उ. आ. न. द. प. वा
ई ॥१६॥ इतियोगिनीरोवासो ॥ मीनादोत्रयमादि
सो वसकन्यादिकत्रयः । वृश्चिकपात्रयं राहुः वर्जे
नीयश्चयत्नतः ॥१६॥ गढमढमंदिरजोलपगारः । स
न मुखराहु न कीजेबारः । मरेकलित्र क्लेनिर्धनहोय
केरेराहु सनिश्चेहोयः ॥१७॥ इतिसर्यबठराहुवा
। समाप्तः ॥

।।।।दशमी पंच पंचाशमद् पंचाश एकादशी।।अ एका
दशी परित्याज्य अतं कर्या द्वादशी।।१।। दशमी पल मे
कं च एकादशीद्वयं गताः। ना एकादशी परित्याज्य अ
तं कर्या द्वादशी।।२।। लगने स्थिता दिनकरकुजलेंग
पीजाइ श्री युतो वितनुते रुधिरप्रकोपं। कायस्थितो
अर्कं बीनिबक्र उपन्याजं।। जीवे तुलांगविबुधा पु
मकों तिदास्य।।३।।

।।अथ वर्ष विधि लिख्यते।। काव्य।। गताब्द वृंदा मुनि
बाण वेदैर् निघ्नो नृशोभो भूगजे विभक्ताः।। त्रिधा फलं
० १ १ गुला कीजे ४ ८
वारघटी पलानि। युजन्म वारादि युता भवंति।।१।।
स पाद मासं च सार्द्ध वंजन्म वारादि संयुतं।।

पहली तो गत वर्ष मांडीजे पछे सवाया कीजे:।।
पछै अर्द्ध कीजे:। पछै दूणा कीजे:। पछै सवायां
मे जन्म वार ने लीजै:। अरआधामे घडी जेली
जे:। सूर्योदयात्नी घडी ने लीजै:। अर दोणामे पल
ने लीजै:। जन्म लगन वेते मे गत वर्ष ने लीजै:।।
पछै सा ढा बारे १२।। तो भाग दीजे:। शेष आंक र
है तिको मुंथा ने जो णीजै:।।

वस्त्रनं नपना ठिते॥ नवत्रिश्च हरे काणं। गते रात्रि स्फुटं भवेत्॥११॥ इति रात्रिमानं॥ इरव कोमस्त्रानी सरवारे। दक्षण गुरु एकलौ। निवारे श्रके शुक्रे प विमरु थी। मंगल बुधे उत्तर विरुधी॥१२॥ इति दिसा शूल॥ इरवी रोहिणि सांलि मिस्का। उत्तर हस्त कदक्षण चित्रा। पश्चिम श्रवण मकर सिगम णं। हरिहरवं न पुरंदर मरणं॥१३॥ इति नक्षत्र दिसा शूल॥ जो उगे सो पुवे दिजे रविमहि सिंधा रगिणिजे। जो णे जो सीम रुपोम्मा लः। जहां राती श्च रत हांही काल॥१४॥ इति काल॥ पडिवा नवमी पूर्वे। द्वितीया दशमी उत्तरे॥ त्रतीया एकादशी अग्नि योः। चतुर्थी द्वादशी नैरुते। पंचमी तेरसि दक्षणे॥ ठगच वदसि पश्चिमे। सातम दृति मवायव्ये। आ ष्टमि अमावसि ईशाने॥१५॥ इ.उ.आ.न.द.प.वा. ई.॥१॥ इति योगिनी रो वासो॥ मीनादी त्रय मादि त्ये बसकत्या दिक त्रयः। दक्षिकया त्रयं राहुः वर्जनीय श्च यत्नतः॥१६॥ गढ मढ मंदिर जो लघ गारः। स न पुत्र राहु न कीजे बारः। मरे कलित्र को निर्धन होय कैरे राहु पुनि श्चे तीय॥१७॥ इति सूर्य वच्छ राहु वा

॥समाप्तः॥

॥ ॥दशमीपंचमेषाशाम्स्दर्शमानो[illegible]दशी॥[illegible]
दशीपरित्याज्यअतंकर्यीद्वादशी॥[illegible]
कंच एकादशीद्विवंगतः। [illegible]एकादशी[illegible]
तंकर्यीद्वादशी॥२॥लगने[illegible]
पीजाइष्टी[illegible] विनुनुने[illegible]कोप।[illegible]
स्कर्बीनिबक्रउपराज॥जीवै[illegible]
षष्ठातिदास्य॥२॥
॥अथवर्षविधि लिख्यते॥काव्य॥गता[illegible]
[illegible]कुलाकीजे॥[illegible]
वारघटीपलांनि॥ ऊजन्मवारान्वि[illegible]
मपादमार्द्धचसार्द्धजन्मवारा दि[illegible]॥

पहलीतो गतवर्ष मांडीजे पछै ध्रुवांकीजै॥
पछै अर्द्धकीजै।पछै दोठाकीजै।पछै[illegible]
मै जन्मरीवार नेलीजै।[illegible]
जै।सूर्योदयात्नीघडीनेलीजै।[illegible]
नेलीजै।जन्मलग्नवेतेमेगतवर्षनेलीजै॥
पछै साठावारे[illegible]॥तोनागदीजै।[illegible]कर
है तिको मुथारोजा लीजै॥

वस्त्रं न ष नाडितं ॥ नवनिश्च हरे कार्ग । गतं रात्रि
स्फुटं भवेत ॥११॥ इति रात्रि मानं ॥ इरब मोमरानी
सरवारैः । दक्षण गुरु एकलौ । निवारेः । अर्क शुक्रे प
क्षिमदधीः । मंगल बुधे उत्तर विदधीः ॥१२॥ इति
दिसाशूल ॥ इरबरो हि लि सांजलि मिश्राः । उत्तर
हस्त कदक्षण चित्राः । पश्चिम श्रवणं मकर सिगम
णं । हरि हरवं न पुरंदर मरणं ॥१३॥ इति नक्षत्र दि
साशूल ॥ जो उगेस पुबे दिजे स्त्रिम लिहि सिंधा
र गिणिजेः । जो ए जो सीमजमोक्षा लः । जहां रानी
रत हांही काल ॥१४॥ इति काल ॥ पडिवा नवमी अग्नि
दुबेः । द्वितीया दशमी उत्तरे ॥ तृतीया एकादशी नै
ऋतेः । पंचमी तेरसि दक्षणेः ॥ चतुर्थी द्वादशी वा
योः । चतुर्थी द्वादशी ने ऋतेः । पंचमी तेरसि दक्षणेः । अमा
वास्या चवदसि पश्चिमेः । सातम इति मकायम्बेः । आ
शिमन्ना व सिईशां नेः ॥१५॥ इ. उ. आ. न. द. प. वा.
ई. ॥१६॥ इति जोगिनी रो वासो ॥ मीनादी त्रय मादि
त्यो बसे कन्यादिक त्रयः । वृश्चिकपात्रयं राहुः वर्जनी
य क्षयं ततः ॥१८॥ गढ मढ मंदिर जो लघ गारः । स
न मुख राहु न कीजे बारः । मेरे कालि त्रके निर्द्धन होयः
के रे राहु सुनिश्चे होयः ॥१७॥ इति सूर्य बिठराहु वा
समाप्तः ॥

॥ ॥दशमीपंचपंचाशमद्‌पंचाश एकादशी॥ ॥अ एका
दशीपरित्याज्य अन्तं कार्या द्वादशी॥१॥ दशमीपलमे
कंच एकादशीद्वयं गताः। ना एकादशी परित्याज्य व्र
तं कार्या द्वादशी॥२॥ लग्ने स्थिते दिनकर क्रमतेंग
पीडा षष्ठी सुतो वितनुते रुधिरप्रकोपं। कामस्तुता
अकं विनिवक्र उपनाज। जीवे तु लागवित्त धाम्
पकांति दास्य॥३॥

॥अथ वर्षविधि लिख्यते॥ काव्य॥ गताह्‌दंदाभुनि
घ्नाब्दवृंदेन भो नु [illegible] मजे विभक्ता॥ त्रिधा फलं
० १ १ गुला कीजै ०
वारघटीपलानि सुज [illegible] वारा निगुता निनानि॥१॥
स पाद मार्द्धं च सार्द्ध [illegible] जन्मवारादिसंयुतं॥

पहली तो गतवर्ष मांडीजे पछै सवाया कीजे:॥
पछै अद्ध कीजै:। पछै दोढा कीजै:। पछै सवायां
मे जन्म रो वार ने लीजै:। अर आधा मे घडी जो ली
जै:। सूर्योदयात् री घडी ने लीजै:। अर दोढां मे पल
ने लीजै:। जन्म लग्न वेतै मे गतवर्ष ने लीजै:॥
पछै साढाबारे १२॥ रो भाग दीजै:। शेष अंक रह
है तिको मुंथा रो भाग लीजै:॥

॥श्रीगणेशायनमः॥ ॥अथमहूर्त्तलिख्य
ते॥ ॥आदित्येअश्वनीदेया॥सोमेमृगसिर
स्तथा॥भोमेअश्लेसांचैव॥बुधेहस्तप्रजोजये॥
त॥१॥गुरूअनुराधाचैव॥शुक्रेउत्तरषाढयो
॥शनौश्रातिसिषाचैव॥आनंदादिप्रकीर्त्तिता
॥२॥इतिआनंदादिजोग॥ ॥नगुरोदक्षणं
गछे॥नपूर्वोशनिसोमयो॥शुक्राअर्कयोनप्र
तीच्यां॥नउत्तरंबुधभोमयो॥१॥इतिवारदि
साशूल॥ ॥पूर्वरोहिणमृगेरेमिता॥उत्तरा
हस्तकदक्षणचित्रा॥पछिमश्रवण॥मकरसि
गमण॥हरिहरब्रंमपुरंदरमरण॥१॥इतिकू
डेरोमहूर्त्त॥ ॥पुष्यमैत्रधनिष्टयां॥चित्रा॥
रेवतिवारुणी॥उत्तरात्रयमृगोब्राह्मी॥प्रवेसं
कारयेगृहे॥१॥रिक्तातिथिर्भूसुतभानुवारे
नंद्याश्वयोगा॥परिवर्ज्जनीयो॥मेषकुलीरोम
करतुलाश्च॥त्याज्या॥प्रवेसेहितथातदंसा॥२
॥इतिनवाघरप्रवेसमहूर्त्त॥ ॥पुष्येहस्ते
तथादित्ये॥मृगेचश्रवणेतथा॥जलप्रज्ञाचा॥

नारीणां। गरजसंपद्यतिसुषं॥४॥ इतित्रलवा
षजणमृक्तर्त्रं॥ ।पिञ्जेनुराधा नलरेवती
।प्रजापतिर्वासवसोमधिष्ठे।पूर्वात्रयंत्रीणत
थोतरांणि।वारंगनास्त्रांनसुभानितानि॥१
इतिदश्मत्रवणरोमक्तर्त्रं। ।कृतिकाभरणी
मूलंआश्रा पुष्य३नर्दसुमघाचित्राविशाषाच
।श्रवणेदृशमस्तथा।पताप्राणहरारिक्ता।स्त्री
स्नांननकारयेत।दशमीअत्रनाञ्जाय।सर्वना
शायत्रयोदशी।कृतीयाञनयनाशाय।ता
सुस्नानंनकारयेत।जदिस्नानंप्रकुर्वीत।पु
नःप्रसूतिनजायते।प्रतिपःनवमीचैव।षष्ठी
मंगलशुक्रयो।स्त्रीजन्मनविधवाता।सुस्नानं
नकारयेत॥१॥ ।इतिदसत्रवणवर्जीनीका
मक्तर्त्रं॥१॥जीवारभास्करदिने।गुरुहस्तमू
ले।वलेन्दुविष्णुपवनोत्तरसोमपेष्णु।कंन्या
कुलीरझषवृश्चिककीटलग्ने।धवलि।वंध
नविधिःसुजन्मतूवधूनां॥१ ।इतिचामरस्त्रा
टीरोमक्तर्त्रं॥ ।पुष्येधनिष्टामृगवायमूले

थिराश्विनीवैश्रवमघाचहस्तो।पषप्रतिष्ठा
बहुपुत्रपोत्रणी।जवंतिनार्या:प्रतिबलस्
चा।पषप्रतिष्ठाबहुपुत्रपोत्री।जवंतिनार्या
पतिबलस्याच।१ वारेण।सूर्येणजवंतिरोग।
बुधेनवैधव्यकुजेनमृत्यु।जीवेडशुक्रेणत्रा
नीश्चरेण।सीध्यंतिकार्याणिवधूप्रवेशा।१।
इतिपैसारेरोमहूर्त्त। ।मूलार्द्रेनमघाद्विदे
वजरणी।सार्प्यांणिपूर्वात्रयं।ज्योतिर्विद्लि
:अधोमुषंदिनवकं:जं।नामिदंकीर्त्तितं।वा
पीकूपतडागगर्त्तपरिषा।षातोनिधिसूछति
षपोदूतबिलप्रवेसगणितारंभाप्रतित्रेष्यते
गंत्रीजंत्रहलप्रवाहगमना।रंभाप्रसिध्यंतिच
।१।रांगषोदीजे।वावमीषुणाइजे।कूवोषा
णांइजै।तलावषणांइजै।षाईषुदाइजे।वा
वडीषोदाइजे।इम्मरधतीमाहेगाडीजे।जूवे
रमीजै।हतपणोकीजै।सुरंगषोदीजे।गाडी
कीजे।घरटीरोपीजे।हलबाहीजे।इतराथो
ककीजै।अधोमुषनक्षत्रामांहेकीजै।१ ।

हस्तेउमैत्रांश्रवणाश्वतिष्य।पौष्णाश्वविष्ण
पुनर्वसुष्व।प्रोक्तंनिधिस्यानिनवस्त्रयाणि
त्यक्त्वात्रिपंचादिमसप्ततारा।।।।इतिह
लोणेरोमक्तर्त्ते।। ।जीवास्तेगुरुमन्युषेगुरु
गृहे।सूर्यचर्गेहेगुरो।शुक्रास्तेकविहस्ताणे
वयायने।विशुविरुधेदिने।ह्यधेजार्गवनंत्र
नेवर्तयते।मांसाधिकेचब्रजेत्।कन्यासूप
तिविवाहितानववस्त्रात्वर्षान्तपरंनोब्रजेत्।
इतिनववस्त्रप्रवेसमक्त्रर्ते।।१।।आर्कसोमेन
थाजीवेजीर्णमिश्रोयनेभुच।रक्तश्राव
विधातव्योरोगभेदोचकारयेत्।१।नवरात्र
आर्द्रपद्देवा।हित्वासर्वदिनानिचरक्तश्रा
वोप्रशस्तत।वर्जियत्वादिपंचकं।१।
इतिलोहीकढावणेरोमक्तर्त्ते।। ।हस्तादिपं
चकेअश्वरेवत्युसनिष्ठनर्वसु।धनिष्ठपुष्य
शुक्रगुरुज्ञा।भुजदावस्त्रपरिधाने।१।आ
दित्येजीर्णितिवस्त्रं।सोमेनित्यंजलार्द्रिता।अं
गारेवदहेत्पाग्नि।बुधेचार्थःसमागमः।मत्ति
नेचसदावस्त्रे।सर्वतत्रानीश्वरंहतिः।१।इ

नवीवस्त्रपरिहरणेरोमकृत्तं॥१॥ ।दिना-
करनषरुणसंख्या।चंद्रमाम्योमपणवाणे
।द्वितनगजा।श्व२णचंद्रजषट्पद्दारं
णि।उ।निरसगुणेरुद्रसंख्या।वाक्यपति
भागपणवाणेमयनगुणच४२राक्षा।स
स्तेशुक्रसंख्या।२। ।इतिदिनदशाफलं
।२। ।धातयुगमहयोमैत्रं।श्रुतियुगमंक
रत्रयं।पुनर्वसुहयंपुष्या।मूलंवापुत्तरात्र
यं।विषमोवत्सरोमासो।मार्गोमेषश्चफा-
ल्गुने।मकरेमिथुनेमीने।लग्नेकन्यातुला
धर।लोमार्कवर्जितावारागृह्यतेचद्विरागा-
मषष्ठीरिक्ताद्वादशीचाअमावास्याचव-
र्जिता।२। ।इतिद्विरागमनः।वेवधामकृत्तं॥
नवेसूषणेमैत्रपुष्येचसार्के।करेदस्त्रचि-
त्रानिलेचादितौचा।गुरूश्चंद्रशुक्रार्कसौम्य
सुवारे।तिथौनंदपूर्णाजया।द्वादशाखा।१
।इतिद्वारसाषा।बारोतच्चढंवणमकृत्तं॥।
बरस्यभास्करबलं।कंन्यायांचगुरूर्बलं।द
योचंद्रबलंग्राह्यं।नान्यथास्याद्विवाहनं।१।

बरंबलम्यंतीक्ष्णं३॥कंन्यायाचवृहस्पति
॥द्वयोचंद्रबलंग्राह्यं॥पाणिग्रहणिकर्मणि
२॥चतुर्थगोवादशगोष्टमश्च॥नमन्यतेनास्त
रणपूज्जं॥आद्येद्वितीयेनवपंचमस्तो॥सहस्र
रश्मोप्रवदंतिपूज्जं॥३॥त्रितीयेषष्ठगश्चैवाद
शमेकादशस्तथा॥रविशुभ्रोनिगदितो॥वा
रस्येवकरग्रहे॥४॥द्वादशोनिधनेतुर्ये॥देवा
चार्यगतोयदा॥पूजातत्रनकर्तव्या॥विवाहे
प्राणनासनं॥५॥द्वितीयेपंचमेचैव॥सप्तमेन
वमेतथा॥एकादशेगुरोनार्या॥विवाहेस्यात्
शुभावहा॥६॥त्र्याद्येगुरोतृतीयेचाषष्ठेचद
शमेपिवा॥पूज्जांकृत्वाततःकार्यो॥विवाहेशु
भमिच्छता॥७॥पंचवर्षाभवेद्गोरी॥कंन्या॥चस
प्तवर्षका॥कांताचनववर्षाचा॥महिला॥द्वादशी
वर्षिका॥८॥संप्रप्तेकादशेवर्षे॥कंन्यायांजो
नविवाहिता॥मासिमासिरजस्तस्यां॥पिता॥पि
वतिसोणितं॥९॥माताचैवपिताचैवज्येष्ठभ्रा
तातथैवच॥त्रयस्तेनरकंयांति॥दृष्ट्वाकंन्या

रजस्वला।२०।अथ मंत्रअष्टादसदोषकंहि।
वै।वेधंलतातथापातं।नक्षत्रग्रहदूषितं।
कुलिकंयोगदोषंतु।कुमारंपरिवर्जये।
त्।११।रिक्तातिथिगंमृतं।दृष्टिव्यतिपातवै
धृतौ।क्रूरग्रहयुतंचंद्रं।ग्रहाणांजन्मऋक्ष
कं।१२।एकार्गलयमघंटश्च।चंद्रावस्थाउ
पग्रहं।एतेअष्टादशदोषादिनेविस्पाततो
लग्नं।१३।लतापातंचवेधंच।युतियामित्रमे
वच।उपग्रहैकार्गलंचैव।विवाहेसप्तवर्ज्ज
येत्।१४।पंचोर्ध्वस्थापयेद्रेषा।पंचतिर्यक्
स्थितातथा।द्विद्विचैवचतुष्कोण।लिखेद्वि
द्वानुप्रयत्नता।१५।ईशानक्रूणकृतिकादि
नां।लिखेत्सुधी।ग्रहांस्तत्रैवदातव्या।यो
यत्रप्रतिवर्त्तते।१६।रिंदेवादश्यामुक्ताः।रा
स्मिरेवणीसूनुस्मृतीयेगुराषष्टंचाष्टमर्के
जश्चसुस्तो।हृतिस्फुटलत्तया।पश्चात्सम
मभिउजश्वन।वमाराजः।सितपंचमा।दावि
शं।परिहरणमूर्त्तिरुडपःसताऊयेत्नेतरा।१७

।रविलतावितद्‌रीनित्यंकोजीसमादिश्या।
मरणं।चाष्टीत्रांशंक्कुर्यात।बोधीनाशकरे
त्येचा।६। ।धनमीनेत्रुतीयाचचत्रुरथीवृ
षकन्ययो:मेषकर्ककटीयोरषष्ठी:कंन्यामेथु
नेचाष्टमीदसमीवृश्चकेसंघेद्वादसीमकरेतु
लेग्यातथ्यातथीयोरदग्धादत्तदत्तराशेत।
थेरवौ। ।इतिअर्कदगधा। ।मृगपुष्या।
अश्वंनीचित्रा।अनुराधारेवतीकरससीत्व
द्स्वातिशुक्रव्यापारेसुषदायका। ।इतिव्या
पारकरणरोमहूर्त।२। ।श्रीरस्तु।। १
।।६।।रेवेनुराधानलरेवतीस्मुगजौपतिवौश
वसोम्ग धनष्ट:।सर्वीत्रयंश्रीनचीलरांए।वा
रांगनास्नानवृक्षनानितानि।।१।।

॥ संवत १७७ वैसाषवदि ११ राजा अभैसिंघजी
बीकानेर रै सहर मै अमल कीयो तिको भीवण
सुदि १ जोधपुर कुच कीयो मा ३ दिन परस्या
॥ नेडारी रतनचंद अर मोदी टीकुदास बीकानेर को
उलै अर अभैसिंघजी रै उकैम सुकुंवर अमर
सिंघजी नु बीकानेर दिरावण नै आया था सु भी १८०४
कीनी कमैरो सुदि १२ आया सु भीवण वदि १ मकरजं
गरी लडाई हुई रतनचंद को म आयो अर उमरा
व ४ बडा अर और ही लोक घणो कीम आया पछै
नौजका नागी अर महाराजा श्री गजसिंहजी री फतै हु

॥श्रीगणेशाय नमः॥ अथ तर्पणप्रारंभविधि लिख्य
ते॥ ॥ॐकारश्री विष्णु विष्णुर्गणपतिस्तृप्यंतु
ब्रह्मादयांसुरा आद्याः कश्यपो द्विजपन्नगाः। आ
दित्यावसवो रुद्राः मनवो ग्रहतारिका॥१॥ वि
श्वेदेवाश्च दिग्पालाः सप्तसागरनद्यलाः। विद्या
धराश्च गंधर्वा पिशाचोरगराक्षसाः॥२॥ छिन्न
तस्कृतो वहिनि। पद्मा मार्कंडेय तिर्यंच रागाद्या दिगजादे
वजा नवमीगावो यज्ञा सुरसुराः किंनरा सरसिद्धा गणान्नूता सर्प
दाणः॥ अथ उदयकाले कपालश्च अनस्य तिसमनलया ब्रो
मधोदेवता श्री ऐं बलं ॐ वै तिनिः॥ पौं स्वाहाकार वषट्कारः
स्वधाकार सरस्वती। सवेदाश्चैव गायत्री पहदेवोपी सता हरिः।
... निरक्षोभां सप्तेताकालपेकचा स्वेदजाश्च जौश्चैवउ
... चारिणेतमामा
... हरतत्व द्विसमा
पायनाभावदोयनसः ...
लं॥ अथ सनकादिमनुष्येभ्यः सनक स्तृप्यतुः सनातनस्तृ
प्यंतुः कपिलस्तृप्यंतु ओंस्तृप्यंतुः पंचशिखास्तृप्यंतां स्तृप्यंतुः धु
वोध्रुवस्य सोमस्यांशा पश्चैवा निलोनलः प्रतिश्च स प्रजापतिश्च
तेध्रुम पित्रमो नमः॥१॥ ततोपसव्यं द्वितीयदर्भ्येतिल जवमिश्र
युंप्रजापतिस्तृप्यंतु सोमपास्त्र स्तृप्यंतुः॥ यमाय नमः धर्मराजा
य नमः मृत्युवे नमः अंतकाय नमः वैवस्वताय नमः उदंबराय नमः द
ध्नाय नमः। कालाय नमः नीलाय नमः वृकोदराय नमः परमेष्ठिने सर्व
भूतक्षयाय नमः। चित्राय नमः चित्रगुप्ताय नमः एते तेचतु दशाय मास्तृप्यंतमस्तृ
प्यंतुः इति तर्पण संपूर्णं॥ ॥ ॥१०॥ ॥
॥ अथ चेलाकु कनणणा नगुलणा मारक वोटी अ
रवती करणां॥ जो कबेहो अपडे मा एसो च्यारि॥
तो न्याई बेर उमद्धे आदि॥१॥

(१)॥श्रीपरमात्मेनमः॥अथनागदमणछंदभुजंगालिख्य

३॥वलतोसारदवरनऊसारदकरोपसाय॥वनाडउ

गांसिरैजदुपतिकीआजाय;॥१॥अनेकश्रणनैयाडीया

तनडांचवादंत;॥केयालणेयनदायांकेयैयानकरंत;

॥२॥क्तोईनदीठेकान्हवासुणेयोनलीलासंध;॥आपनै

डेऊमलैवाजावाडणखंध;॥३॥अवनीमारत तार

जागेपमजुगत;॥नाघविहांणेनितनवेनवेविहांणे

॥४॥वंदभुजंग॥विहांणेनवैनाघजागेनहेला;

द्वेनाधेनगोवालहेला;॥जगाडेजसोदाजडेना

जागे;॥महामाटव्रूमेनवानितमागे;॥जिमाडेजिके

नावतालोगजांण;॥मरोसेजसोदाजामैवन्नायाण॥

रोगेअघाटेकायेअोचमंत॥कस्संग्रहेयानवाड

किसनं;॥लीयेलारसंगारगवारलाला;॥कोम्ब

कोजमनानटकाला;॥कणेगांमआगमऊमास

ला;॥हरेवाहरेवाहवेलीहवेली;॥मरेमांगसि

हरमारगमाले;॥वहेमांवलीवजसेरांकिवाले;॥

हेहरेहेकरे धेनहा को।।ऊरोमैवनीनंदकुमारजाने।
हाराणीयांत्र्यावलाजुलसावे।।नगहांनतीधेनगोपी
लावे।।यकेवेवटैचोहटैस्त्रायतजनी।।संभालेलीवा।
घगोपीसरूपी।।ऊवैनंदरीधेनसंधेनहेला।।मिलैना
लाजांणश्रीरंगमेला।।पुरैनैरनेसारकाधेयरटे।।त्रि
णीतरेउलरेसंगतटे।।महकंतसूधेतणोसोहमाथे।।
रमेदिरेतिलकेवैणहाथे।।वाईवासलसगलात्र्यंग
ाता।।गलैमालवृजवालगोवालग्याता।।सवेसांव
लीत्र्यावलीवृजमाहा।।जमनेतटेरांणत्र्यहारजादा।।र
मेवासथैसाथकोहैकरारे।।कहाकीजीयेकांनमारी
बिनागे।।मैकुंवरेनापसारीविसारी।।कीयासारया
जोधवेवेकनारी।।पुयेपारपाउरचिडुंपारयासे।।
येलऊटीमजगेडीकलासे।।गुडेगेडीयागीदमेदानग
रे।।घणेघूमरेऊवरेघेरघेरे।।मांजत्र्यावतोऊउलोहेको
रे।।फरारामिलेदोटकैघोटफेरे।।मांजीत्र्याकुडेमांज
येसेलमाते।।रमेसंगगोवालीयेरंगराते।।मिलेचाव
त्र्यांमोसामीदोटमाथे।।ऊवेहथमलीतणोहालहाथे
वंदावेघएसांकडेदोटचाडे।।जमनांतणेनाथीयोन

रजाउे:।।दआोलारकान्हैचढेव्रमडली:।।मरीजंफकाली
व्हेहैनागनाली।।कालीनागसंकान्हसेनालकेवा:
।।लोधीजाणरेटेदहेमकलेवा:।।ऊवोइसरोमेल
तेमेलमा घा:।।हेरेऊतरीबालगोवालहाथ:।।करे
त्रिषकनोनमउे वकनो:।।जोवेधनश्रंकारका
वेजमतो:।।जइनाथकालासरसनाथजोउे:।।छणनोमच
लीचढनवानघोडे:।।ऊमोत्रावगोवालऊरंतत्रारे:।।दहा
कारहकारसंसारसारे:।।स्कणोनातपद्मातमातासनेहो:।।
जसोदादलाकंवलाअंमजेहो:।।संवाहेसषोलारवाल
सवांणो:।।रहावोविचालेधकाव्रजरांणो:।।तरेनंदरी।।
नारित्रिदेरवोले:।।घटेऊपरेएकदोलाधिलोले:।।जो
तैजोवतऊधमेलाजसोदा:।।बावदावोऊयकान्हवो
मेघवृंदा:।।नदेलोकनेनारऊरावदती:।।कान्हईयो
कांन्हईयोजसोदाकदती:।।कालंदीतगोत्रालऊरत
कंठ:।।गवोतागचिंतामणीरकोगव:।।बलिदेवऊ
छै दिषावोसदांमा:।।रमेमांमतवोमजोवेतरामा:।।
मदारीदहटेतेनदीलादलोयो:।।मऊजोयमोवालऊरं

गोपी ।। आनी छूटा का कारे म स आर ।। थांभे रांभ
जन हेका मथा ।। नव एक ज सोदर बार आवे ।
मिले नाराण हेक हेका मिलावे ।। इसे नाल गो नाल डीमे
अवं सा ।। राहीना गण देवली देवर सा ।। नयणा गसुत्री
अत्र रूप जोती ।। मह मेद जाती तणे नाक मोती ।। पीण
सांवलो गा मपीला पिछोरा ।। कपेळ उपरे नाग ठौ पैक
दोरा ।। पाये छूघरा टेलक्का णंदरज ।। गले माल मो
ती फूले माल गुंजा ।। वीचे फुलराण कचोको बिराजे
जि सोर डवा हरा न सराजे ।। बिकुवा हे बाजू तणा
बांधवादे ।। मिणां जो ति हीरा तणी नग मा हे ।। अही नार
जय माल लक्ष्मी ल जंवी ।। मुहचेव नैल टके हुहे
वी ।। सबे सुंदरा मंदरी देष सो ही ।। वले दाड मी दं
वो की विमोही ।। अधूरे अमृत नजा वेअघाई ।। मि
से कुंडला कान कपोल झांई ।। इसे ना सिका सुघ
प ककेरी ।। कली चंपजा णे ललीलपकेरी ।। नु
नेहदीप ... रचयं कजने तः ।। सो भा मीन षंज नम

सहेत॥उऊमेकुटोसामचादेविदोहे।ज

मेतीकस्तुतासप्रीजीएलोहे॥स्रलीसेक

लीजेणकीघोत्र लके॥तीणकेसरीक

सत्रीतिलके॥बाघेचोलमेरगरजीवि

गी॥सोहेऊपरपगमेगीसुरजी।चवेन

गणचेडिकामोरचेहो।विचेचेपपरथघ

टात्र ही।स्रारोहेसरोहेकरेत्रवलाके॥

रघोनामलाकावणोराजलोके।हीन

गणीकुणजेकुमित्राव॥हीरेथवारजे

ऊलराया॥ऊवारूपमेदेवदमेहेरानं॥ज

पेजाणसीनागरामोजतेनं॥स्रेनादामवव

लहेसस्त्रेवार॥पगलपगलमेहलेपघ

री॥रहेलोघरदोवमोजरहोऊ॥मोरोघ

वेराटत्रघीनमाऊ॥चमकेचमकेचव

त्रेती॥ललपयलागुलुलेलणलेती॥

णारूपमेवे दसंपेषसेई ।नउ नागरी नागरी नारिवेह ।१
सुमे हम्रां एम्द देषमुरकी ।। न्हूलारे नलेनाथनां षासु
ती ।। कगइन्तन्रायात्रठैआजकेहा ।।गदेनायरो न्ह
।ये सायगेहा ।। नोलीनागणीनावाँयोगेह न्हलो ।। दी
।आपणीलाजलेयेदडुलो ।। षटकैमनेनागणीबोल
ारो ।। ग्र न्हजागसीमुऊयाबायथारो ।। कोलीनागसुं
ताजायेबेगकानो ।। परातातसोऊंचदैमातयानो ।। ।
त्याईनागणीबोलयहानिकासे ।। वसेरसणडसणवि
षनासे ।। कंहीकोरचांपारदेआवकावे ।। ईसीबोल
देषेदयामुऊआवे ।। हजारांमुषांजागसीनागदेवा ।
लडाबोनवाडैनिराधारलेवा ।। महाकालकालीन
कुं बोलमानें ।। यडीदोतडीआजस्वाआयांनें ।
जांवेनागणीनाम्रवैसा ... जगउो । अठेमाड
त्योआजवेनेअर्थोडो ।। रहाजेईसामातआ
गेरहालो ।। चवे बोल्लषपदायत्रकालचालो
नयरानथारेआजेबालव्याला ।। चलेवाकरे

तैसमाटु घनीला:।बलले नमी जेघ रु मात आले:।
नरीजैनही आनसुंबाघनोले:।।जुउवाजहु नाघस
लीजगवो:।अजे छुपपेपीनरीआउ आवे:।जूनोवेम
धारोपराछे धजेहो:।आलीनागसुंजुधरोलागकहो
।।वनावालदेमोविसुंकालवेडे:।वटवीआरवान
ही रुजुवडे:।हुरंगाटुवाहाति दलाटुमुला:।सुरी
रानकुंआंवलाउघनला:।नकुंपेदलेदेलेमेघ
नदा:।जुउवानकुंजमनानांमजदा:।समालानुजी
लालेकालानसाघी:।हगलायरालादेगलानदप
घी:।।घोउंरानजरानहीघाघरसा:।नहीघूंघरघा
बरेरोलघीदा:।।नहीवांदबाजेदजारीनमेघी:।नहीजी
एअंगेमेगाजीवरेमी:।सवेहाथलेघदरंगेनगदे:।
घीसावीदसालेदमोजानपाये:।जजीवऊडीटोपनी
हीजदद:।जपनीनवीनकनीनगदा:।करोउबनी
नानहीघूरसी:।कुमोलीकुटारीनकुमनकुसी:
कारनेनागनरनरटवी:।वघीरनवीरांकवी
वैसी:।नकेनीदकेरीननीसाहानदा:।रणघर
जेनघुदरेवदी:।नजेकुंवाजनवाजमायाल
वायो:।आगेजाकुणोरयोरेसीसरायो:।

॥नक्रुनीमीयामायप्रगेन्राजी। वडारागरिछुनको
जोविराजी। छुडेनोलजोलीनगुनगाजे। वघे
होक्रकोकानक्रासोक्रवाजे। नक्रुरूवक्रेजेत्रछुटेघ
वाई। त्रबालेवजलेनबाजेत्रियाई। घडवेजुन
उहमातीनघटा। घुरेजोणग्रासावरीमेघघटा। ।
वलक्रंजीनलनेजोनंथजा। धीरूमुरलीहेक्रथ
रेडुजुजा। आपेओक्रेकुरमीइएआरे। कनोलोप
डोलोहरिष्मानधारे। नटीकनक्रन्मानहीक्रोम
न्नाई। लडेक्रोक्रिसेरूलघूवुलआई। लेणनागपु
त्रीजिगमनन्नारे। तिनीमीहिएक्रानटीएक्रो
रे। क्रिटक्रीमजीबाहरौनागक्राब्धे। अमीनागणीवि
गरोमुक्तआब्धे। बोलाजेजगजोवेजुवाघ।
हास्योजीपीयीवागक्ररगारदाघे। इसोआजगेहे
एनूलोक्रआब्धे। क्रालीनागक्रुंजघमीमीमक्राब्धे।
न्वेडुणक्रालीगंणीसीमन्योपे। क्रालीनागथीक्रे
मेहीआजक्रीये। जलेत्रमनीलावटेविमजाल
वदनेमटक्रेवटेवोमबाला। वजमिधमीगेगहेमी
गवाला। जेरीसुंक्रनाजेन्नटेडुवक्रालाओ

हुवे घणु श्री मरुधर गेच्प्रमारो : जसी आकरो मरु
रो कुरुआरो : निजनारि वणी वीरु देनाह : ॥
व देजस वैरी लिरु हे घवाहे : पंनगी नरेंदी एवी
वपासा : नोनै दिवाऊ आजवे गा मोसा : प
गीनाण री दाढ टे कौन घैणो : मोरे एण तैक हणे
हंनै णो : मुदै जोड होली घडी हेक माहे : नटै नै
ो बोल घोटा न वाहे : जमनाज मैं नागणी बो
जौरा : हुवे कैण न वावली वैंगलोरा : जम नाग
नागणी वैण जागी : लीया बोलगी वोजलीय
लागी : केवा सहु टला ल चोटो कैणीरो : वले
टरे हुलन हुं एवीरो : अमारे नागणी री दे ढणी
मिजवे विध किघ मावारु मोरा : म्हारे नै दवावे
ओम गमाई : न लोए कवलि न इचो मेम काई
मो कैम जपो कहैं ऊमोलो : कीया वाघ नी ओले
कोले : मनां हान मुकै घडी एक मामो : सके
रजऊ जासमे वि लीमो : मामे मो कली बोल

ढ़समासा:।इणौ दीठो ऊं ऊगो उपवान्नी:।घणेदी
रो सुन्दरीयो नेम घाने:।हमेंजी पसीजजवी नोगजाने:।
वेमानत्रा न बिन्हे घेन मारो:।वडेआज गेनाणली
रूवारो:।सुहूनी गणीकीकुमेठग्सेवा:।गलेगेउ
ओगलेगेहजेवा:।नरांनेढलागीरढेमेहनीकी:।।
सीजणगेरजेरनैदटीकी:।बाधा देखदीजे दिजांदे
बोलै:।नहीनागणी नेगउदीनगोलै:।पैवानीम्हे
ढ़ईबागवालै:।अवैनेथवासोवस्केगउमालै:।ढ़ी
ढ़धमिस्नरीसेनञुषदाईमगेघोलीयोघ्रिगछगडु
गाई:।वरांग्नबन्मीवाटमीम्होवरवी:।कणसेमेराग
पडाकोरकोही:।महीमिगणोगाढणोघेनमाटी:।
पलाहलमेगलंकीजेजमगी:।नमींनागणीनाथ
सीरागडुगी:।पडेलानरीधेननाहिनारपीधी:।प्र
लीलागनौजागवोणणकीधो:।पीयानगमेगोगण
रौपिंभणो:।वेडागेपनाहूगनायोविढोलो:।उपै
मोहमंजेमक्कालीजंगाडो:।ड्मीकाउिदेमागडुलोगना

जै:।। छैक्रासवले बापनांसब होवै:। सूगोस्नापजगाउजैके
गक्रोडै:। कहै बापजे स्नापरी आलकीजै:। तरे आवजोज
गसी जोमनीजै:। पाबूपापरी नाणणी गुरु नो हे:।
कुरे बागवाजे विहांगे:। रीतो बाटकुक्रोईजीतोन:
नीसांणी क्रुणमेणपायोनमाने:। पितामागरोजव
वांने:। मोतीरी जुई छुहरी स्राघमांने:। कुहै नै दरेघ
लाषइणी:। लालांकूं नकूं दे गकुंदंगलूंणी:। जिह
कुपडै बोलजेगो:। ललाले ईसले बोक्रुणमेणले
नारतूं पूहनेगइसांगे:। जिक्रेनी मस्यां बोलणो
त्रिपावेणजाणरबे गुरु बोलै:। पणे कुक्रणी वारईवे
लः। अम्हां पंथबेउ आगणीधारसागे:। लख्या आटकूं
टलागे:। मेरादेव अहीरवा वेमभाई:। पत्री कुमट
कुभगवाई:। पत्री कुद क्रावंस कीरै गमासी:। वटै
यांस नक्र जवासी:। घरे कै मरे वडीयाटघाटी:।
रीकेपषनव टनागी:। रलीकै सरे नवसरवे स्पो
गईनैदरनैस वल सनहै गा:। सबै नागणी गुरु
आगे:। मिलेकै सरा कुनपांणीनमीणे:। जायै नै
त्रवाटजाणी:। त्रिवेलगवासें कुनेली कलाणी
णणी रूपजे बालकै ने:। मिले दउरामुहगोसांमण
:। कालीनाधूगोजोपुक्रमायो:। जसोदमाई नैद बोले

नजायो:।नहीनागणीलागथारोनवारे:।हिवेहेकही
ंवकेकुइजरे:।भवाउअभाउपहिलापमाये:।घडे
राधीयेनीवडेआजघाये:।सभीवादरजुंनहीसमेत
ले:।बोलेवाठगोकोरपाधोरबोले:।सुण्योनांओभी
णोपुरांणोमयांणी:।रोलीजैनहीजंगलेजाटराणे
कोलीनागरीकोणरामेनकाई:।बकेबालनांमुंह
नस्याठबाई:।धुरायोमीयोपांननैधीनधायो:।वले
माल्हीयोमेकलेलाडवायो:।ओम्होमाम्हेहेसभीमेडआ
वे:।किसुंआपरोमोलआपेकरावे:।पभैगीहयोठमनेमी
भमोरी:।औरोस्हैणलाजैमभोआवओरी:।नमोधीरथो
पस्वेलागनारी:।जणांजोडगोसूंवागवादठरी:।अठे
गकेहैवैणजेगअधाई:।पठैगोगलाआजगोनैपग
ई:।नरनारिकानागणीकवाआणी:।रहीबांसडीदेवरे
णवरांणी:।नारीजीगीयोसुगबीजोनमायो:।जेणणीकै
णीहेकरहीजजायौ:।आयोनागसुंकूलेवाअगगे:।
अडीलोकवोआजमाव्रोनआगे:।वडानीवनूपालके
कालबोल्या:।भमानागसूंकेहीकेवानमोल्या:।अठे
रांवनेदवकडोपुडअडा:।घणवादजीगकोईकोडगडा
तुजैणांगणीत्रांगधारेतुजोरा:।दिहोआगरार
ढीगिजोरा:।सदआंणीवोनागणीगांणअछु:।
वेदपासेनकुंपुणथाउ:।अइनारिसुनारि
री:।[illegible] सजोदेवयभेअनेरी:। ;णेनाण

आपणी हद मोहीः ।तरो न सु रां अमरां गमनै हीः ।पव
नोनत्रं दौडुणं दोजवेसः ।अगै डहरौ गमनैही अजेमेः ।
सु णे डुरसानम विसार सुनीः ।छुटो रूप सुरारि नै वां ण
सुनीः ।सही बोलीया बोलजे गसे लालीः ।वयनेव र
नै दीयो दोडवालीः ।गालो टेनत्रा सेबी टयो नक्रूकेः ।
सबीबालडुनां नीनेनुय ण सूकेः ।दिमालै ब्रिसुं नाग
वाली दिवाजा, ।वणी वाग सास्त्रा बंधी कोई काजाः ।नमी
नैजनारी मुरारी नरषूः ।पठैसी मर्डेगे करगे परषूः ।री
माकार बीहे सबी धनरेमाः ।व्रहलं डबालावलें ड्रुह विस
माः ।सहसेलबे कोलू अरै सयांणीः ।पयासां ठनै बट्ठु
यपटरांणीः ।ईग्रासी उनै बरसी नेआईः ।सबी देव बे
रा लिबाल बसाईः ।जणणी गणे जणें बा डुही जजायोः
उपाडे ईली नोम सोनासरायोः ।मजाणे बालयक्रम
लमाधाः ।बलि रावजे हो वले जेण बांधीः ।जिमा दव
डोकडै सबी देवजो ताः ।गजेवा गयो आप आपो गजीणः
वलेरौ विणगे जिकुं देषि बाईः ।नति टार कर गार मै रि
धिपाईः ।सवाई दसानागकाली जुणायोः ।माडु ग ठ
ते नलै बाजन्याया ऊ नो मुरली नादली धै सुरीः ।मो
राजण सीसीम वायेम भूरीः ।विकस हैं सबै वेण अवेव
जाईः ।सपनीप गालेसर जे सुणाईः ।वेषा ई वधाई छि
सौदा वधाईः ।करै मुरली नाद मनो कन्हाईः ।मथानी
रवको जही मथमाईः ।जसोदा कहै कैं न्ह जी तोन
जाईः ।वजाजी पसीजु घबाहु वजाईः ।जगा यारन

रसीमैपणाई:।रहीमुरलीधुंनवाजैरसीली:।वलेजे
पनाव्रजनासथवीली:।टलेसाथजांएअमीआरलीथ
क्रीयोवेणाकारेसजेव्रजक्रीधो:।विजोगेमैजोगवणवे
एवजायो:।अनूआपणोजीएअंमृतपायो:।जिसोसि
थवेरांगक्रालीजणायो:।उपाडेकलीकारदरवारआ
वो:।फ्रेणीक्रोरक्रटक्रोरवखेरी:।पणूंथातीयोमोकुंडे
कामधेरी:।फरेनेदरेधोटअरक्रटएहो:।जलानोल
माहेक्रलांसोलजेहो:।नलीवाढगेमैवगीराटनांमी:।
तनूअंगलानीसोईकुक्रपीमी:।गोपीनाथनाहोथआ
थागडेरे:।औरोगांरुजोणवूटोआडरे:।आईमूखवाजे
जेहीनहउपाडेरेमेगारजीएक्रालीरेमाडे:।जुडेजा
दोलेमिलेनागजारी:।विठेसापनेसीवलोमुरवारी:।
तैजगजेवीफिरेनारिंडे:।क्रालीनाथनूंसीपीयोक्रोन
कूडे:।पैसारांउसारांमरापायक्रारां:।लहैलागलाराम
लायक्रारां:।मचेमूठमारेकरेसोइणहारां:।कुणारांघण
रांक्ररेफ्रेनक्रारां:।उडेडीगलांक्रीतलारांअंगारां:।अथा
रांजीगारांउकैत्रीधआरां:।क्रेन्हारांक्ररांमहेहाथ
आरां:।उकांनांउथारांवदेवारवारां:।निधारांसोध
रांजुडेत्रमगारां:।पाटूरांपहारांवसेधीरधारां:।
मारांधसारांसहसैव्रसारां:।अहीउडै

आवणी इंद मोही : । जरी जसु रा अमरां जमनी ही : । पव
नो नमै दीठु एं देजवे सं : । अगै उहरौ जमनी ही अनेथे : ।
सु एउ रसा नम विचार सुनी : । धुटी रूपसुरारि ने वां ए
धुनी : । सही बोलीया बोल जे गाजे जली : । वयन वर
नै दीयो देउ वाली : । गालो टेन त्रासे बाटयो नकूं हे :
सषीवाल ड नां गीनेनुय ए सूं हे : । दिषालै क्रिसुं नाग
वाली दिवाजा : । वणी वाग साका बंधी कोई काज : । नमो
नेनु नारी मुरारी नरषू : । पटैसी मजै जे करजे परषू : । रा
मो सार षी हे सषी धन रे षा : । त्रलोउ बाला वलै हुए विसे
षा : । सइ सेल षेलो लूअरै सयांणी : । पयासाउ नै षटसु
य पटरांणी : । इग्रासी उनै षट सो लगाई : । सषी रेषवे
टालि ष्पाल षसाई : । जणणी गणै जणं बोठी हीजजायो
उपाडेइ लिजोम मो ना सायो : । मजोण उ बाल षकस
लमाधा : । बलि राव जेहा चले जेण बांधा : । जिणराव
डो कहे सषी देवजे णा : । गगे वाग योगाप आपो गजीणे :
वले रो विण गे जिसुं देषिवाई : । जतिहार करणार मे रि
धि पाई : । सवाई सनाग काली सुणायो : । नसु गे उ
गोनलै काज गायो जनो मुरलीना दलीधे धुरी : । मो
सोजणसी सीम वायेमघूरी : । विकसे हसे वेण जसेव
जाई : । सपणपगले सरगे सुणई : । वधाई वधाई जि
सोदा वधाई : । करै मुरली नाद मनो कनाई : । मया नी
रउको जहीम क्रमाई : । जसो दक हीकै नुजी ओनं
[illegible] जी पसी जधवार वज ई : । जेगयारन

रदसीमैपणाई:।रहीमुरलीधुंनवाजैरसीली:।वलेजे
पनाव्रजनासथवीली:।टलेसाथजोएअमीआरलीथ
क्रीयोवैणनादेसफेव्रजक्रीधो:।विजोगेमैजोगेवणवै
णवजायो:।अनूआपणोजीएअंमृगपायो:।जिसोवि
धवेराजंक्रालीजणायो:।उपाडेफणींकारदरबारगा
यो:।फणींक्रास्फारक्रागेरव्फेरी:।घणूंघाणीयोमोकुडे
ामछेरी:।घेरेनैदरैधोटअरीक्रिटएहो:।जलाबोलध
ाहेक्रलांकोलजेहो:।नलीवाढनैमोवगीराटनांमी:।
नूंअंगलानीमोईदुक्रपीपी:।गोपीनाथनाहीथगा
ागुऽदे:।औरोगारजुजोएबूटोअडदे:।अईमूरवाजे
ैहीनहउपाडैरंमैजारगुजीएक्रालीरंमाडे:।जुडेजाग
ोलेमिलैनागजारी:।विठैनापनेमीवलोमुरवारी:।
ऊगजैमीफिरैनारिऊडे:।क्रालीनागनूंनीणीयोक्रांनु
डूडे:।पैसाराउसारांमरापायक्रारां:।लहेलागलाराक
लायक्रारां:।मचेमूठमारेकरेसोइणचारां:।कुणारांघणा
ांक्ररैफैगक्रारांा:।उडैडीगलांक्रीजलारांअंगारां:।अथा
रांभीगारांउन्हैक्रीछआरां:।क्रैन्हारांक्रारांमभेहाथ
ारां:।उवांनांउधारांवदेवारवारां:।निधारांनोध
रांजुडेन्त्रमंगारां:।पाटूरांपहारांमंसेधीर्वधारां:।ध
मारांधमारांसहसैभमारां:।अहीउडदेजांणकूलाल

गारां:।धमै आजधारां न लै सीयजारां।घूजै गाधरा।
धरक्कै थंजारा:।निहस्से नगारां सूरांरा सवारां:।
लीनागनूं कान्ह जूबे करारां:।कालीनागरी कौ
रीहरीहथा:।रही देव वाग्गरी देवरक्षा:।जुडे ना
वालाक्रूरेपावजाग्या:।क्रूरे सापरी कौ वलीस्रूण
ज्या:।रहे राठ काठ कीयो विनेनसी:।वहने वहै श्रोण
यास वीसी:।कालीनागने जुध माणो क्रिसने:।व
जेमनां सरसहूर वरने:।कीयो ना पग सुं नाप न्हा
ऐक्कने:।मरमो पणो अवसुधमोन मुनि:।ओहलैहजु
जोपालेबउबे:।जो वो नागणी जाग नांखे उबे:।नहीं राविन
वध क्रोनसूझे:।आईनीडी यो धेसनाकेन लुझै:।नईमीरपी
पडै जानेगा:।मनमोडी यो रासमाधे पुनेगा:।निसी नागे
वजैनालनाली:।मंडे पावनांण दयोवनमाली:।कालीन
योऊपरै विराली:।वलेनाररेले अंकवाली:।उरै नाग
लीनरे पोयण उघे:।नमोनारने सायनाथ दनाधे:।जले
दक्रिसोरनाथदनाधे:।पनेजी सिरे नानीयो निधपाधे:।
पैनाघसुं नागणीहाथजोडी:।नम्हे देवमोटा नम्हे मति
डी:।तूं कारे नेकारजी कारेनम्हो सुं:।नाया नाज नेमा कु
जै न्हांसुं:।महा बेनमांण दजा देम मोटा:।बरोहेक
बीयासरबमोटा:।जुडे रूपनो नाथणांमी राजै हा:।क्रुपा
णां ऊपरै मारक्के हा:।लोकांही विमालैव नूलीक्रला
मणोनापरा केपनाजे:।सोमीरोधमा

मकेहीनसूझे:।हुघेटीएकुएरावलीगतिहुझे:।ब्रहमी
उहक्कवीसदेख्या विहांणे:।जसोदानोहीराजनैपुत्रजो
णे:।पैवनरोपाअहूपहरावे:।लणेनंदनोईगनोपुत्र
नावे:।गानेरावलोगुणांगायोगउदे:।मैरोगारडुजो
एठटीअडदे:।पडीआपनैथापीयाराजपाई:।ब्रूनैव
नांहोमआपमराई:।दीयेकुलेवेगेसुणेवैणकीधो:।को
लीनागरीनारिउआहत्रीधो:।लागेनागणीकेटसीमेट
णे:।जाहूनाथलीजे जिकोराजजांणे:।उबारेथणूंआपथ
पैअरचे:।बोवेवेदणेवीलनारीवरचै:।आहीनाखीयो
हणेबालकांणे:।मस . वारहूवाओमोअपलांणे:।कूह
नारीयोकूमलोनारक्काने:।आपोवागराजीपडैनाथवीने:
असैयारकालीगयोनीनृआयो:।विहूविजेउवि धकार
वधायौ:।नगवीनष्येणेपणो वालनेला:।वडाब्रांगके
दिजांनेणवेला:।बागझालीयाव्रजक्षेरी विचालै:।
वलक्षैरीयोआंगणेनैदवोले:।नडदेहि सिगपड
कैमझांके:।कालीवूटीयीयारक्केकांणश्रीपे:।कालीन
गकालादहैगक्काली:।कीयोवीदरोगागकोठहूप
ठी:।महाकालकालीगणोमाणमोडे:।जसोदात्रि
आवीयोपीणजोडे:।वठोव्रजरीदहउमहवाली:।
कहैनांमलूक्षोव्रहमीकुवाली:।गडदासेआमरेयु
णेगायो:।वाश्रेनांनुपोहनैवहसेमवायो:।सम...
कालीगणो ...

गरे:॥१॥ कलस:॥ जौ प्रभु है समका दनंद नंदन अहि
नारी: सम दोस सार हवो दपहो गोहरी: मन
नंद ल ई समलव पगापसमावै। अगमुज
रजंजार प्रिसन प्रभु गाजनजरावे: रमीयो मिरगा
धारमप्रभु जंत्रलाली समैग: । त्रिभुवनप्रभु
गन प्रभु देव गण गवरा को जगवाजवण:॥ इति श्री
नाग व ण संपूर्ण:॥ समापत:॥ सूलोको ई श्री सरस्वत:॥
मिती: संवत १८४ मिती मो ह सुदि १ श्रीनीवानेर मधे:॥
॥ कवित: जब किंकर को करको करको कर को करको क
रनां करको: जल जो रमण पन घोर परज उपर को पछु
र रको: करि छु इकरजो जलजा पसबे पु पचा ग जाकल
नागरको: धरनीधर वो धरनीधर को धरको न होय धरनी
धरको: जब॥१॥ स अ पद म कहाला पर को बोल कहा ले
उजनि के पगजाय वेजया पाइये: जुवनी वेसाय कहा ले
पदी को रह कहा वे स्थान पुर पातो वदे हिन गमाइये:
निगुण सु ने हक हा बादे सुसने हक हा सुवकी सवनाम वे मि
कैसे के रिज इये: कहे कवि मान जो गेही करे गुमान एता
मां हिकहो यारा को न पदी पाइये:॥२॥

॥मोतिकनाउहा नवक्षत्र सौभाग्ये जवन नरोकल लिख्यते॥
॥अथ घउहा॥ या विधि विधियो तिषको इहतं पावे पारः।
अवकलनारहेजवनकोमन ण तहेके विचारः॥१॥ तनु
जवने सूरज करै नरऊ रूपवक्रक्लेशः॥ विनयरहितको
धीअसिसनार विलास विशेषः॥२॥ वित्त हरैन विधन उ
लोग हे दुःख अरोगः। सजन रहित दुर्जनसंग घिकना
ग विव जित लोगः॥३॥ आयु दीरघ नीजे जवनहोत स
रथण कित अतुल प्रभाव निरोग गी मित्र देवगुरु नकि
॥४॥ भावाघेधन सुमहीन नरउपजावे उपतापः। कतय
नकपटी बहु विनिकरे सरसंतापः॥५॥ रवि कुउत्त
पंचमकरैकैन्याको उत्पति कलहीकपटी पापरत जोसी
काकर किरति॥६॥ रवि छठे दुर्जन हरे बाधे अकुन स
तापः। सबैसाख्य प्रवीन नर सारहोत निपापः॥७॥ द
लिङ्ग सूरज सप्तमै सो गीकला विहीनः। छिनन सुहावै
रिकं परदारा लवलीनः॥८॥ रोगी सूर निज अष्टमै थ
नारिपी द्वेषः। वित्त विवर्जित दिसुवक्र गजंपति स
र विसेषः॥९॥ नवमैजवनेर विर सौ करै उरु पथम
दीनः। चंचल सुरमनी चरतनशील रहित अति दीनः॥
॥१०॥ कर्मरत्नो कपटी करै अरिजन दुदरूपः। निर्दय
कांमी कठिन मन निशि दिन सेवे नृपः॥११॥ पंडित
विद्यपार मैवक जात लाजवक्र चित्तः। राजन पूज्य नर सा
सी निजगुरुदेव नगतः॥१२॥ रोग करैर विवार मैवा

पितकसदेह:। परचबकुजनका विवेकभा॥
नहः॥१२॥ अदिति सूर्यफल॥ चंद्रकेर तनुभवनकोमित
देहिजउनूर:। कैगर हि नि धनिगजनकाग निर्मल
कहन॥१४॥ धनकेधनकोरासीगुणराजगुणवेत:॥
राजसुज्यक विनारकहिस्त्रीबलनसंमदंत:॥१५॥स
पौतीजो चंद्रमा विद्या विनयगुणगः। कर्हदेहोक्रमी
बकुनाम्नारसुजसके लागः॥१६॥ सोनाजी विद्या विनय
नीलसुजनासुगधान:। पुत्रास हिकविनारकहिवो
थे चंद्रसुजोन:॥१७॥ पंचमस्रा सिसुएवेनर विनैवै
गसुनसुत:। सोनागीसुगसंनसु पीसामकलमानुल:
॥१८॥ छठे चंद्रमा रातुजुननयकरमाजलहियः। वातम
घिककटिबकुनातुमनारसु त्रिकाजाय:॥१९॥ कछेसुधर्मसिम
वेमाचंद्रदेही निरोग: सौबलनपिसुनेर हिसुसिसा
सनैलोग:॥२०॥ केरोगजकसिमाआगड़े जाधनहीन:।
करालनुजरा करासु अकुकै त्रियकेनाधान:॥२१॥ अ
जात मित्रसहिधर्मका प्रियबलनसुनबुधि:। सुखीसुक
असुजसबकुनवचनकलाकी सिधि:॥२२॥ कष्टगामेद
रामेसरीमठ मनोहररूप:। अलवंतनपाईसधनकेमंत्री
केनेप:॥२३॥ लालनकेरमसिलानकुलजावेदयाल
लोनागीसकारहिदीनहीनमतिपाल:॥२४॥ जाकिं
लोचनपापमतिकेरआरसेमसि:। ज्वरचिंताजोजनबक
नबिनमैहर्मविरस:॥२५॥ इतिचंद्रफलं॥ वागीमंगल
लजनको रूपहीनानिरलज:। कटुकवचनपरदारमची
पीजाधिजमके जे:॥२६॥ धनकोमंगलधनरहित निर्दय

लाभहानिःसदा कष्ट विना बक्रन रहत सबदा दीन ॥२१॥
कुज तीजे उतपति बक्र जन होत भुजन फल्लीवः। जो कागीमा
नैनपति सार संरूप सदीवः ॥२२॥ कोनसौरै बाल कृपक्ष
जो चौथे कुज होयः। नृमे नृमि धनवंत नर भिरय दिश
ज्ञन कोयः ॥२४॥ पीडे मंगल पंचमे नित्य विरत मन सून:
करे कुपुत्र हरतत बक्र न बालन सकै सुनः ॥२५॥ छठे मं
गल शत्रु बक्र न उछिदे रिपि लोलः। बक्र न रक्षा सी पावे
पीवे क्रूर के धार्क्षि लोलः ॥२६॥ कोपप पै कुज सप्तमे:
कामी रुधिर विकारः। नीच संग निर्दय पुरुष मम रिम रि
जावे नारिः ॥२७॥ मंत्री मंगल अष्टमे रविक्रकारी ताप:।
जो वेपरके छिद्र बक्र दया विहीन बखान ॥२८॥ करे कोप
मा [illegible] धर्म को मंगल पुरुष स्वगर्व। उष्टनाव विनयो
रहित जोवे तीरथ सर्व ॥२९॥ कामे करावे कर्म कोन मग
नभावे सो। नेज वंत राजा करे कांन बधिर लवलेस ॥
॥३०॥ अब मंगल ग्यारमे कीरति करै विलासः। शत्रु
लला नुगकरो कैमेतन नीरोगस हासः ॥३१॥ धर्म
दुष्ट कुज बारमे निर्दय नारि नक्षत्र भावः। ओपति पीपी
बरसब कौ पापको चावः ॥३२॥ इति मंगलफलसमाप्तः ॥
रूपवंत बुध लगन को [illegible] विलासः। बक्र तनु
छिधन नीवक्र न पदपु नी पुन चालः ॥३३॥ धन को बु
ध बक्र धन करै पीडि [illegible] रीकः। मूरख बुधी सत्य
रक्षाति बलहीन निलीकः ॥३४॥ तीजे बुध बक्र विलास
कहि लोचन के रहित सदो षः। बक्र बाधव की रैं नि परः न
सावधिन नीतः ॥३५॥ बुध चौथे पुकने थपम संप निश्चि
तउपरः अधिकारी क्रोध जको पर दुष्ट [illegible]।

पित्तकफदेहः। परचवक्रोतन्ना विवेकमति नरपापी निर्म
नेहः॥१९॥ इति सूर्यफल॥ चंद्रके तनुभवनकोशीण
दे हिजउक्रूरः। कैंगरहित निधनिजसनभग निर्मद्व
कस्तन॥१४॥ धनजनेधनकोरासीगुएनाजगुणवंतः॥
राजदज्यक्रविभारकाहिस्त्रीबलनर्गमदंतः॥१५॥ अ
चौतीजोचंदमा विद्या विनयसुजगः। कदूदेहीकामी
बक्रातभारसुजसके लागः॥१६॥ सोताजी विद्या विनय
त्रीलसुजत्रासुजथानः। तुत्रक्रहिकविकारकहितो
चौचंदसुजानः॥१७॥ पंचमराशिगुणवंतनर विनवैय
गसुनसुतः। सोतागीसुतसंतसुपीका नाकलगुरुतः
॥१८॥ छठे चंदमारात्रुतुनयहरनाकलहोयः। वाकम
पिककटिबक्रातुभभारपुत्रिकाजोयः॥१९॥ करेतु धर्मसिल
तमोचंदरेही निरोगःसीबलनपिस्तनेरहितसुभ्रम
सनेलोगः॥२०॥ केरेरागसहितभागाईनेसधनहीनः
कसानतुटरादरात्रुअक्रकेत्रियकेतनाधानः॥२१॥ ब
क्रातमित्रसविधर्मको प्रियबलरक्तनबुधिः। सुपीसुद
सुजसबक्रातवचनकलाकी सिधिः॥२२॥ कस्रगमेद
रामेसरीमहमनोहरसूपः। सम्पवंतनार्दसिधनकेमंत्री
केरूपः॥२३॥ लालककेरनशिलानकुलजावैनदयालः
सोतागीसकरहितदीनहीनमतिपालः॥२४॥ जोकिल
लोचनपापमतिकेरआरमेसशिः। ज्वरचिंताजोजनबंध
त छिनमेरूपविरसः॥२५॥ इतिचंद्रफलः॥ रागीमंगल
लगनकोरूपहीननिरलजः। कटुकवचनपरदारतची
लीरतीपित्तसकेजः॥२६॥ धनकोमंगलधनरहित निर्दयि

लोविहीनः। सदा कष्ट चिंता बक्रग रहत संकदा दीन ॥१७॥
कुज जो जैउत पति बक्रग होत श्रुन्य फल्गीकः। सो भागी भा
ते नृपति भार सरूप सदीवः ॥१८॥ सो तनु रेवा लकपध्र
जो चौथे कुज जे होयः। नृ मेन्हू मि धन वैतन रविरयनि श
तन को यः ॥१९॥ पीडे मंगल पंचमे नित्य विरत मन सूनः
करे कुपुत्र हुत बक्रग बोलन सके सूनः ॥२०॥ छठे म
गल शत्रु बक्रग बुद्धि हरिति लोलः। बक्रग रहु सी भावे
पीवे करके याच्छि लोलः ॥२१॥ को पध ले कुज सप्तमे
कामी रुधिर विकारः। नीच संग निर्दय पुरुष सम रिमरि
जावे नारिः ॥२२॥ मंत्री मंगल अष्टमे रविरुकारी सोणः।
जोवे परके छिद्र बक्र दया विहीन बखान ॥२३॥ करे क्रोध
मा [illegible] धर्म को मंगल पुरुष नगरबिः। दुष्ट भाव विनयो
रहित जावे नीरथ सर्वः ॥२४॥ कामे करावे कर्म को नृ म
नमावे द्रोः। तेजवंत राजा करे कांन बधिर लवलेसः॥
॥२५॥ अब मंगल रणपार मे कीरति करै विलासः। भव
लला जकको कुमेतन नीरोगल हासः ॥२६॥ धर्मि तु
नृकुज बार मे निर्दयना पिनकल्यावः। ओपाति षेधी
[illegible] ॥२७॥ [illegible] मंगल फल समाप्तः॥
[illegible] बिलासः। बक्रग बु
सूर्य न बुध लगन को शुभ [illegible] ॥२८॥ धन को बु
धि धन जो बक्रग धन शुभ मी सुन वालः। सूर सुबुधी सल्प
धन कोरे पीडा भागन्ता रीकः। तीजो बुध को विमार
सातिब लग्न तिलीकः ॥२९॥
काहि लोचन के रहिसदो मः। बक्रग धवकी
कारवित सँगो मः ॥३०॥ बुध चौथे शुकरो दे
सउ दरः अधिकारी कोराज को पर ड ...

सेतनितनकै जैसिव मै शुध जल उदक मज्ञः शुध नीक
दहीज कही जो नहि अकम कामी पाय ॥ ४२॥ पितु गु
मे शुध जपै धरै कैरै तब विरोधः ॥ कामी कोधी जाति
मति ओर कछु नही कोधः ॥ ४३॥ जोवल नहि शुध
तमे सील व्रत सो नाशः ॥ पंडित बल जो विप्रकू
ललित गनी नाग ॥ ४४॥ मद मती शुध न्हाये मै नतप
तपरना दिः ॥ कामाकर कातर कोटिल न हीय पतिको
न॥ ४५॥ शुध शुध धर मी नारका हि कोई धरम जु मनाय
जे मध ओरैव नवा टको बकनात गगन पितु मातः॥ ४६॥
को है गुरु कर मी करम को शुध विनय अपनः ॥ काम
नमटै गुज सत्सु विरशु मीथा नयनः ॥ ४७॥ नीति
जीवतु ना साहि तकै रला न कोलीनः ॥ शुध सद
काविनार कहि को पा धिन द्विज नाल ॥ ४८॥ ना
वचन कल शुध वार सो निरदय मन शुध ॥ ४९॥
को इपै ता जब ना करे दीन चित तब को पिधि
॥ दति शुः इत्यमनः ॥ नीतिगी गुरु लगन को बक
धन बोले माचः ॥ को नात त्यगय पायके कही किवाहि
साचः ॥ ५०॥ धन नव नै हम पतिके मद शुभी नविमः
धन था नवक वित गुनार शुमति जमजोगः ॥ ५१॥ जह
नपति नीजै शुध पंडित मद मजनः ॥ शुरु मजिते दीनार
क हितो रथ कथा शुद्धि ॥ ५२॥ सो येतु हवज वानरी
जमन वै प्रसप्यांनः ॥ मवतु बल नज हित हि प्रजे
वल जिहि नः ॥ ५३॥ रूप वनतु रूप पंच मोजतु गा विनय
शुनेनः ॥ धार मीत वल मित्र तु बज ना कियानु हित ॥ ५४

छठे सुर गुरु विपन बक्र सिरपरि उसमन होय:। नि
ति उदिकमा धाम मलिन श्रीमी निर्दय जोय:॥५५॥
कामी नर गुरु असम मो नित पनृप सोन्नाग:। नानावि
धिधन धान बुतरार वित केलाग:॥५६॥ नरकुरू
प गुरु अष्टमै करै नकल सुवैर:। सदा सरोगी कुटिल म
ति निंदक दुर्बल सैर:॥५७॥ नवमै गुरु नरकौं करै नि
रीह:। धर्मवैन बलन्नम धिक: दीरघ आव सबी हि:॥
५८॥ जीव सकर मीकर्म को दशमी दीन दयाल:। नृप
तुल्य गुण वैन नर सुभी सुजन सुविशाल:॥५९॥ हि
यगय रथ पाय वक्र बकुत संतोषी सु विवेक:। अकग
वित गुणन्नी बक्र न नहीं लोलज्य नि ठेक:॥६०॥ री
ग करै गुरु बारमो विष्मन्नी सेव हि नीच:। जि सि नि
सिपरिता नोर हेलगे नृप नै नीच॥६१॥ इति गुरु
फल:॥ [illegible] ॥ शुक्र मूर्ति कौ
री लयुत भो न्नागी नीरोग:। वित्त बकुत विनय भ
हि आ सब सुध को जोग:॥६२॥ शुक्र वित्त कौ वित्त ब
बकुत बांधव दृव्य सतेज:। सदा न्नकतु कदेव कौ:
सार नृपति सुहेज:॥६३॥ मित्र देस पकु धन सुलन
मापती जो शुक्र:। नीरोगी से नाहि नृप नि निजकु
लदीप सबक्र:॥६४॥ शुक्र दृव्य कीरति करै बलि चो
षो राजन:। सबको अमान सुभी गांम नगर परधान
॥६५॥ पुत्र करै गुरु पंचमो निरुपम कानन सुभ:। सर
व कधै कपटै रहि बकुगाव्हल हुको सुभ:

संतनिनकेपेन्च मे बुधजन भउ पजा यः। बुधजनोकुल
दृ हीज कोल्यो न अकजजांमी थायः॥४२॥ त्रिभुवन
मे बुधजन वे धरके देख विरोधः। कामी क्रोधी कुटिल
मति और कछू नही बोधः॥४३॥ जीव लखन बुधजन
समे मीलवंत को नागः॥ पंडित बलजा विप्र कछ
ल लिंग नीनाग॥४४॥ मंदमती बुधजन हूमे नत घनर
तपरना दिः। कामातुर कातर कुटिल नही पपनिकोप
र॥४५॥ बुधजन धर मी मारकहि के धरम पजातः।
जेम धरे वन वाटका बक लगन पितु मातः॥४६॥
कोई कुकरमी करम को बुध विनय अपनः। कागद
लपटे कुज सम चिरनु बीधा न यनः॥४७॥ नीरो
जीवन्तु नासहित केरलागको लोकः। बुधजन
काविसार कहि को पापी यदि क्रिनमानो॥४८॥ न
वचनकला बुध वासमे निरदय मन अबुधः॥
कोइपचानवनाकरे दीन चित्त बक विधि॥४९॥
समाप्तः॥ नीरागी गुरु लगन को बक
॥इति बुधजन समाप्तः॥ कही निवाहै
धन बोले साचः। कोन करत चुगय पाय के कहीं निवाहे
साचः॥५०॥ धन नवनै हुस पतिकै सदगुणी नीरोगः
धन धान बक पित सुभार सुमति जन जोगः॥५१॥ जेठ
समपति नीजै सुपी पंडित महा सनजः। गुन सजिते दीनार
कहि तीरथ कथा सुहेजः॥५२॥ सोये सुदन बकवाकी
॥ मनै वैसू अथांनः। मन बकुबल नजर रिर हि सुजै
ल त्रिहांनः॥५३॥ रूपवत गुन रूप वमो गजुरा विनय
संमे गः। धन मीत उल मित्र कुन बक जा क्रिया सुहै॥५४॥

छैत्रुरगुरु विघनबक्र सिरपरि उत्पन्नहोय:। वि
ति उदैकमाया मलिन अभी निर्दयजोय:॥५५॥
कामी नरगुरुरूपष मोक्ष तिमन्दपको नाग:। नाना
विधनधान अत्रु तरार विद्रकेलाग:॥५६॥ नरक्र
पगुरु अर्व भैकरै नकलश्रु वैर:। सदासरोगी कुटिल
तिनि रकेतु बलकेरे॥५७॥ नवमेगुरु नरकुकरै नि
रीह:। धर्मविगन बलत्रास धिक: दरिय आव अबोह:
॥५८॥ जीव सअनुरमोकर्मकीं दारमी दीनस्याल:। नि
उलगुणवांन नरसुभी सुजस सु विशाल:॥५९॥
यगयरथपायत्रवक्रन संतोषीसु विवेक:। वक्र
चित्र गुणनी बक्रगन हीलो लगति ठेक:॥६०॥
गकरे गुरु बारमो विषनी सेव हिनीच:। जि सि
सिपरिता नोर हेलगे दूषने नीच॥६१॥ इति गु
फलं॥ [illegible] शुक्र मूर्ति के
री लघु तनो नागी नीरोग:। वित्र बक्रगन विनय
हि मार सुधको जोग:॥६२॥ शुक्र वित्तको वित
बक्रन बांधव बृज्य मतेज:। सदा नकोउ रुदेवको
सार नपति सुहेज:॥६३॥ मित्रदेस पक्षु धनसुत
माप तीजो शुक्र:। नीरोगी सेवाहि नृपति नित्र
लुटीप अवक्र:॥६४॥ शुक्र द्रव्य करीति करै
यी राजन:। सवक्रो कमानै सुभी गांमनगर [illegible]
॥६५॥ पुत्रकरै सुपंचमो निर्धनका तु [illegible]
अकपे अपटै रहित बक्र गक्ल हको दम: [illegible]

आतिशु

शुक्रकेरै उहे मनय जिन तिनसुविद्यम:। त्रिच्छद

सुपसामान तनहीजन्म कीरेष:॥ ६७॥ जोरवर लोचन

पत्रे गु मतमेम दानुगानीरोग:। कलहकेरै गुजमो

वडेमोनागीवहुलोग॥ ६८॥ निकलहो वमवकु रनां

उमतीनमे विदेश:। करेजु धमगिम

हिलिबेमा॥ ६९॥ सुकधर्मको विनयवंत राजमार

मजिव मिधि। अतिसुपुत्र अतिचतुरीराज गवेन

कीरति॥ ७०॥ सुकसुधर्मा कर्मकोन रिलोग राजान:

धांन:। शीलवंत बलन त्रिया:। अव लिखि ॥ ६६॥ सत्य

॥ ७१॥ लाभकेरै गुलानकोनोग ॥ ७२॥ बहुवंध

वंतत्वा पद बहुत धरमीधरमर्म नेहि। मित्रविरोधी सु

चलुबारमेचरच बहुत धनवंत:। इति शुक्रफलं

जन्मसतमा रपद निश्चंत:॥ ७३॥ राहु निकरालं:॥

नकोरा निरोगीरूपएकत धनकरमीकलं:॥ ७४॥ रानि

रूपहीन पापीमन दहिलि धंकरनीलं:। पापकरुन

धनको निरधनकरे वात पित्त कफ रोग:। रानि तिजेमति

पावेकछु नहीजन्मको नोग:॥ ७५॥ राशि गीसुजरानसुख

दमति अज्ञान अधन होन:। गुण रागी निसुमहीनजनवं

दीपक अपने गोत॥ ७६॥ चौथेरा निमुहीन जनवं

धवहरै अरथ:। नीचीमंगतिकु टिलमतिरहे नी

चकेमथ:॥ ७७॥ पुत्रहीनरा निर्पचमेमूलनालि

जमकित:। शोकबहुत चिंतारहे बुद्धिनालि

तिलमत॥ ७८॥ अरिभवने राहुके करै नीकर

न:। नीरोगीधनवान नरविधिवंत विख्यात:॥ ७९॥

रिमरेरा निमातमे परलेजुजोवार:। बहुत रोगकी

जम

त्रि विन नदी शत्रु कोपार॥८०॥ शुध्या शानी मरन
गमें नरक रूप वक्र दुषः। कृतघन हीन कविनम
नमिथ्या वादमे मनुष्य॥८१॥ शानि नवमे पापी पुरुषः
चपलश तापविहीनः। मलदया वर्जित सदा शत्रु व
कृत बलहीनः॥८२॥ रक्त विकारी कर्मकौ करे शनीश
रभोगः। चंचल निर्धन मानवीन ही जोगर्स जोग॥८३॥
करे अंनीमर लाभकौ अष्टम लगज यहः। कला वक्र
न विशारक हित सदा रजवहः॥८४॥ वित्तहीन नरवा
रमे कृतघन दुर्जन भावः। विजकु टंवकु दुषदेमन मे उष
मुभाव॥८५॥ इतिश निफलं॥ जनममंदिर मूकेतु रनः
रलो मूर्तिकोर्हः करे कुलक्षय आपको कौन साहस
तिहसाह॥८६॥ राजवित्त कोकगिन मन करे आपको
नाशः। करे कुपुत्र कन्या वक्र स्वामि धर्मकी आस॥८७॥
तीजे राज सपुत्र वक्र वसतवडे पुन तेजः। सोउ दीर्घ धन
तीव कुल नित्य चाहे सुपनेज॥८८॥ निर्धन चोथे राज
नर पीडा करे शरीरः। मल धारी नय चित्तमे नमे मित्र
उवीर॥८९॥ राजकु पुत्र नमर्पंच मे अतिकाया नीरोगः।
उदरवी चक्रम नीवक्र कालपंआयु मन भोगः॥९०॥
राज छठे करे सुभी हलै शत्रु वक्र कीर्तिः। नीरोग कामी
सुभीकार सारध एचितः॥९१॥ सप्तम राज में रेत्रियासे
वा करे भजो गः। लंपट लोभी लोल चीन ही किसीकी
को गः॥९२॥ राहकुते अष्टमे नवनव पुत्रीन को भावः।
जो कदा चिजीवे अधिकः तो अति दुर्भिन भावः॥९३॥
धर्मराज नरकार करे कैन विदेसे वासः। कामी लोभी काम
न मन धरे सकल की आसः॥९४॥ राजकर्म कोछु धिवल
पापी[illegible] तन रोगः। परवीर परनारित सारकुमतिको जोग॥

...ज सत्मा उ अकृतप्य न...
...टो॥ना॥३॥ लाल कौस्तु भलु ज सत्मा उ अकृतप्य न...
महाबली सिरस्त्र बलस्मा समम तिवंत॥१२५॥
ग बानमे आपद होत अयकोना॥२॥ जल पक्ष छिम...
कोपमति मायावंत उदास॥१२७॥ इति फल नम...

॥अथ मंडलविचार लिख्यते॥ कृतिका विशाखा पु
र्वा नाद्यपद मघा पुर्वाफाल्गुनी उ स्वातिफालगुनी ६
ज्योतिषहस्तमाहे अमिकपैधरती बोले निहावपड
तां नक्षत्रां माहे कंपातहोय सूर्यग्रहण होय चंद्र
ग्रहण होय ईचार जहोयतो अग्निमंडलजांणजे॥
सुभिक्ष नक्षत्रां ने पीड होय। च्यार वर्णोने पीड करे॥
धनवरसे ग वस्तकाप कीकापदगोः॥ मिघ धोड वरसे॥
उ वांके धणी धोड। वनस्पति तीरे हल कल धोड॥
कालिंग देस कदरोवी नाश होय ऋष त्रिमल
व: लिंगदेस नारवलोज गोभी विधेः धुका
१ सिंधः २ यमुनः २ कटक ४ कनोजः विहः ऋमा
रमीर उतराखंड रदेसी नार उर्वेः जमीर हकाल
चित्रा रत्ना लिरव्या ४ पुनर्वसु ५ उतरा फाल
गुनी ६ अश्वनी ७ ईयांनक्षत्रां माहे जो भूकंप होय
यतो धणी वायु बाजे। अगली देसां नयउपजे
उत्तरदिसा क्षुद्रा नलयदय धणी धणी अवे॥
दय गांव वसे पाणी वर्षे बालाजे दवना पंरंण
धन सर्वथा यः जो काल पनहु धनमी धाय। धरती...

त्रि इतिशावां नां होय:। पंजाब देश १ कुरसन देस २ सिं
धदेश ३ बब्बर देश ४ बारदेश ५ मगध देश ६ गा कं
देस ७ चेटक देश ८ करट देश ९ विजवाल देश १० इन
देशां रो नाश हुवे। श्लेषा: मूल: पूर्वाषाढा: रे
वती: शतभिषा: उत्तराभाद्रपदा: ७ इयां नक्षत्रां माहे उ
त्पात भूकंपादिक होय तो वादल गेरा लक्षण कहुं।
मेहपणां बीजली गाजि गाजि मिच मकै। रोहिणी योग: जोइ
सावलषोग: बीजै नाजरी उत्पति घणी: बाजरी मोठ
वार मुग चावल तिल हुवे गा:। गायां दूध घणो: फल
लघणोकल्यां हुवे: धरती माहि हुवउ उपजै। कीटक:
उद्र: गर्दभ: माकड: माछर: घणा हुवे।। पेज पणो लक्ष
होय:। धान सरव भूल जाणा सुकाल होय:। परमेमा हो
त्पात नहोय:। नागपुर देश: औरदेश: शोरठ देश: सिंधुदे
श: सौवीर देश: उज्जैन देश: वाराणसी देश: इण देशां
घणो नाश:। इयां देशांरो भय मिटे नहीं:। अश्विनी: रोहिणी
घणो नाश:। इयां देशांरो भय मिटे नहीं। अश्विनी: रोहि
णी: अनुराधा: श्रवण: धनिष्ठा: उत्तरा: अनीवरतेम
ही दुजो लजै अकाल हुवे:। भिन भांत रूप घणो हुवे रोग
नहुवे घणो आनंद हुवे सुकाल हुवे राज मांहेनो वध
वे। बड़ी गुजरात: समुद्र देश: मगध देश: मारवाड़:।
इत्यादि देश आनंद घणो।। इति श्री
कुरुक्षेत्र: पाणीपंथ: इयां देशां आनंद घणो।। इति श्री
मंडल विचार संपूर्ण।। शुभमस्तु:

॥ द्वि त्रि स्थितेष गानीचः आयुर्नाशो भवेन्नृपः ॥ ष
ष्ठे त्वंगे भवेद्दाशा निधनं तेषु निश्चितं ॥ १ ॥ पंच मि
त्रे गेहे ...
...
ग ॥ २ ॥ ...
लः ॥ ...
॥ ३ ॥ ...
षा ॥ ...
निरामिश्र ...
...
योगे ... ॥ ४ ॥ ...
ना विशा ...
रा ... ॥ ७ ॥ ...
समागमे ... ॥ ६ ॥ ॥ जीवं शिवः शिवो जीवः स
जीवः केवलः शिवः ॥ पाशबद्धो भवेज्जीवः पाशमुक्तः
... सदाशिवः ॥ १ ॥ ...
...
...
वते ॥ जीवे ...
... ॥ २ ॥ ...
...
करोति बांधवजनो ... ॥ ३ ॥
...

॥श्रीगणेशाय नमः॥ ॥श्लोक जानमनावेश॥ अ
श्रीगजं नैव देमं च दानं। कौशीलव स्त्रे न च देमरत्नं
श्रद्धापिकं न्याम मदेयतु न्यं न क्षिप्रशादा स्तु
शंकरस्य॥१॥ लोके कोविक्रिलेटविं। नक्षीरह
मागता॥ पंचरत्नमथालक्षालंप्र संग देमाचल॥२॥

प्रियं ॥ क्रोमोरकोधरं अग्नं तं वंदे श्रीरवांतकं ॥
[illegible] रूधरं तुवनानंदं रूपदंरूपनायकं ॥ नर
वगम्यं तुजं गेस्रांतं वंदे जवनाशनं ॥१९॥ ज
नदिं जजं नार्थं जगजअविनाशनं ॥ जम
दग्ध्यं जितं ज्योतिस्त वंदे जलशायनं ॥२०॥
सउर्जुजं मिराकं दध्याएरादिन हृदनं ॥ म
नामर गुरुमैसीतं वंदे यज्ञपाणिनं ॥२१॥ श्रि
यानिधिं श्रियानाथं श्रीधरं श्रीवरप्रदं ॥ श्री
वत्सलक्षणं शांतं तं वंदे श्रीसुरेश्वरं ॥२२॥ यो
गेश्वरं यशोराशिं यशोदानंद [illegible] दाय [illegible]
कं ॥ यमुनाजलकल्लोललीनं [illegible] वंदे यदुनाय
कं ॥२३॥ कालग्रामखिलाकुधं सैन्यमकोप
नोपिनं ॥ गुरागुरसनसेव्यं तं वंदे काम
वलकं ॥२४॥ त्रिविक्रमं त्रयामूर्तिं त्रिविध
घविनाशनं ॥ त्रिनेत्रं तीर्थराजेंद्रं तं वंदे त्रि
देवेशनं ॥२५॥ लीलयोद्धारकैलाश..

कलैकवंदितं॥ लोकस्थरेशां लक्ष्मीवारी
वंदे लक्ष्मी प्रियं॥१३॥ अनंतमादि
यं मध्यसुरांसाक्ष्या मयी॥ अज्ञादमज्ञा
नानंतनंवंदेपापनाशनं॥१७॥ हरिमद
नानंमनंवंदेपाप नाशनं॥ हरिप्रियं दलोकुधे
रिणादं मदरनाथंहरि प्रियं दलोकुधे
कस्यचनं वंदेमुमनसु॥१८॥ हरिन
मयीमालापवित्रं पापनाशनी॥ जेनि
नावलिरजेनदेनाधारयामं ह॥१९॥
इतिश्री परमजगन्मकुलवेष्ण वसू
उमणिवलिविरचितं हरिनामं मेचूर्णी
श्रीरामचंद्रम:॥ अर्जुनउवाच:॥ किंन
मकदेअजुउवाचश्च:॥ तानि
नामानिदिव्यानि नानिवद्धमिकेशव:॥
॥१॥ श्रीजगवानुवाच:॥ नारदंवामनं
विष्णुनरसिंहंजनार्दनं॥ जानिदं पु
उरीकाक्षं माधवंमधुसूदनं॥१॥ पद्म
नाजंपरं नवाऊंवनमाली: चक्रपा

णिनः॥ कृष्ण केशं विश्वरूपी महोदधीः॥ वैकुं
ठं वासुदेवं मसरामो नारायणो हरि॥ राघवं
केशवं मेव॥ वेद गरुडध्वजं॥ एतानि ष
चविंशनामानि यः स्मरेति दिने दिने॥ सर्व
पापक्षयो याति विष्णु लोके महीयते॥ गो
कोटि प्रदानेन हेम भार शतानि च॥ दिने दि
नेल नेत्र पुण्यं पारं नलभते॥ एता
नि पंचविंशति नामानि मेरुणी॥ कमापती॥
कुंठं नवं ग॥ श्री कल्याण मस्तु॥ श्री॥ श्री

॥ अथ पांन पचीसी लिख्यते॥ दुहा॥ सुरनर सिजद्व यो
निमै नरक निगो दर्लभतः॥ सहमोक्षी नीदमैसो वैकाल अ
नंत॥१॥ जेसे ज्वरके जोर सुं भोजन रुचि न जाय॥ तेसे कु
करम के उदै धर्म बचन न सुहाय॥२॥ लगै भूष ज्वर के गये
रुचि सुं लेय अहार॥ असुभ गये सुभके जगै जांनै धरमवि
चार॥३॥ जैसे पवन झकोरते जल में उठै तरंग॥ त्यों मन
सा चंचल भई परिगह के परसंग॥४॥ जहां पवन नहीं
संचरै तहां न जल कलोल॥ त्यों सब परिगह त्याग तें मनसा हो
अडोल॥५॥ ज्यूं काहू विषधर डसै रुचि सुं नीब चबाय॥

ममता मूल नटै मगन शिवै सु उपाय:॥६॥ मि
स्तंतु म ... जब होय:। मोह घटै ममता मि
बस्सन परसै नहीं निर्विषतन जब होय:। मोह घटै ममता मि
ट विषन वहै कोय:॥७॥ ज्यों सकिद्र नव का चढै बूडै जो
धम्मदेष:। त्यों उमनव जल मै पडै विन विवेक धरि नेष ॥ न
जहां आप डितगुण लगै षवटसुध विचार:। आतम रूचि
नवका चढे पावै सव जलपार॥८॥ ज्यों अंकुश मानै
नहीं महामत्त गजराज:। त्यों मन तृस्ना मै पडै गिनै न काज
अकाज:॥१०॥ ज्यों नर दाव उपाव कै गहि आनै गज सा
हि:। त्यों मन वस्य करै न तो निर्मल ध्यान समाधि:॥११॥ ति
मर रोग मानै न ज्यों लषै और की और:। त्यों तुम संसै मै परे
मिथ्या मति की दौर:॥१२॥ ज्यों उऔषध अंजन कीये तिमर रो
ग मिटि जाय:। त्यों सद्गुरु उपदेश तें संसै वेगि
॥१३॥ जैसे सभ जा तुजरे द्वारावति की आगि:। त्यों माया बचै:
मै तुम फंदे कहा जाउ गे लागि:॥१४॥ दीपायन सुत नै बचे ... ज्यों उ
जेन पसी निरगंध:। तजि माया दुहूँ सु काति पंथ॥१५॥ ज्यों तुम सकर तुन
धातके फेर सु घटि व ढि कंचन कांति:। पापउ सकर तुजे:।
ये: मूढ तम वहू जाति:॥१६॥ कंचन निज गुन न हित जे:
वो न हीन कहोत:। घट घट अंतर आतमा सहज सुभाव उदो
त:॥१७॥ पानी पीर पकार ज्यों सुध कनक ज्यों होय:। सो परग
ट परमातमा तुम्न पाप लेपीवय:॥१८॥ पवन रूवोगत न
सो: सुरसा मइ विलीन:॥ संगति पायउ साथ की: स
जन होय मलीन:॥१९॥ निंबादिक चंदन करै मलीयाच
लकी वास:। दुर्जन तें सजन भयो रहत साथ के पास:
॥२०॥ तैसे ताल सदा भरे जल आवै वहू ओर:। तैसें आ
स्रव द्वार सो कर्म बंध को जोर:॥२१॥ ज्यों जल आवत मूं
दीये सूकै सरवर पान:। त्यों संजम संवर कीये कर्म नि

नराजां निःसारन॥ जंबू दीसं जो गतैं पनासुर किन होय:।
ज्यो पुद्गल सुं तुम मिले मानत सकति सो मो मः॥२०॥
मोह्निमें टारि मां जीवें पोता परगट रूप: सुकल ध्यान
अमा मति: दरसन ग्यान अनूप:॥२०॥ कहि उपदे
स वनारसी चेतन अब कछु चेत:। आप बुझावत आ
पको उदे करन के हेत:॥२५॥ इति श्री ग्यान पचीसी
बनारसीदास कृत संपूर्णम्॥ ॥समाप्तः॥ ॥श्री:॥
॥अथ सप्त भूमिका लिख्यते। विषे विषे न ई द्वि सग:
गुरु तीरथ अनुराग:। तातें जद आ कु सील था श्रवण
मन लाग:॥१॥ जग वरतन गति ज्ञान मग:। प्रेम प्रगति
नित चित:। गुनगावत पुलकित कि दो दिन दिन
रस कु कित:॥२॥ दुजी कही विचारणा उपज्यो तत वि
चार:। एक न होय कोथन लग्यो: कोई कोप न वार:॥३॥
तनमन सा पुतीजनी [illegible] ॥ फिर कथ मय स्वरूप
[illegible]
ना वो तिलमें न र॥४॥ चतुर थी सत्वा पती: [illegible]
प उदे [illegible] नेग:। मजग दरसन लोल ले ज्यो मधुप
धारना:॥५॥ [illegible] सिका पंचम [illegible]
को फल: [illegible] दि [illegible] लो [illegible] होय [illegible]
रूप:॥६॥ कहे पदारथ [illegible] लो पनको होय [illegible]
वा: इहि पदारथ [illegible] नी [illegible] मिल भाव:॥७॥
लावा लावन [illegible] कछु मपगतु रज्या मांहि: [illegible]
[illegible] कहि [illegible] मांहि:॥ [illegible]
भूमिका संपूर्णं:॥

॥ श्री परमात्मने नमः ॥ राग रामकली ॥ गोबिंद से गुर
साई: पीव तेरे गोबिंद से गुर साई: ॥ सो हलास
अत्र हसत सुंदर रुकमणी सो जाई: ॥ टेक ॥
नंद देवकी ...
घर घर ...
॥ १ ॥ कोटि कोटि तिथि घर घर ...
सो गाई: ॥ ...
गाई: ॥ २ ॥ ...
यो माण लो ॥ ...
व ...
...
...
मो हन ...
...
...
...

॥कवईको॥कलजहांपरपेमनहीतहांमि
नानहीहोय॥आनंदहेतहोइ
नहीकलवासहेसोयः॥अरधनेई
एकारजकारणतामधिरहेय॥
बुधिपरहेकोमनउपजहांन हि

॥सोरठो॥आयोहेकलिजुगःमगजुगगयो
जीवरैनपगःआमोकोमोबांएरेकहीन
योपिछमेकगजुगगयोपिलायः॥
येदंपतिवमक्रियजायः॥२॥

।जलबांधूंजलबाईबोधुंजलके
सेरबोधुंसारानोमेरीना
मनुष्मेदीवदीपमेपान
हमारीनक्षगउड़कीन
वारश्मैत्रपठकाजे
मनगोलीनकनु
पांनपलीनालो

।।श्रीरामजी।।अथ सदाविग ।कोहलीमाझो१

।कपीलोमाझो१ ।नीलोखुखोमाझो१ ।आंवलीमाझो१

।हलदीमाझो१ ।मिरचीमाझो१

।खरसुमाझो१ ।अळगोजीयामाझो

।लेनधारा है लमैनधा घिरतसै ओलनगा वडोवेजलमा

ते जीवबीजेरो है।। दुयपरहरि दुयमनधरि ।।

।।दुहो।।जीव बीजेरो है।। दुयपरहरि दुयमनधरि बीणमे

तीधरो वणामेः।। च्यारु कोग दुन्यश्र रिवेदबीणमे

धीण।।१।।

।।गुरु २ देलोत्र वजीवीयाने रे श्लोकाले।।

।।इति बीबादु राकारामापरि श्रद्धमारवि।।कपोलो

जगर जिद्धु पर्तगो मधुक्त राजः।।१।। मधुर हरि गोमीतः

पिंगला कुकरो है जैकः।। कुमारीबार्ह त्सपंजणीना

ति दुपेराहृव।।२।। एतेमेगु रुवोरा जंश्च उविंश्चा तिरा

श्रितान।। शिक्षा वृत्तिभिरेषामन्वशिक्ष मिहात्मनः।।३।।

रकारो तारणे नेवव दिनियातिपातकापुनश्चविसते

लीमामकारस्य कपाटवत्।।४।। हरिमासनो कु

जीनहिनेवबडे है ... बलको ... मसको ...

समझ जाहे मन ...

नी थ्यावडा जना ... बनी ...

॥श्रीगणेशाय नमः॥ साषी कबीरजी की॥ ॥अथ साध कौ अंग॥
॥कबीर संगति साध की वेगि करीजै जाय॥ दुर्मति दूरि
गमायसी देसी सुकति बताय॥१॥ क॰ संगति साध
की निकल कदे न होय॥ चंदन होसी बांवना नीबन क
हसी कोय॥२॥ क॰ मथुरा जावे द्वारका भावे जा
गनाथ॥ साध संगति हरि भगति बिन कछु न आवे
हाथ॥३॥ क॰ मेरे संगी दोय जन एक वैष्णव एक राम॥
औ है दाता मुकति कौ औ सुमिरावे नाम॥४॥ क॰ बन
बन मैं फिरया कारनि आपने राम॥ राम सरीषे जन
मिले तिन सारे सब काम॥५॥ क॰ सोई दिन भला
जा दिन संत मिलाय॥ अंक भरे भरि भेटीये पाप सरी
रां जाय॥६॥ क॰ चंदन कौ बिडौ भलौ बेढौ आक पलास॥
आप सरीषे कर लीये जे होते उन पास॥७॥ क॰ साई कौ
हरी पानी पीवे न कोय॥ आय मिले जब गंग मैं सब गं
गोदक होय॥८॥ क॰ जा निह जिभ्या हरि जैसे
सु कुने है॥ ताकी संगति राम जी सुपिने हू नहि दे
हु॥९॥ कबीर ताकौ मिलाय॥ जास हिरदा ली है॥
नही तौ बेगी ठाय निलें जन को सहै॥१०॥ क॰ के
ती लहरि समंद की किति उपजे किति जाय॥ बलि
हारी ता दास की उलटी मांहि समाय॥११॥ क॰ पं
चवल धीया फिर कड़ी उजड़ उजड़ जाय॥ बलिहा
री ता दास की बेकि कर राषे गय॥१२॥ क॰ काजल के

रीकाटडीतेसौईअसंसार:।बलिहारीतादासकीपैस
उनिकसनहार।।१३।।क०काजलहीकीकोटडीका
जलीकाकोट:।बलिहारीतादासकीरहेरामकीउट
।।१४।। ।।साधीसुतकोअंग:।।कबीरहूकेरामकूं:
सकलभुवनपतिराय:।सबहीकरिअलगारहे
सोबिधिईमहिबनाय:।।१।।क०जिहिबिरीयांसो
ईमिलेतासनजांनेऔर:।सबकूंसुखदेसबदकाअ
पनीअपनीगैर:।।२।।क०मनकाबाहलाऊंडावहे
अमोस:।देषनहीदहमेपडे:दईकिसाकोदोस।।३।।
।। ।।अबिहडकोअंग:।। ।।क०साथीसोकीया:
जाकेसुषदुषनांहीकोय:।हिलिमिलिहायकरि
षेलिसुकदेविछोहनहोय:।।१।।क०सिरजनहार
विनमराहितनकोय:।गुनऔगुनबिहडैनहीस्वा
रथबंधीलोय:।।२।।आदिमध्यअरअंतलौअबि
हडसदाअनंग:।कबीरउसकरतारकासेवगतजे
नअंग:।।३।। ।।जीवनमृतककोअंग:।।क०मनम्हे
तकन्नयाउकलिनयासरीर:।तबपैडैलागैहरिफि
रे:कहतकबीरकबीर।।१।।क०घरजालंघरजबेर:प
ररासुपरजाव:।एकअचंभादेषीया:मडाकालकु
भाव:।।२।।क०मनमारयाममतामुई:अहंगईसिब
कूट:।जोगीथासोरमिगया:आसनरहीबिभूति:
।।३।।क०जीवनतेमरिबोभलो:जोमरिजांने

थ॥ मरनां पहलीजे मरै तौ क लिश्रजरां करहोय॥
॥करनी बिन कथनी कौ अंग॥ ॥क॰ कथ
कथी तो क्या भया जे करनी नां ठहराय॥ काल
तके कोट ज्युं देषत ही ढहि जाय॥१॥ क॰ जैसी
मुषु निकसै तैसी चाले नांहि॥ मिनषनही ओ
नंगति बांध्या जमपुर जांहि॥२॥ क॰ जैसी
मुषु निकसै तैसी चाले चाल॥ पारब्रह्म नेडा
हैपल में करै निहाल॥३॥ क॰ पद गाया मन
हरषियां साषी कह्यां आनंद॥ सो तत नांव न जांनी
गलि मैं पडि गया फंद॥४॥ क॰ करता दीसै कीरतं
न उचा करि करि तूंड॥ जांणै बुझै कुछ नही यौ
ही आंधा रूंड॥५॥ ॥साच कौ अंग॥ क॰ षुन
षांनदेमी चढी॥ मांहि पैडै दुक कलुणा॥ है जनेटका
रेगला कटावै कुण॥१॥ क॰ पापी द्रुजा वै [illegible]
की हिमां समद होय॥ तिन की दिष्या मुकति न ही॥
को टिनरक फल होय॥२॥ क॰ सकल बरण [illegible]
न को सकति मिलि जांहि॥ हरि दास [illegible]
तिक रि केवल जंमपुर जांहि॥३॥ क॰ [illegible]
लोक की सुमिरै नां ही साच॥ जांनि [illegible]
तजे का गै पक डै काच॥४॥ क॰ जि [illegible]
नीया करता केवल सार॥ सो [illegible]

रे जगकी लार॥५॥क॰ सब जग जु गदि बंधीया॥ सा
चतिनां दी वं व॥ सो जुग कं मारिये॥ ले ग्रजु माचा
नांव॥६॥क॰ जुग कूं जुग मिले॥ दूणां बधे सनेह॥
जु वे कूं साचा मिले॥ तब ही तूटे नेह॥७॥ ॥
॥कामी नर को अंग॥ ॥क॰ कामी क्रोध लिजे ज
पे न के साजप॥ रांम कहां ते जलि मैं को इ त्र बलो
पाप॥१॥क॰ रांम कहंतां जे खिजे॥ कोढी को गलि
जांय॥ सूकर को करि अवतरे॥ नाक बूडंते मांय॥२॥
॥क॰ कामी लज्या नां करे मन मांहे अहलाद॥ नींद
न मांगे सांथरो भूख न मांगे स्वाद॥३॥क॰ कामी
ते जीती नलो॥ बोले एक जु का ब॥ रांम नांम जांने
नहीं बांधी जे ही बाब॥४॥क॰ कहतां जीत हुं
नहीं गवार॥ बैरागी गिर ही कहा कामी उ
वार न पार॥५॥क॰ ग्यानी तो निज सत्य मांने नें
ही संक॥ दूजो करे बखिप ग्रजु तौ बिषे नि संक
॥६॥क॰ ग्यानी मूल गमाईया आपन सयेकर
ता॥ तिनते संसारी भला मन मैं रहै रता॥७॥
॥ ॥सबद को अंग॥ ॥क॰ सतगुर साचा सूर
वां सबद वा ह्या एक॥ लागत ही भुंमि लिगया॥ प
ड्या कलेजै छेक॥१॥क॰ हरि रस जे जन बेधीया
सगुण सिउ नि जांहिं॥ लागी चोट सरीर मे कर
[illegible]॥२॥क॰ ज्यों ज्यों हरि गुण सांभ

लौलौलौ लागैतीरः॥आंधी आंधी [illegible]

सरीरः॥२॥क॰ ज्यौं ज्यौं हरि [illegible]

गैतीरः॥ लागै तो भागै नही साहिन करै [illegible]

॥मन को अंग॥ ॥क॰ हद का [illegible]

निरंतर वास॥ कबीर [illegible]

सिध सुभाव॥१॥क॰ [illegible]

बासतै होय॥ मन [illegible] जल [illegible]

॥२॥ क॰ पंच [illegible] तो [illegible]

न॥ जि [illegible] मंडल [illegible]

॥३॥ क॰ सुरति समानी निरत मै [illegible]

लिव मैं मानी लेख मैं आपा मांहे [illegible] ॥४॥ [illegible]

[illegible] दीया मन मैं नांही थिरः॥ कहै [illegible]

मिलै जब लग देव सरीरः॥५॥ क॰ [illegible]

[illegible] नां आदिल [illegible]

[illegible] गये जब सांई मिल्या [illegible]

[illegible] को अंग॥ क॰ [illegible] की जीव [illegible]

नैचा लः॥ कहै कबीर [illegible]

लः॥१॥ क॰ [illegible] पिंड [illegible]

कोयः॥ जीव [illegible] मेमरे [illegible]

॥२॥ ॥माया को अंग॥ क॰ माया पापनी [illegible]

गीहाटः॥ [illegible] जग तो [illegible] पस्या [illegible]

॥१॥कं० माया पापनी लालेला या लोग:॥ हरी बिन
हीनजोगवी ईनकारहै बिजोग:॥२॥ ॥
॥बिस्वासको अंग:॥ कं० सबलि अपने रा
म कीजि नि हिंदीया हांन:। कासी तजि
म गहर चले चितन नया ओं न:॥१॥कं०
गुं का है डरै सिरपरि हरिके हाथ:। सीच
ढिकरिजै जीय कंकर सुं जो जु लाय॥२॥
॥ बीनतीको अंग:॥ ॥कं० बिनीयां बाती
बलगुया अक सुरां कै माया:॥ हरि जिन काजे
हो पिते दिनने उआया:॥१॥कं० औसर बीता
अलपतन पीवरला पर देस:। कलंक उतरे
कंसबानानो नरम उदेस:॥२॥ कबीरहद का
कैगया किती बार कबीर:। मीरां तुज मे क्या बता
सुणां न बोले पीर:॥३॥ कं० मन मेरा है उजसुं
सुजेते ना हिय:। नाना लोहसुं मिलेसी पिलसे
नहीकोय:॥४॥ ॥माया को अंग:॥ कं० मा
यादीसै अंतका नीर रैमासीस:॥ बिलसी सरला
नांबडी: सुमिरि सुमि रिजगदीस:॥१॥कं० रजबी
रजकी को खलीता परिसागया दरप:। नांम नांम
बिन कूडी टै: कनक कामिनी कूप:॥२॥कं० री
सम सारका गाल मायामोह:। जिहधरि जिता बधावना:
ति हियारि तिता अंदोह:॥५॥

॥मनकौ [illegible]

आकडे [illegible]

निनः वै [illegible]

हीतो है नातन का [illegible]

वलीतोक देने च [illegible]

नीकं वाचमलीयाहा [illegible] दिवरा [illegible]

लुःमीकेमउिहे रानिः॥३॥ [illegible]

॥ कःजीवविलखैजीमशुजे लमन [illegible]

जोविंदमिलेनजलक्षुतै [illegible]

कःरांमहिदीरानां निकरिःउनीयांज्योई [illegible]

जीवांसुराजाकहि भाग्याकाआनीनः॥१८॥ ॥

॥सुमिरं एकोअंग॥ ॥कः [illegible]

लैदीवैवातिः॥तेलपद्यावानी [illegible]

नरातिः॥१॥कः सूराक्याकरैजा [illegible]

एकदिनीजीयोवसीलंबापावप [illegible]

नाक्याकरेकोहिनदेषेजानिः॥जाको [illegible]

नाहीक्रैसंगिलागिः॥२॥ [illegible]

वैद्यवः॥जाकावाप्रानाईवै [illegible]

सूराक्याकरैले [illegible]

मपडाकरक [illegible]

नवे [illegible]

उपजि बपेबेकांम:॥ ६॥ क॰ प्रेम न चषा ...
उपजिबपेबेकांम:॥६॥क॰ प्रेमन चषा जा ... आयांलु जाव:॥७॥
याका व:। सुनां घरका पाऊनां ज्यों आयां त्यु जाव:॥७॥
क॰ जिहि हरि जैसा जांनीयां: तिनकुं तैसा लाभ:।
ओसा प्यास न ऊपजई: जब लग धसै न आभ:॥८॥
क॰ रांम कहहि रांम ह्हि जु नहि: तिन की सैबलि जा
उ:। रांम कबा ऊिआनहि: उजाहि तिनकाले उनना क॰
॥९॥ क॰ रांम पियारां छाडिकरि जपै आंन का जा
प:। बेस्या केरा पूत ज्यों कहै कौन सु बाप:॥१०॥ क॰
आपन रांम कहि: और रांम कहाय:। जिन मुषसै
मन उचरै: तमुषकेर कहाय:॥११॥ क॰ जैसे माया
मन रमै: यूं जे रांम रमाय:। तो तारा मंडल छाडिक
रि जहां केसो तहां जाय:॥१२॥ क॰ लूटि सकै तो लूटी
यो रांम नांम की लूटि:। पीछै ही पछिताउगे: इ
टि:॥१३॥ क॰ लूटि सकै तो लूटीयो
कत न जैहै छूटि:॥१३॥ क॰ लंक कुंगरहे गाउ घेडले
रांम नांम न जिजार:। काल कंठ कुं गहैगा उघे
उबार:॥१४॥ क॰ कबिनाइ बरीसु मैं रांम हरि नांम
सुलीउपरि नट बिद्या: गिरूं तो नाहीं ठांम:॥१५॥ क॰ रांम बिना सो बा
॥ चितावणि कौ अंग:॥ क॰ रांम बिना सो बा
॥ ... धन जोबन चलि जा
वर: ईचर जकीया एह:। धन जोबन चलि जा
वै: ई चर जकीया ए हैं:॥१॥ क॰ जांम ण मरण
यजा: दे हिहि यह सैह:॥१॥ क॰ जांमण मरण
विचारिकरि: कूउ कांम निवारि:। जिन पंथ
उकूं चलणां: सोई पंथ संवारि:॥२॥ क॰ आ

कका बिहि कपंच दिनः ऊंगलि हो यगावासः ।।३
परि उपरि फिरै गेन्दार चंरं ते घासः ।।२।। क० मरहि
गेमरिजां हिगेः नांवन लेगा कोयः । उजळ जायव
मांहिगेः ओछिवसंतीलोयः ।।४।। क० सेन क्रिकोए
कः मृग निभायाजा हिः । सेन विन्चारा क्या करै
जो मम मनकईवा रिः ।।५।। क० बिनरमवाली
बाहिरा चिरीया भाया सेनः । आधमरधा उव
रैचे । तिसकै तो चेतिः ।।६।। क० मेरा जरेलकनी
जरै जरैज रांवे न हारः । कोति कहारे लीजरेः
कास निकहं पुकारः ।।७।। क० देवल हाउका
माटी तन्य बनां नः । मिउ ... न हां पाया नहीं देव
जकासहनां एः ।। ८।। क० देवल ... हि
गआ इट नई सेवारः । करिचे जाराकुं गीत
गीजुं टहेन दुजीवारः ।।९।। क० जे धंधो तो
है लि विनि धंधे छूले नहीः । तेनर बिन कामदलि
पांधधा मे घाको नहीः ।।१०।। क० अपनेरै लिकेः उ
परि आये नैणः । जीव पड्या बजलटि मेजगे तो
नैन न देनः ।।११।। क० अपनेरै लिकै पारस जीवमे
बेकः । जे सोउ तो रोवजनः जे जागूं तो एक ।।१२।।

।।क० ऊहै चितावनी जिनकूं काटी जाय:।ज
लीप्रगनीगया जिनकाउले गाव:।।१२।। ।।
।।का लकोजींग:।।   ।।क० उचौदीसेरावटीनी
चौदीसेपोलि:।रांम भजि नां सबब हिरख्य पर्व
उजमकीरोलि:।।१।।क० उचामंदिर ओलहर
मैंजीवितरीपोलि:।एक रांमके नांम बिन जम
पाडैगारोलि:।।२।।क० कांयकुणावै माली म्रा:
सूनां माटी लाय:।मीच अुहो लीपापनी उदा
रेलीजाय:।।३।।क० ऊबुधीमबलीजोबरकी
मिल:।नरीयासरवर काढिकरि लीलरलाया
कित:।।।क० म ज्ञांन खुटाको:जोबर मेरा
काल:।जिहि जिहि जाबरकू फिरि तिहि तिहि मडे
आ लि।।५।।क० जंत्र न बाजई टुटि गये सब
तार:।जंत्र बिचारा क्या करै:नहीबजावणहा
र:।।६।।क० बरीयां बीती ब ल
गयो तेकुरावै माया:।हरि जिन कोहाथतै:
दिन न जाया:।।७।।क० गाफिल क्या फिरै मो
बेकहा न चीत:।एवड मां हिरै लेवल्या नजा प
कडि मटीक:।।८।।क० बेट जाया क्या नया कह
बजावे घाल:।आंबन जानां केर लाजुकीरीका
नाल।।९।।क० जिन देंम जाये ते मुये हंमली चलैण

ः। जेहि सक्के आगे मिले तिन जीवं धमा नार:॥
॥ ॥ सजीवन को अंग:॥ कबीर कहत हुतो
सुमरी मसजीवन स्र:। जा मैं रहै सु खोत पनका
कहत हैं र:॥१॥ ॥चितावणी को अंग:॥
क॰ मनिषा जनम दुर्लभ है देह न बारंबार:॥
तरवर ज्यूं फल झड़ि पड़े बहुरि न लागे बार:॥
॥क॰ हरि कीन्ह गति करित जिमाया बिसचो
ः। बारबार नहीं पाइये मिनषा जनम की मोज:।
॥२॥क॰ पाणी ज्यूं रत लाव को देह हि छिन गयो बि
लाय:। इस पर बज्र ऐसे जाय गा सहे तो गहि ला
य:॥३॥क॰ झूठे न जानत है सके तुले झ बहो
डि:। श्री तिबहुरा वक राम सुजन मधु तिनुका तो
डि:॥४॥क॰ कांची कारी जिन करो दिन दि
न बधै बियाधि:। राम कबीरे रुचि नहीं:
याही औषध साधि:॥५॥क॰ अपने जीवन ते
दुख बाते धोय:। लोन मिग इकार ऐसा ना
फूलन सोय:॥६॥क॰ बीतो एके गये दउ य:
अनुक रिबं स मिझा रि:। मान करै पीउ नहीं:।
पीउ ते मी न मिझा रि:॥७॥क॰ दुनी यांका
सुकीन रीझे सुहि रुस:। मन। दया के लहि राम

का: कछु रहे ऊनीक पा:।।७।। क• दुनीयाके रे
कछ नही मेरे दुनी अवयात:। साहिब न्हे
सुं षडा नब दुनीयां दे जगजात।।९।। क• जिहि
जेवडी जग बंधीया: तूं जिन बंधे कबीर: जा
सी आटा लूण ज्युं सोनां सबा सरीर।।१०।।
क• कहत सुनत जग जात है: बिषे न सूझे का
ल:। कबीर प्याले प्रेमके नरि नरि पीवे रसाल:
।।११।। क• हद के जीव सु हितकरि मुषान बोलि
जे लागे बेहद सु तिन सुं अंतर बोल।।१२।। क•
सापतकी सनातूं मति आवे जाय एकै वाडे को
वडे नोग्गद हजग व।।१३।। क• केवल रांमकी
तूं जिन छाडे ओट:। घण अहरणि बिचि लोह ज्युं
घणी सहे सिरि चोट:।।१४।। क• नाका का ना कि
न दे महिगे मोल विकाय:। जा ह करा जा रांम हे
ओरन वेरा आय:।।१५।। क• ज्यों को लीब जो वणो
वणतां आवे जोर:। अेसा लेषा मीच का: कछु दो
उनके तो दोउ:।।१६।। क• मेमे बडी बलाय है
नकैन निकसी नाजि: कोलों न रहे सबीक
इल मेटी आगि:।।१७।। क• मेमे मेरी जिन करे
मेरी पग को पंछु रो: मेरी ग

रकीपात्र:।।१८।। ।। विरकतार्ई कौ अंग:।। १५
क० मोतीजोवत बिगसीया मांनुपाघरआई रात्र:।आ
अनुअंधेरी नीकल्याजां तिबहाउ जाय:।।१।।क० आ
गांधिकोपीनकी साधनमानेअंक:।रां मंञ मलम
गारहैगिनेई दकौरंक:।।२।।क० कोई किसही कानही
मुषदेषेकी कांनि:।जे को बिलग नमानही जे अं
षितपहिचांनि:।।३।। ।। संगति कौ अंग:।। क० दे
षादेषीपाकडै जायअपरचै छुटि:। बिरलैकोईग
हैअतगुरसांम्हीम्रुठि:।।१।।क० संगतिहै कंदेनच
टईरंग:।बिपतिपड्यां यौछाडसी ज्यौकांचलीभु
यंग:।।२।।क० करीयेतोकरिजांणीयेसारीषांकु संग
लीर लीर लोई थईतोईनछाडारंग:।।३।।क० बहुत
नदीजेतासकुं स्तरअवगनलषेयक:।सिरउपरआ
रांमहै तउन दुजा सोय:।।४।।क० मांहनरांकनतो
लीयेहाडुनकीजेनेह:।मांयारातामांनवीतिनमु
किसासनेह:।।५।।क० जाकुंप्रीतिकरिजेरेनिर
वाहैओरि:।बिना विविधिनराचीयेदेषतलां
जेषोरि:।।६।।क० तनपंषीनव्याजमनतहांउडिजा
य:।जोजैसी संगति करै सोतैसेफलषाय:।।७।।
।। ।। बिरहकौ अंग:।।क० इतपियारपिताकौं

गोदा निलागा जाय:। लोन मिगई हाथि दे आप
निगया तु लाय:॥१॥ क० उनी बांउ पट कि क
रि: औ त रि री अउ पाय:। रोवन रोवन मिलिग
ता पिता पियारे जाय:॥२॥ क० सांई औ बबलि
गई मांस न रही या देह:। जब लग सांई अवगु:
इ उतन कै है तह:॥३॥ क० नैन है मारि मिलिग
ये छिन छिन लोई तु ज:। नांह मिलेन मे सुधी
असी विद नि मु ज:॥४॥ ॥सतगुर को अंग:॥
॥क० सतगुरु की महिमां अनंत: अनंत कीउप
गार:॥ लोचन अनंत उघारीया: अनंत दिखांव
नहार:॥१॥ क० जाका गुरु है अंधला: चेला खर
निरंध:। अंधे अंधा ठेलीया: दुनु कूप परंत:॥२॥
॥क० निसि अंधीयारी कारणे: चौरासी चंद:॥
अति आतुर उदै नई: हष्टि न ती आवे मंद॥३॥
॥मांस अहारी को अंग:॥ क० पापी इजावे सिकरि:
भखे मांस मद दोय:। तिन देष्यां मुकति नहीं कोटि नर
क फल होय:॥१॥ क० सकल बरण एकत्र कै: सकति
पूजि मिलि खांहि:। हरिदास निको गांति करि: केव
ल जमपुर जांहि:॥२॥ क० लज्या लोक की सुमिरे ना
ही साच:। जा निवु कि कैचन तजे काचो पकोई
काच॥३॥ क० जिन जिन जांनीयां करता केवल सा

रा:मोसां णी काहे चले: झूठ जग की लार:॥७॥ क० अब
जग झूठ हि बंधीया साच हि नांही गांव: सो झूठ करि
मारीये: ले यजु साच नांव:॥५॥ क० झूठ कूं झूठ मिलै:
झूठ नां वधे सनेह: झूठे कूं साचा मिलै: त बही तुटै नेह॥३॥
॥पंड्या को अंग:॥ ॥क० पढिबो ही तलो: पढिबा
ते तलो जोग: रांम जनां सु प्रीति करि: तलै न लनी दो
लोग:॥१॥ क० पढिबो दुरि करि पुस्तक देय बहाय:॥
बावन अक्षर सोधि करि ररै ममै चित लाय:॥२॥ क०
पढिबा दुर करि आथि पड्यां हीं भार:। जीउ न उपजी
प्रीति सुं तो क्युं करि रेसुकार:॥३॥ क० पंडित सब
सुये पढि पढि वेद पुरांन:। तगति न जांनी रांम की
बाजिर हानी आंन:॥७॥ क० पोथा पढि पढि जेसु
वा पंडित तया न कोय: एकौ अक्षर पेम कौ पंडित
होय:॥५॥ ॥ विषया विरकत को अंग:॥ क० नि
रवैरी नि हकांमता सांई सेती नेह। विषया सुं न्यारा
रहे संतन का मत एह:॥१॥ क० कांम मिलावे रां
म कुं: जे कोई जांने राखि:। कबीर विचारा क्या करे
जाकी सुषदेव बोले साखि:॥२॥ ॥ सुमिरण
को अंग:॥ क० कहतां जात अं: सुनतां है सब कोय:
रांम कहे भल होयगा नहीं तर भला न होय:॥१॥
क० कहि कहि [illegible] कथिगया कथि गया ब्रह्म म
हेस:। रांम नांम तत सार है सब काहु उपदेस:॥२॥

॥कं० नगतिनजनहरिनांवहै। जोउपअपार॥
मनसावाचाकरमणांकबीरसुमिरणसार॥२॥
॥परचाकोअंग॥ ॥कं० हदछाडीवेहदगया
कीयासुन्यअसनांन॥ मुनिजनमहलनपावई
तहांकीयाविश्राम॥१॥ ॥विरहकोअंग॥
॥कं० सबरंगतंतिरबाबतनविरहबजावेनित॥
औरनकोईसुनिसकैकैसांईकैचित॥१॥कं० इह
तनजालुमसिकरूंधूवांजायसरगि॥ बाजगपत
हिंजेनयसुयसिलसजेसिलगि॥२॥ ॥जिहकामी
पतिव्रतकोअंग॥ ॥कं० नैनाअंतरिआवतूं
यालकैतः॥ जेहसिबोलुंओरसुतोनीलरंगाउदंत
॥१॥कं० नैनांनीतरिआवतूंज्योंहूंनैनझंपाउ॥२॥कं० मे
नांऊंदेपुंओरकुं। नांतुझदेषनपाउ॥ मेरातुझकूंमुझ
रासुझमेकछुनहीजेकुछहैतेरा॥ कं० रेषसदरकीकाजल
पतांवपालगोमेरा॥३॥ नैनोरमईयारमिरह्याजाकहां
दीयावनाय॥ नैनोरमईयारमिरह्या पियापिया
समाय॥४॥कं० सीपसमदकीरटेपियासपिया
स॥ समदतिनकरिकरिगिनेस्वातिबुंदकीआ
स॥५॥कं० सुपसुंजायषा॥ आगेआयाउष॥
जाहसुपघरिआपनेहंमजानेअरुदुष॥६॥कं० जि
तेजगनोहमआगया॥ अबडरनांहीमुझ॥ ॥७॥कबे
तिनमेरेचांदीयेबाजपियारेतुझ॥

ते तो एक ही जांनीयां तो जांन्यां सब जांन।। जे वो
कन जांनीयां तौ सबही जांन अजांन।।८।। ।।
वा पिक को अंग।। क॰ पाडे सी कुंडुसी तो तिलं
लु[illegible] पकी हां पि।। पंडित न वे सुरा व
पां पी पीवे जो पि।।१।। क॰ आगकथा कहै
तरि न जा नां हि।। औरां कुंपर मोधतां गयामु
रिका मां हि।।२।। क॰ नीर घक रिकरि जगतु
ऊडैपां णी कायः।। तां मैं हिरां मज पंतडा का
पसी ह्ला जाय।।३।। कां पी कां गे घर करै पां वे
गा नीर।। मुकति न हीह रि नांव विन दूं कहै
एक बीर।।४।। क॰ मोरतार की जे वडी न लि बं
पो सा सार।। का हे पि कहुं बोसुत क लितदा
निबार बार।।५।। क॰ जैसी पीछे संचरै औ
ीप हली होय।। काज न विन सै रेन रा कुधि
लेरी होय।।६।। क॰ हरि का नांव कुबुधि रहै
कि तार।। तो सुप तै मौती ऊडै हीरा अनंत अपार
।।७।। क॰ कोई कि रा पे सा वधा न चेत न पहुरे जा
ां।। बस तांवां सो पोसु बिसे चोर न सकै।।८।।
।। ।।पतिव्रत कौ अंग।। न
तब लग निफ्ल सेवा। कहै

॥क॰ नगति नजन हरि नां वहै दूजा दुष अपार।
मनसा वाचा करमणां कबीर सुमिरण सार॥२॥
॥ ॥परचा को अंग॥ ॥क॰ हद छाडी बेहद गया
कीया सुन्न अस्नांन॥ मुनि जन महल न पावई
तहां कीया विश्राम॥१॥ ॥विरह को अंग॥
॥क॰ सब रंग तंति रबाब तन विरह बजावै नित॥
और न कोई सुनि सकै कै सांई कै चित॥१॥क॰ इह
तन जालूं मसि करूं धूवां जाय सरगि॥ बाज रापत
हिं जे नय मुये मिलगि मिलगि॥२॥ ॥निह कर्मी
पतिब्रत को अंग॥ ॥क॰ मीतडी तो ऊन सु मेरे बहु गुण
याले कंत॥ जे हरि सिबा लूं और सूं तो नील रंगाऊं दंत
॥१॥क॰ नैनां भीतरि आव तूं ज्यौं हूं नैन झंपाऊं॥
नां हूं देखूं और कूं ना तुझ देखन पाऊं॥२॥क॰ मे
रा मुझ मे कछू नहीं जे कुछ है ते रा॥ तेरा तुझकूं सौं
पतां क्या लागे मेरा॥३॥क॰ रेष मंदर की काजल
दीया वनाय॥ नैनों रमईया रमि रह्या दूजा कहां
समाय॥४॥क॰ सीप समद की रटे पियास पियास
स॥ समद तिनका करि गिने स्वाति बुंद की आ
स॥५॥क॰ सुख कूं जाय था॥ आगे आया दुष॥
जाह सुख घरि आपनै हूं मजा ने अरु दुष॥६॥क॰
तो जगतो हम आगया॥ अब डर नांही मुझ॥ नि
जिन मेरे चाही वे बाज पियारे तुझ॥७॥ कबी

जोतो एकहीजांनीयां तोजांन्यां सबजांन॥ जेवो
एकनजांनीयां तौ सबही जांन अजांन॥८॥ ॥
चांणिक कौअंग॥ क॰ पाडेमीजु तुमीणौ तिलं
कि लज्या॥ मुषकीहां णि॥ पंडितन बेमुराव
गीपां णीपीवें कां णि॥१॥ क॰ आसकथा कहे
नीतरि नेष्या नां हि॥ औरां कुंपरमोधतां गया मु
हरिका मांहि॥२॥ क॰ तीरथ करिकरि जगमु
वा ऊंडेपांणीन्हाय॥ रांमहि नां भजपतंजका
लघसी आजाय॥३॥ कासीकांठे घर करे पीवे
गंगानीर॥ मुकति नहीं हरिनांव विन यूं कहे
दासकबीर॥४॥ क॰ मोरतोर की जेवडी बलि बं
ध्यो संसार॥ कांइ भिकडूं बो सुत कलित दा
उनिवारंवार॥५॥ क॰ जेसी पीछे संचरे औ
सी पहली होय॥ काज नविनसै रेनरा कुधि
पलेरी होय॥६॥ क॰ हरिकानांव संभ्रुधिर है
इकितार॥ तो मुषते मोती झडे हीरा अनंत अपार
॥७॥ क॰ कोई किरांबेम्यावथा नचेत नपहरे जा
गि॥ बस्तबांसे एंजु भिसे चोर नलागे लाग॥८॥
॥ ॥पतिब्रतां कौ अंग॥ क॰ जबलग तिनका मता
तबलग निफल सेवा॥ कहे कबी वैकुंठ मिले निकां
ही २

मी निजदेव ॥१॥ क॰ सिष साधां [illegible] कीजै माधौ
कीयो न मित्र। चालै पेहरि मिल [illegible] बिचही अध
क्या चित्र ॥२॥ क॰ कलिजुग आय करि कीये ब
हुतेरे मित्र। जिन दिल बांधी एक सूं ते सुष सोवै
न चिंत ॥३॥ क॰ उ बोलो करै तो बाजूं उठि उर
करै तो जांउ। जुं हरि राषै तुं रहूं जो बेसु पांव।
॥४॥ क॰ मन परतीति न प्रेम रस ना इस तन में ढंग।
क्या जानूं उस पीव सूं कैसे रहसी रंग ॥५॥ क॰ उ
सा सं मरण का हेत सूं कदे न होय अकाज। पतिव
रता नागी फिरै उन ही पिव कूं लाज ॥६॥ क॰ धार पटरसो
परमेसुर पाउणी [illegible] नही रहै। ज्यो पलक न आवै पास ॥७॥
जनम जाति करि [illegible]
॥ जीवन मृतक को अंग ॥ क॰ बुरा बुरा सब को कहै
बुरा नही है कोय। जो दिल षोजु आपणा तो मुज सा बु
रा न कोय ॥१॥ क॰ बेर संत का [illegible] परदामनी ॥२॥
कबीर [illegible] मा कीरे लोजु पाव तिन लिया [illegible] अभिमान।
क॰ रोडा होय रह बाट का तजि पाषंड अभिमान
[illegible] मिलै भगवान ॥४॥
क॰ रोडा भया तो क्या भया पंथी कूं दुष देह। ह
रिजन ऐसा चाहिये जिसी जमी की षेह ॥५॥
क॰ षेह भई तो क्या भया उडि उडि लागे अंग। ह
रिजन ऐसा चाहिये [illegible]

हरिजनअैसाचाहीजे पांनीकेअैरंग:॥५॥ क• पां
नीजयातौकाचयालाता सीलाहोय:।हरिजनअ
अैसाचाहीजेजैसाहरिहीहोय:॥६॥ ॥छ॥
॥गीत:॥वीकांकांथलांवीरांवणवीरांकुणजोवातांम्र
ची:।वीकावैरांणीणकांनैता निघैनकरोकाईकाची:॥
नलांनलांरजसतपुजालांलछिणकुलमतांलावो:।ज
मलेवातराकज्योजाडीआडीमगांआवो:।गढडीना नि
कलज्योगढसाहिबसाचसुहावै:।रहज्यौपांमधरमीरा
गांजुगपणनांवनजावै:।राजासुं श्री नरमतां राषो लोहलडे
जसतीज्यो:।दलपतिवारमतांदेषालौकरणवारसीव्री
ज्यो:।ईसरकुकंमकवीस्वरसोभै:वुरोकालविलासी:।
धरकौमतांमेल्हीयोधांणईलाधारैघरआसी:। मिली
यातिकैमाजनैमिलसीअणमिलीयांजससीसी:।सु
तोहोसांमधरमीरागेडांजुगांवातरहिजासी:॥१॥
॥गीत:॥वांणारसीपढिवा कि सुंवसीजैआरंनकीजै कि
मअंनेक:।होयअहरांमांहि देषीजैवेदांच्यारांरौअ
र्थविवेक:।पढिगुणि किसुं लिषांकांपोथीआगम
निगमअरथउघेड:।नरैमसैमैआयोरहसीनववा
करणांतणौनिवेड:॥५॥जढसगलाजिकेरांमन
जांणैजांणैरांमतिकेसबजांण:।एकेअह्नरजो
पारउतरसीयैतौपढियेकिसाअगरेडरांण:।का
नीयोकहैरांमसुबकहतांअवर विदेसुवीसरीया:।
उसैअह्नरलिषऔनरगतिअहिनि सिजपेको
उबरीया॥२॥

हमारै सोच ॥१॥ दूषणकाव्य

॥५४॥ सुरपति वाहण ॥ अरिप ॥ अरिपरिपे रिपे

ण ॥ ता कौ अश्व ॥ मेरे है कोई दिन मासे चेण ॥ अ ॥ गए

पति वाहण ॥ अरिप ॥ अरिपकौ असवार

कोई मो जे बालक लो ॥ और गेल की धार ॥ २ ॥ जे

॥जउलीराइता॥ पोतीजमावसमूलकु ञयाज्ञा
पामः। निहचलमांधीमोलउीजलहर१रैजगसः॥१॥
माहीछविनगजीया मुहगीथ्रैकिपासः।माहीसालुवि
मलीजलहरकेहीजस॥२॥माहविसीयो जेझीसा
वणपुरवावा लिः। उंककहेहै जउलीममोजमघोका
लिः॥३॥माजनवीजनवदलीधूंवऊतमवावाः। वोईम
उोवकुलोनरांसीमवहे सीपावः॥ रोजसवनिगलोज
रणीगलोगलोजजेगमलः॥ कोव णपंचकुजेगलेमदी
वहेजलनरसा॥४॥ थीदलीयाकासीरहेदीहीएककदो
यः। उंककहेहे जउलीजलहरजायोजोयः॥५॥मकेउा
मुहकणकणे निजहरउैपेमतः।तो रमजा लीजउलीम
हीयरघणकरमंतः॥६॥ वाजेवावसवदलीदीन एकक
दोयः। उंककहेहे जउलीजलहरजायोजोय॥ ना नीतरपं
बोजउलीपछिमदिसिचालैतः। दिवसचवथेपंचमे
महीयरघणकरमंतः॥७॥

॥रामकहै दुनीयागणपावै

षांडकैहै सुषमीग ...ीकानककी संगतसुवारां

कैहै॥ ३॥ अच्चुपतवनही पावै॥ भीजलकहै जोती स्व

मे॥ ६॥ ईकबार ... वनमेकेलकीन॥ ७॥ ॥श्री

॥श्री लषमीनारीयणजी सदा सहाय छै जी

जगतम्हारै रांमहमारै॥ ७॥ जोजनकहै गोत्रीकीस

... मेनवचनत्रैसेकहै रामदा

मेलकीने॥ ८॥

॥ चोवीस २४ गुरु दत्तत्रेयरा ॥ षट ऊरमी ६

५ तत्व	५ तनमात्रा	१ जन्म	१ मरण
१ सुरज	१ चंद्रमा	१ हर्ष	१ शोक
१ समुद्र	१ ऊजगर	१ छुधा	१ पिपासा
१ कपोत	१ पिंगला		
१ काल	१ बालक		
कुमारी	१ इषुकार		
सरप	१ मकरी ऊर्णनाभ		
हस्ती	१ मधु		

६

॥श्रीगणेशायनमः॥ ॥अथवज्रसूचीलिख्यते॥ ॥चिदा
नंदरूपायसर्वधीवृत्तिसाक्षिणे। नमोवेदांतवेद्याय
ब्रह्मणेनंतमूर्तये॥१॥ वज्रसूचीप्रवक्ष्यामिशास्त्रमज्ञानभे
दनं॥ दूषणंज्ञानहीनानांभूषणंज्ञानचक्षुषां॥२॥ ब्रह्म
क्षत्रियवैश्यशूद्राश्चत्वारोवर्णास्तेषांब्राह्मणएवप्रधानः। वे
र्णानांब्राह्मणोगुरुरितिवेदवचनानिस्मृतिरपि। [illegible]
नितत्रतत्रचोद्यमस्ति॥ कोब्राह्मणोनाम। किंजीवः। किं
जातिः। किंवर्णः। किंपांडित्यं। किंधर्मः। किंज्ञानं। किं
कर्मेति॥ अत्रोविकल्पाः प्रथमंजीवोब्राह्मण इतिचेत्तन्न
सर्वस्यापिजनस्यजीवस्यैकरूपत्वात् [illegible]
नजीवस्यैव॥ अन्यच्चदेहोब्राह्मणइतिचेत्तन्न [illegible]
र्यंतानांमनुष्याणांदेहस्यपंचभूतात्मकत्वात् [illegible]
जरामरणादिधर्मदर्शनात् [illegible]
पुनश्चदेहोब्राह्मणइतिचेन्नहिपितृमातृशरीरदहने
पुत्राणांब्रह्महत्यादिदोषसंभवात् [illegible]
सेव। नहिवर्णोब्राह्मणइतिचेत् [illegible]
त्रियोरक्तवर्णः। वैश्यःपीतवर्णः। शूद्रःकृष्णवर्णः
तस्यवर्णोब्राह्मणदर्शनात् [illegible]
स्यैव। अन्यच्चकर्मब्राह्मणइतिचेत् [illegible]
प्राणिजीवति। क्षत्रियः [illegible] वैश्यः [illegible]
यमोपाभावात्। तस्मान्नकर्मब्राह्मण [illegible]
च। जातिर्ब्राह्मणइतिचेन्न [illegible]
ह्मर्षयोबहवःसंतीति। ऋष्यशृंगो [illegible]

श्राह्मणो॥ गौतमः शशिपृष्ठात्। वाल्मीको वल्मिकात्। वां
डालीगर्भोत्पन्नो महामुनिर्मातंगीपुत्रो; मांडव्यो मंडू
कोत्पन्नः॥ व्यासः कैवर्तकन्या। वशिष्ठो वेश्यायां। वि
श्वामित्रः क्षत्रियायां। अगस्त्यः कलशाज्जात इति श्रूय
ते॥ तेषां जात्या विनापि सम्यक्ज्ञानं विशेषाद्ब्राह्मण्य
मुक्तमेव श्रूयते। तस्माज्जातिर्ब्राह्मणो न भवत्येव। अन्य
च्च। पांडित्यं ब्राह्मण इति चेत्तन्न हि क्षत्रियवैश्यशूद्राद
योऽपि परमार्थवाक्यप्रमाणवेत्तारो बहवः संति। तस्मा
त्पांडित्यं ब्राह्मणो न भवत्येव। अन्यच्च धर्मो ब्राह्मण इ
ति चेत्तन्न हि क्षत्रियवैश्यशूद्रादयः इष्टापूर्तादि धर्मका
रिणो बहवः संति। तस्माद्धर्मो ब्राह्मणो न भवत्येव। अन्य
च्च। धार्मिको ब्राह्मण इति चेत्तन्न हि क्षत्रियवैश्यशूद्राद
योऽपि। कन्यादानं गजदानं हिरण्यदानं महीदानं। दा
तारो बहवः संति॥ तस्माद्धार्मिको ब्राह्मणो न भवत्येव किं
तु करतलामलकमिव परस्परोद्बोधेन कृतार्थः। तथा का
मरागद्वेषादिरहितः शमदमादिसंतोषमानमत्सर्य तृ
ष्णासंमोहादि दृष्ट्यादिनिवृत्तः स एव ब्राह्मण उच्यते। तथा
हि॥ जन्मना जायते शूद्रो व्रतबंधाद्द्विजोत्तम। वेदाभ्या
सी भवेद्विप्रो। ब्रह्म जानाति ब्राह्मणः॥१॥ इति श्रुत
एव। ब्रह्मैव ब्राह्मणो नान्य इति निश्चय इति कर्मयोगी
च विद्वांस। अंतरालं सुरालयः। स त्वेकं च कैलासं दृष्टी
। अक्षिं नेरवंत था॥१॥ विश्वरूपं चचैतन्यं। तन्मायास्व
रूपकं॥ मायापरं भवेद्ब्रह्म। तत्परं ब्रह्म केवलं॥२॥ यो

गीदेही निर्मानोनिर्योगीकर्मणितत्परः॥ ज्ञानी मोक्षाभि
मान्येव। तत्वज्ञेया निर्मानिता॥३॥ किंकरोमि क्व गच्छा
मि किं गृह्णामि त्यजामि किं॥ आत्मना पूरितं सर्वं महाक
ल्पांबुना यथा॥४॥ केचिद्वदंति सावयव एव वस्तुज्ञा
ने मोक्षः। केचिद्वदंति निरवयवगुणातीत वस्तुज्ञानं मो
क्षः। केचिद्वदंति साकारस्य विनाशो निराकारस्य शून्य
तो नयपक्षविहीन वस्तुज्ञानं मोक्षः। केचिदेकदेशि
क सिद्धांत कपिल नक्षिविधानं मोक्षः। केचिदेकदेशि
कव्यापकस्वाचारनानाचरणविवर्जितो मोक्षः। केचि
न्मनोवाक्कविकल्पविच्छेदलक्षणो मोक्षः। केचिद्मनः
पवनध्येयध्यानधारणं मोक्षः॥ केचिद्द्रष्टादृश्यान्वय
ज्ञानाभावो मोक्षः। केचिन्महावाक्य विचारणो मोक्षः।
केचिन्मद्यमांसास्वादनुरत क्रीडा विभ्रमानंदमयो
मोक्षः। केचिदस्तिनास्तीत्युभयज्ञानविच्छेदो मोक्षः॥
केचित्सोहंभाव समरसत्वं मोक्षः। केचिदात्मानंदबोध
मयो मोक्षः। केचित्कंटस्थापनस्फोटपूलललनांगी
काराद्देव मोक्षः। केचिन्नानातीर्थयात्राजपेहवनदानव्रते
रेव मोक्षः। केचित्स्थावरजंगम जात्य हिंसाकेशीलाट
नाभ्यासादेव मोक्षः। एतेषां संकल्पविकल्पानुसार
दर्शनभेदा वदंति संति। तर्हि नन्वत्र ति मोक्षः। पदं सर्वेषा
मिति किं उच्यो वाक्य विवरणेनोक्ते समष्टिव्यष्टिरूपा
यंप्रपंच। तत्कृद सकलंबाह्यं परित्यज्य शुद्धलक्षस्ते मे
गीकृतजीवपरमेश्वरयोरैक्यं स एव मोक्षः॥ सकपंच
या महदाकाशे घटमिवोपाधि विघ्निते॥ तस्य प्रध्वंसो महदा

कारां सिद्धं तथा जीव परमेश्वरयोरैक्यं स एव मोक्ष॥
सिद्धं। तथाहि। वेदांताब्जतर्ककर्कशमतिग्रस्ताः॥
परंमायया नटाकर्म ऊलाहतधियोद्वैते ऽति। वैशेषि
काः अन्येन्द्ररता विवादकलहास्तेतत्वतो बंचिता॥
तस्मात्सिद्धमतं स्वजासकमयं धीरः परं संश्रये त्॥
॥१॥ नाना स्वीयवितंडबादपटवो मायांधकारावृत्ताः
सांख्या वैष्णवैदिका विधिपराः संन्यासिनः स्मार्त
काः। सौरा नीलपटाः प्रपंचनिरता बौद्धा जिनाः श्राव
काः। एते कष्टरताः क्रियापथगता स्तेतत्वतो बंचिता॥
॥२॥ तस्मात्सिद्धमतं स्वजासकमयं धीरं परं संश्रये
त॥ शैवाः पाशुपता महाव्रतधराः कालीमुखा जंगमा।
गाणेशाः सकलेष्टदं गणपतिं ध्यायंति चित्ते निरां शा
स्ताः कौलकुलात्मकार्चनरताः कापालिकाः सांजवा॥
एते न्यद्भवमंत्रतंत्रनिरतास्ते तत्वतो बंचिताः॥३॥ श्राव
र्यविज्ञदीक्षितादवरतान गरुतातपसा। नानातीर्थ
निषेवकाजपपरा मौनस्थिता नित्यशः। नित्यं चानश
नादिना त्मदमने दत्तावधानाः परे॥ एते वैखलु ऽरव
नारनिरतास्तेतत्वतो बंचिताः॥४॥ चार्वाकाश्च तुराः
स्वतर्कनिपुणा देहात्मवादेवताः। सर्वेषां मतिरस्ति उ
सदपराद्वैते परं संश्रिताः। कर्त्तारं प्रभजंति ये च यवनाः
पापे रता निर्दया॥ स्ते वामादिककल्पमेव विफलं नेव
क्ति मोक्षः परं॥५॥ इदानीं महावाक्योपमुख्येन बोधक
स्यते॥ यस्य नियमादि साधन संपन्नामधिकारणा म
नुग्रहाय अहिंसा सत्यमस्तेयं ब्रह्मचर्यापरिग्रहा॥ एते

पंचयमाःशौचसंतोषस्वाध्यायस्तपः॥२॥ईश्वरप्रणिधा
नानिनियमाः।तत्रमहावाक्येतत्पदंत्वंपदंचेतिपदद्वय
मस्ति।तत्पदस्यत्वंपदस्यचवाच्यमर्थंलक्ष्यमर्थंचक
थयामितत्पदस्यवाच्यार्थः।मायोपाधिःसकलजगदु
त्पत्तिस्थितिलयकारणरूपत्वात्सर्वेश्वरत्वात्सर्वशक्ति
मान्॥सर्वकामदश्चपरोक्षेण।सर्वेश्वरत्वात्सर्वशक्ति
मान्नभवति।सर्वकामप्रदोनभवति।परोक्षेणसद्वर्त्त
मानोपिनभवति॥किंतुकेवलंसत्यज्ञानानंदाद्विती
यस्वरूपंचैतन्यमितितत्पदलक्ष्यार्थः॥अथत्वंपद
स्यवाच्यार्थःकथ्यते॥श्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वाघ्राणपंच
बुद्धींद्रियसहितः।प्राणापानव्यानोदानसमाननाग
कूर्मकृकरदेवदत्तधनंजय।दशवायुसहितः॥मनोबु
द्ध्यहंकारचित्तसंज्ञांतःकरणचतुष्टयसहितः।शब्दस्प
र्शरूपरसगंधवचनादानगमनविसर्गानंदसंकल्पनि
श्चयाभिमानानुसंधानात्मकचतुर्दशविषयसहितः।
अन्नमयप्राणमयमनोमयविज्ञानमयआनंदमयाः।
एतैःपंचकोशैःसहितः।आधिभौतिकः।आधिदेवकः।
आध्यात्मादिकतापत्रसहितः।सत्वरजस्तमोगुणत्रय
सहितः।सत्वरजस्तमोगुणत्रयसहितः।पुत्रैषणादार
षणाधनैषणात्रयसहितः॥भूतभविष्यवर्त्तमानकाल
त्रयसहितः॥असनापिपासाशोकमोहजरामरणषडू
र्मिसहितः।भूतभविष्यवर्त्तमानकालत्रयसहितः।जाय
तेऽस्तिवर्द्धतेविपरिणमतेअपक्षीयते।विनश्यति।एते

षड्भावविकारैः सहितः इति त्वंपदस्य वाच्यार्थः ॥ अथ त्वं पदस्य लक्ष्यार्थः कथ्यते ॥ सर्वज्ञ एव हृदय स्थित मद्वितीयं चैतन्यं पदलक्ष्यार्थः । एतदत्यचैतन्यमेव सत्यं सत्यज्ञानानंतानंदाद्वितीयं चैतन्यं । अतः तदेवाह ॥ सत्यं ज्ञानमनंतं ब्रह्मेति श्रुतिसत्यमित्येकं ॥ ब्रह्म विज्ञानमानंदमित्येकं ब्रह्म ॥ किमेतावन्मित्येकं । ब्रह्मानंदमित्येकमत्रेति स्वप्रकाशः सद्गुरवाह ॥ ति ब्रह्मणि सत्यमेकमत्रेति स्वरूपमुच्यते । अस्त्यशब्देन विज्ञानशब्देन ज्ञानस्वरूपमुच्यते । सत्यशब्देन परिपूर्णमुच्यते ॥ आनंदशब्देनाखंडमुच्यते । ब्रह्मशब्देन परिपूर्णमुच्यते ॥ एवमेवाद्वितीयं चैतन्यं ब्रह्म तत्त्वमसि ब्रह्माहमस्मि । अहं ब्रह्मास्मि ॥ इति ज्ञात्वा प्रबुद्धः सन्नद्धतत्कृत्यो भवेत् ॥ तथैव सति ब्रह्माप्येति विमुक्तश्च विमुच्यते इत्यादि श्रुतिभिरेवं स निश्चयात्प्रबुधः सजीवन्मुक्तः । प्रारब्धकर्मजनितफलावधि लोकानामनुग्रहं कुर्वन्नेवावतिष्ठते ॥ निर्मुक्तापि त्वं च सर्पविषधाः सर्वस्वरूपवत् ॥ विध्वस्ताखिलमोहोपि मोहकात्मवित् ॥ १ ॥ ॥ इति श्रीवज्रसूच्युपनिषत्समाप्तम् ॥ ॥ श्री ॥ ॥ श्री ॥ ॥ श्रीरस्तु ॥ ॥ कल्याणमस्तु ॥

राठोडांरी वंसावलीरी विगत

1 राजाश्रीधुंधमार
2 राजाश्रीकनेजी
3 राजाहरबलिजी
4 राजाश्रीमथजजी
5 राजावछराज
6 राजासुदेव
7 राजाजैमल
8 राजामहीपाल
9 राजाविजैचंद
10 राजाजैचंद
11 राजाजमचंद
12 राजावरदपाल
13 राजाकमलपाल
14 राजासहजपाल
15 राजानीबराज
16 राजाकुलरांम
17 राजाप्रजचंद
18 रावसोमहट
19 रावहालो
20 रावबालपसी
21 रावगंजमु
22 रावचंद
23 रावखेतरांम
24 रावसीहोजी
25 रावआसथांन
26 रावधुहडीयो
27 रावराइपाल
28 रावकांन्हडे
29 रावजालणसी
30 रावछाडोजी
31 रावतीडोजी
32 रावसलखोजी
33 रावबीरमजी
34 रावचोंडोजी
35 रावरिणमल
36 रावजोधोजी
37 रावबीकोजी
38 रावलुणकरणजी
39 रावजैतसीजी
40 रावकलांणमल
41 राजा रायसिंघ
42 राजाश्रीसुरसिंघजी
43 राजाकरणसिंघजी
44 राजाश्रीअनूपसिंघजी
45 राजाश्रीसुजाणसिंघजी
46 राजाश्रीजोरावरसिंघजी

॥क।वत्त॥ जबजीवसोवे तबसमुझेसुपनसत्यजोहीऊ
र लागेजागेनींदषोयके॥ जागि कहे किइहमेरोतनइह
मेरीसौंजताकूजूरमांनतमरणपितिजोयके॥ जानेनिज
मरणमरणतबसूझेकूझूझेऔरअवतारकूफौरहोयके
उवाकूअवतारकीदशामेफिरिइहैपेचयाहीभांतिकूगे
जगदेष्योहंमटोयके॥१॥ देहिदुषपावेकिधुंइंद्रीदुषपावे
किधुंजाणदुषपावेजबलहेनअहारकों॥ मनदुषपावेकि
धुंबुद्धिदुषपावेकिधुंचितदुषपावेकिधुंदुषअहंका
रकों॥ गुणदुषपावेकिधुंसूत्रदुषपावेकेंप्रकृतिदुषपावे
किधुंपुरुषअधारकों॥ सुंदरकहतकहुजांनीनपरत
तातेकोनदुषपावेगुरुकहोयाविचारकें॥२॥ देहकोतो
दुषनांहीदेहपंचभूतनकी इंद्रीकोतोदुषनांहिदुषनांही
प्रांनकों॥ मनकोतोदुषनांहिबुद्धिकूंदुषनांहिचित
कूंदुषनांहिनांहीअभिमांनकों॥ गुणकूंदुषनांहि
सूत्रकूंप्रकृतिकूंदुषनांहिनांहीउपमांनकूं॥ सुं
दरविचारऐसेशिष्यसोंकहतगुरुदुषएकदेषियतबी
चकेअग्यानकूं॥३॥ चाकरलकरीकूंजायचेरीपीस
तेमेषायआपषायगेंकूंजोयजोउरीचबातहे॥ परकीक
बायमुतोधरीहेरगायदुकानोउगीहेजिधायकोकहि
गिहीनजातहे॥ दसन्या रिन्ताइनांहिजातिमेवडाइनां
हिकेहतमतारतायसोतोवडोहीकजातहे॥ रजबकीनी
तियामेंएककूनदेषीयतऐसीगुकरा विनांगांडपरवी

॥ ६ राव हरमंडं पोमेरी विजा

सं१०२ अजमेर दुवार अजैपाल गढ करायो

सं७१० रावल दुजो कवो

सं७८१ देरावर रै कोटरी नींव दिराई

सं७२५ भटनेर रै कोटरी नीव दिराई

सं८०२ आंणहिलवाड़ो पटण वणराज सीहे वसायो

सं८०१ रावसीहोजीकन वजमु आयाला में बरार नुमारीयाकातीउ दिर अकर पारे हिं

सं८०२ चीतोड गढ मिनरंगदे मेर करायो

सं१०३१ राजा भोजउजीणनगरी कनौजसे ... राजा भोज धवारनो बेटो वीरनारायण दुर्ग

टरो गढ करायो

सं१०१५ नागोरके पास दाइ पैकरायो

सं११११ राव नाहडमंडोवर वसाई

सं१११५ नागोर रै कोटरी नींव दिराई

सं११८१ श्री पारसनाथजीरो देहरो फलोधी करायो

सं११८८ विमल वंसी वस्तपाल तेजपाल कराई

सं१२२२ सा. वस्तपाल तेजपाल आबू देहरो कराय

सं१२२८ वस्तपाल तेजपाल आहड आबू में केतं नो कराये

सं१२१२ रावल जेसल जादी जेसलमेर वसायो

सं१२१३ जगडुशाह कतो

सं १२१२ कान्हड़दे सोनगरे जालोर गढ करायो

सं १२२१ रावबीरमदेजी महेवो बसायो

सं १२२० आमेर सहर कछवाहे बसायो

सं १४८२ देवड़े सहसमल सीरोही बसाई

सं १४११ रावल वड़े देवी श्री मावडाजी रो देहरो करायो

सं १४२६ राणापुर रे देहरे री थापना कराई

सं १५१४ राव जोधेजी जोधपुर बसायो

सं १५४५ राव बीकेजी बीकानेर बसायो बैसाख सुदि २

सनीसरवार रोहणी नक्षत्र मे [illegible]

सं १५१२ साह जगड़ मंडोवर माहे [illegible]

सं १६१६ आगरो सहर बसायो पातसाह अकबर

[illegible] किसनगढ बसायो

सं १६६२ किसन सीघउ देसी थोरा [illegible]

[illegible] गढ पाल दीयो

सं १६३४ [illegible] नवो कोट करायो

सं १६४५ श्री बीकानेर रो नवो कोट करायो

सांगानेर कछवाहे सांगे सुवे पछे सांगेरी

सं पछे सांगेर नाम बसायो

सं १७४७ सावण सुदि १२ अनोपगढ महाराजा श्री

अनोपसिंघजी करायो

॥ संवत ८०२ वैसाख सुदि ११ सुकरवार उत्तरा फालगुनी मे तुंवर अनंगपाल राज दिली मांडीयो तेरी पीढी दिली तुंवरांरी हुई तेरो विगत छे

१ रांणो राजू वरस १८ मास ६ दिन १८ राज कीयो
२ रांणो बाजू वरस २१ मास ३ दिन २८ राज कीयो
३ रांणो राजू वरस ४८ मास ३ दिन १८ राज कीयो
४ रांणो साऊ वरस २० मास ७ दिन ८ राज कीयो
५ रांणो बाल वरस ५१ मास २ दिन ८ राज कीयो
६ रांणो जीहरो वरस ३ मास ७ दिन ११ राज कीयो
७ रांणो याघु वरस २१ मास २ दिन १२ राज कीयो
८ रांणो विसघ वरस २२ मास १ दिन ८ राज कीयो
९ रांणो विहंगपाल वरस २१ मास ३ दिन १५ राज कीयो
१० रांणो तिलणपाल वरस २० मास ४ दिन १३ राज कीयो
११ रांणो गोपाल वरस १८ मास ५० दिन १५ राज कीयो
१२ रांणो सलषणपाल वरस २५ मास ४ दिन ३ राज कीयो
१३ रांणो जसपाल वरस १६ मास ३ दिन ८ राज कीयो
१४ रांणो कवरपाल वरस २९ मास २ दिन १० राज कीयो
१५ रांणो अनंगपाल वरस २८ मास ३ दिन १८ राज कीयो
१६ रांणो तेजपाल वरस १४ मास १ दिन ३ राज कीयो
१७ रांणो मदनपाल वरस १५ मास २ दिन ११ राज कीयो
१८ रांणो ऊकनपाल वरस २१ मास २ दिन १५ राज कीयो
१९ रांणो प्रथीराज वरस २२ मास २ दिन ६ राज कीयो

१२ उगणीलपीढीतुंवरांराज कीयो पछै तुंवरांसुराजपलटीयो सं १२०२ चैत सुदि २२ विवार पछै चहुंवाणां राज लीयो सु चहुंवाणांरै राजरी विगत लिषीजे छै सं १२०२ पछै

१ राजावीसलदेव वरस ७ मास १ दिन १४ राजकीयो

२ राजाअमरगंगेव वरस ५ मास २ दि १४ राजकीयो

३ राजापीथल वरस ५ मास ३ दिन ३ राजकीयो

४ राजासोमेसर वरस ६ मा ४ दिन २ राजकीयो

५ राजाबाहड वरस ४ मा ८ दिन ८ राजकीयो

६ राजानागदेव वरस २ मा १ दिन ५ राजकीयो

७ राजाप्रथीराज वरस २२ मास ३ दि ६ राजकीयो

७ पीढी चहुंवाणांरी हुई सं १२४८ नै मुदि ३ सुरताण साहबदी मुगल करवार चहुंवाणां कनै राज सुरतांण साहबदी मुगल लीयो सु मुगलांरी पीढी री विगत लिष्यते

१ सुरतांन साहबदी वरस १४ मा ५ दि ११ राजकीयो

२ सुरतांण समसदी गोरीयो वरस २ मा ३ दि ३ कीयो

३ सु. कुतबदीन वरस १२ मा ६ दिन [illegible] राजकीयो

४ सु. पीरोसाह वरस २ मा २ दिन ११ राजकीयो

५ सु. इलांमसजालन वरस १ मा १ दिन १० राजकीयो

६ सु. अलावदीन वरस ६ मा ६ दि १ राजकीयो

७ सु. नासरदीन वरस ६ मा ११ दि ५ कीयो

८ सु. ग्यासदीन वरस २१ मा ५ दि ५ राजकीयो

९ सु. समसदीन वरस २१ मा ११ दि १ राजकीयो

१॰ सु॰जलालदीनवरस३मास३दिन३की:
११ सु॰उमीरादीनवरस३मा॰०दि२राजश्रीए॰
१२ सु॰अलावदीनअलापदेगवरस१२मा१२दि॰५
श्रीदो
१३ सु॰तोगुपवरस५मास३दिन८राजश्रीयो
१४ सु॰कुतबदीनगौरीवरस२मा४दि॰१श्रीयो
१५ सु॰गयासदीनवरस४मा२दि॰०राजश्रीयो
१६ सु॰महमदसाहवरस२७मा२दि॰२राजश्रीयो
१७ सु॰पेरोसाहबगमवरस३२मास२दि॰२श्रीयो
१८ सु॰तुगलकसाहवरस८मा८दि॰२राजश्रीयो
१९ सु॰अबकसाहवरस८मा३दिन२राजश्रीयो
२० सु॰दोलतषांनवरस१मा१५दिन११श्रीयो
२१ सु॰मालषांनवरस२मा२दि२राजश्रीयो
२२ सु॰षिदरषांनवरस८मा२दि८राजश्रीयो
२३ सु॰मंमारषषांनवरस१२मा११दि१राजश्रीयो
२४ सु॰महंमदसाहवरस१२मा॰दि१राजश्रीयो
२५ सु॰अलावदीनवरस१२मा२दि२राजश्रीयो
२६ सु॰आनोअलावदीनवरस४मा१दि॰राजश्रीयो
२७ सु॰बहलोलसाहवरस२८मा२दि॰राजश्रीयो

२८ सु. सिकंदरसाहवरस० मा० दिन १४ राजकीयो

२९ सु. जांहांगीरसाहवरस १० मास दिन २७ राजकीयो

३० सु. गुलतिमरलंग चकतो वरस मा दि

३१ पातसाबाबरसाहवरस ४ मा ३ दिन २७ राजकी.

३२ पातसाहहुमांउसाहवरस मा दिन

३३ हुमांऊनां पातसाह अकबर पातसाह लडाई करलीधी सीमत १५८५ जेठसुदि २ हुमांउजी परगणपातसाहीना

१ परगणसेरसाहवरस ५ मा १ दिन ५ राजकीयो

२ परगणसलेमसाहवरस ८ मा ६ दि १ राजकीयो

३ परगणपेरोसाहवरस ० मा ४ दि १ घडी १ राजकीयो

४ परगणमहंमदसाहवरस ० मा ८ दि १ घडी रे कीयो

५ परगणमलेदीयो दिन १५ पर हौय खै पातसाह माहे

६ अवजलालदी अकबरो वडो पातसाह हुवो जु पंच वरस ५१ मा ७ दिन ११ राजकीयो

७ पातसाहजांहगीर वरस २२ मा दि कीयो

८ पातसाहसाहजांह वरस ३१ मा ४ [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]